Barcode - 4990010196798 Title - Bhakti Ganamrita Subject - THE ARTS

Author - Bahadur, Mahatab Chandra

Language - bengali

Pages - 184

Publication Year - 1880 Creator - Fast DLI Downloader

https://github.com/cancerian0684/dli-downloader

Barcode EAN.UCC-13



जिन्नी म् जा

-जार्था ९

मछ्ग निर्शंग बन्न-विषयक

সঙ্গীত-সমূহ

-

वक्षमानाधिमिक महाताकाधिताक हिक् हा इरनम्

৴ মহতাব্চনদ্ বাহাতুর

কর্ক বিরচিত

তদীয় তনয় হিজ্ হাইনেস্মহারাজাধিরাজ

শ্ৰীল শ্ৰীযুক্ত আফ্তাবচনদ্ মহতাব্

विश्वाद्यंत्र जारमणाञ्चादत

বদ্ধান

व्यवित्राज यद्य जीशूक्टयाज्यदम्य ठाउँत्राज वात्रा

মুদ্রিত ও প্রকাশিত

मन ३२४१। २१ व्यावन।

विद्धां भन।

वर्क्षमानामि महामहील छ्र्क्ल नदब्स हिक हाहेदन মহারাজাধিরাজত মহ্তাব্চনদ্ বাহাছুর ভাবকাশকালে সংখ্ যে সমুদর তান-লয়-সমন্বিত ভক্তিরস সংঘটিত বিবিধ দেব (मर्वी-विषयक " ভক্তিগান। মৃত । नामक मञ्जी छ त्र ज्ञा कर्तिया-ছিলেন, তাহা তদীয় অভ্যাক্রমে মুদ্রিত হইতে আরফা इरेशा मख्यां ज जिमेश जनस हिङ् राहेरनम् महावाजाधिवाध শ্রীলশীযুক্ত আফ্তাব্চনদ্ মহঁতাব্ বাহাত্রের আদেশানু-माद्र इंश्व मूजन कार्या मगाथ इंश्व, स्वीत महाद्राज বাহাত্র এই সমস্ত সংগীত রচনা করিয়া প্রতাহ সভাসলাগে পরিবেষ্টিত হইয়া তান লয়জ্ঞ বিজ্ঞগায়ক-ছারা গান করাই-ट्रन, क्रुड्यार **ए**रे मगूनम मर्गोड विट्नवक्टम श्रीकिड रेश यदात महिज कर्गतुः इति अदिभ कति एस, जातुक्तरः त षामुःकत्र वार्ष कतिया नयन इरेट्ड षाद्यवयन कर्त পরিশেষে ইহা অবশ্য উল্লেখ করা বিদেয় বে,বে প্রকংশং कता गाहेट डट्ड (य, महाताज वाहाञ्चत व्यक्ट स्कृति मञ्जीद इ.स শেष ना क्रिया ख्रुश्रुत्र भगन क्रियन, भिन् मकल मङ्गी उड इराटि अधिकल अकां भे 5 रहेल अधिक नालि नि ।

मन ১२৮१ वक्षाय जावन।

বর্জমান রাজবাটী মহাভারত কার্যালয়

औषधातनाथ उच्चानाव

ভক্তি গানাম্ত।

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল চৌতাল।

অসার কপেনে মন! কেন কর অমুরাগ।

সংসারের সার যিনি, তাঁহাতে কেন বিরাগ।

অসত্যেতে সত্য-ভান, সত্যে হয় মিধ্যাজ্ঞান,

সত্যের কর সন্ধান, তাজিয়া অসত্য-ভাগ।

তীর্থভ্রমণ পূজন, ব্রত হোম উপোষণ,

অনিত্য কল কারণ, অশ্বমেধ জ্বাদি যাগ।

নিত্যানন্দ নিরাকার, প্রতিমা নাহিক যার,
ভাব সেই নির্বিকার, কপেনারে করি ত্যাগ।

(১)

রাগিণী ললিত। তাল জলদ্তেতালা।
অবশ্য মরণ মন! কেন না স্মরণ কর।
বাসনাতে বন্ধ হ'মে, বিষয়ে হলে তৎপর।
স্থাসম পরিজন, জীবন ঘৌবন ধরু,
ছত্র দণ্ড সিংহাসন, ক্ষণেকে হবে অন্তর।
কোথা রাজকার্য্য তব, বিদ্যা বুদ্ধি ধন্যরব,
কোথা বা রহিবে সব, এশ্বর্য্যের আড়েইর।
অভএব বলি শুন, ভাব সভ্য পুনঃ পুনঃ,
যাবে রজন্তমোগুণ, পাবে নিত্য পরাৎপর।

(5)

রাগিনী কেদারা। তাল বিশাতেতালা।
অহংজ্ঞানে মন্ত হ'লে, কেন কর অভিমান্ত।
জান না কি এ জীবন, জীবনবিশ্ব-সমান ॥
ক্ষণিক তব বিভব, যে দেহে কর গৌরব,
অবশ্য সে হবে শব, কোথা রবে ধন মান।
যড় ঋতু আদি সবে, বার বার হবে ভবে,
তারা শলী ভাত্র রবে, রবে না এ দেহ প্রাণ ॥
শুন তত্ত্ব উপদেশ, তাজ হিংসা রাগ দেয়;
ভজ নিত্য নির্বিশেষ, কর চিত্ত সমাধান ॥

निर्विष्णिय, क्रज हिन्छ मगाधान॥ (৩) ब्राणिनी खग्नखग्रही। जान होजान।

আত্ম-উপাসনা বিনা, কেমনে হবে নিন্তার।
তত্ত্রব কর মন! ভজন সাধন তার॥
জীবের যেই জীবন, যে হয় মনের মন,
বিশ্বকর্ত্তা নিরপ্তন, ভাব সেই সুলাধার।
কর মায়াদর্প চুর্ণ, ভাব চিদানন্দ পূর্ণ,
তানায়াদে হবে ভূর্ণ, সংসার-সাগর পার॥
হও ব্রহ্মে অনুরাগী, কণ্পনা সাধনা-তাাগী,
সংসারে হয়ে বিরাগী, সদা ভাব সারাৎসার॥

(8)

রাগিণী মূলতানী। তাল জলদ্তেতালা।
এক ভাবে সদা রবে, এই কি ভেবেছ মন!।
অক্ষয় কি হবে সব, তব উপার্জিত-ধন॥
বিষয় হবে কিন্তপে, মান্য হুবে ধনীরপে,
এই আশা-অন্তর্পে, হয়েছে তব পতন।
লিখেছ নানা উপায়, যাজে ধন নাহি যায়,
ক্ত যত্নে রাখ তায়, ভুলো ধন চিরন্তন॥

किस देश बास्टिंड, इंड हिंड ममाहिंड, कत् शतकार्थ-हिन्ह, मनाधन छिशास्त्रन । (१)

वाशिशी भवस्त्रमा। जान को ना

कि मकाजि कि विकाजि, खाम्मामा अकाकाता। काि उटिए दर्ग दर्ग एका दम अधिकां त्र ॥ नानावर्ग नानाकाय, यक काकि (एथा याय, আছে এক আত্মা তায়, নিত্য শুদ্ধ নিবিকার। कार्जियाटज रूटन याना, लरेटन जानि धार्याना, অন্যে ভাবি সামানা, করে মহা অহঙ্গার[®]॥ किस विश्व यात रुषि, जाटह यात मम मृषि, उँ। त क्रा-य्याइछि, ममजाभ मवाकात। (सम्बद्धार दी जिट्छम, পরিক্ছम-পরিচ্ছেम, কত শাস্ত্র কত বেদ, সংখ্যা করে সাধ্য কার ॥ हत्ला छवान-চट्नामस, हस जीव (ज्याजियास, তথনি বিলয় হয়, ভেদ-বুদ্ধি-অন্ধকার ।

(&)

রাগিণী মূলতানী। তাল চৌতাল। ना जानिया (वमाखार्थ, পরমার্থ বিনাশিলে। ভাবিয়া (सर्थ ना जीव, क् जूमि काथा जामित्न । खुदन नाना भाख-मर्ग, नाना कल नाना धर्म, नाना खंड नाना कर्या, नाना (पर डेशामिटल। ८कटन भाज नानामड, नामा मुनि नानामड, र्'रम नानाभर्थ त्रंड, नाना मंड क्षकाभिर्ण । বেদান্তার্থ ব্রহ্মতন্ত্র, কর সদা তার তন্ত্র, एक रूटव वृक्षि मख, कामानि-त्रिश्र मानिटन ॥ (५) युष्टिना थाजूमार्कामियुर्वारीयत्र्वाः।

क्रिमाछि जनमा मुहार निर्मित भाष्टि न माछि छ।

जन्म (मरा मसुमानीश निर्मित प्रमा मनी मिनाश्ला
काष्ठेत्सार प्रमाणीश पुरुमा। स्मित प्रमण।

वाशिनी क्रमाझ। जाम कल्यामि।

নিরঞ্জন নিরাধার, নিখিল-কারণ।
নির্বিকার নিরাধার, পতিত পাবন॥
বিরহিত পাপপুণা, অতীত বাকা-নৈপুণা,
উপাধি-কণ্পনা-খূনা, বিব্যক্তিত বিশেষণ।
ব্রহ্মা বিষ্ণু মহেশ্বর, প্রভৃতির অধীশ্বর,
বিশ্বপাতা বিশ্বেশ্বর, গুণাতীত সনাতন।
একমাত্র যিনি সার, সকলের মূলাধার,
প্রবণ মনন তাঁর, কর নিয়ত ধারণ॥

वाशिनी वादश्यी। जाम कम्द्रजामा।

(b)

(%)

নিরপ্তন নিরাময়ে, নিয়ত কর স্মরণ।

যে করে করণ-বিনা, স্ফি স্থিতি সংহরণ॥

সর্বাধার নিরাধার, সর্বাকার নিরাকার,

সবিকার নির্বিকার, অমনা করে মনন।

অকর করে গ্রহণ, সর্বাগত অচরণ,

অকর্ণ করে প্রবণ, অনেত্র করে দর্শন।

কি বিচিত্র শক্তি ভারু, কেবা জানে সাধা কার,

যে সকল গুণাধার, গুণহীন সনাতন॥

श्राणिक सम्बद्धी। जान क्रिका

বিশ্বকর্তা পরমাত্মা, কেন ভারে ভোলো মন!। অনুভ ঘার রচনা, সাক্ষ্য দেয় প্রতিক্ষণ। সম্ভত ভাবিয়ে যারে, যাব ভব-বিস্কু-পারে, (क्ष्मत्म जूनित्स करित्र, क्रज जना-जिलामन।

(य निर्श्चल निर्दाकांत्र, जाकात-कण्णना जात्र,

करता ना करता ना जात्र, श्रकण्णिक नामार्थन।

जञ्ज-जिलाम छन, ह रत्र ममाधि निश्चल,

ভাব মন! পুনঃ পুনঃ, নির্বিকার নির্ব্জন॥ (১০)

রাগিণী সরকরদা। তাল জলদ্তেতালা।
বিশ্বত হ'য়ো না মন! সেই বিশ্বেশ্বরে।
বিশ্বজন-সহ তব, পালন যে কুরে।
বিশ্ববাপ্তি বিশ্বাধার, বিশ্বাতীত বিশ্বাকার,
সহিয়ে বিশ্বের ভার, বিশ্বের যে ক্লেশ হরে॥ (১১)
রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল চৌতাল।

ভজ সেই বিশ্বেশরে, তাজ অনিত্য বাসনা।
অন্য কে উপাস্য আছে, কর কার উপাসনা।
যে হয় জগদাধার, অপার মহিমা যার,
মহিমার সীমা তার, করো না জ্রমে ভাবনা।
যাহার রচনা-কার্যা, মনেতে না হয় ধার্যা,
তার শক্তি অনিবার্যা, মনে কে করে ধারণা।
হজন পালন লয়, যার ইচ্ছামাত্রে হয়,
ভাবিলে সে জ্যোতির্ময়, রবে না ভব-ষাতনা। (১২)

রাগিণী ভূপালী। তাল জলদ্তেতালা।
মন! ভূলো না তারে।
সকল স্থ-সম্পদ, যে, দিল তোমারে।
অথও ব্রহ্মাওময়, জড় জীবসমুদয়,
হয় রয় পায় লয়, অবলয় করি যারে।

নাগিনী লয়নান্তী। ভাল চোঁভাল।
সভা ভাজিয়ে কেন, অনতোতে মক মন।।
সভা অমুরক্ত জন, হয় বিমুক্ত-বন্ধন।
সভা নিতা অবিনাশ, নিরস্তর অপ্রকাশ,
কর সভাপুরে বাস, অসমতোর বিসক্তান।
বেদা বিষ্ণু মহেশার, দেহীমাত্র বিনশ্বর,
অনশ্বর পরাৎপর, কর তার আরাধন।
বিষ্ণু মহেশানি দেবুভা ভুতজাভয়ঃ।
সর্বেনাশং প্রাসান্তি ভন্মাৎ সভাং সমাশ্রায়েৎ।

রাগিণী বাণেশ্রী। তাল জলদ্তেতালা।
নিরঞ্জন নিরাময়, সতত কর স্মরণ।
হাটি হিতি হর্তা কর্তা, বিশ্ব ধারণ কারণ॥
সর্বাধার নিরাধার, সর্বাকার নিরাকার,
নিজর কর নিকর, অনয়নে সনমন।
সর্বাত ভূমি ভ্রমণ, খাঁর ব্যতীত চরণ,
মন নাহি আছে মন, কাম জোধ মোহ হীন॥
বর্তমান সর্বান্তণ, অথচ নির্তাণ জন,
এই মতে চন্দ্রের মন, করিবে ভাবন॥
(১৫)
রাগিণী মুলতানী। তাল ঐ।

অবশ্য মরণ মনে, কেন না স্মরণ কর।
চিরজীবী হ'য়ে রুঝি, রবে যুগ যুগান্তর।
অবিরত হত হয়, দেখ মনে নাহি রয়,
না মরিব এ আশয়, মন্ত আছ নিরন্তর।
সর্বাধ্যণে গুণাকর, ধন আছে বছতর,
গল বাজি মনোহর, হারে অতি শোভাকর।

यपार्शियात्वात्वात्रात्र, त्कर्मा मनी त्वायात्र, जाजिएज स्टा मरमात्र, म्या जन शत्रारशता ()७)

वाभिनी मूनजानी। जान जनम्दज्जाना। धक क्ष जमा त्रव, धर् कि विठात मदन। প্রতিদিন প্রতি ৰূপ, আয়ুগত প্রতিক্ষণে॥ विषय हत्व किमाड, मना मदनार्याभी छाटछ, এই বিষয় রজ্জুতে, পড়েছ মন বন্ধানে। य गढि ना याग्र थन, विद्याय छिलाग्न जान, कुष्ठ् धन लाए काष्ट्र, जुटन हित्रखन धरन॥ অতএব বলি শুন, রুথা বিত্ত উপার্জন, ध्वित्रिय यदव भगेन, त्रदव कि धन निधदन॥

(99)

वाशिनी (वदाश। जान थे।

পরমাত্মা পরব্রহ্ম, কেন তারে ভুল মনে। षायुक याँ त त त ता, माका (मस कद । कद । ॥ ক্ষণমাত্র চিন্তা কর, সৎস্থৰূপ নিরাকার, জগৎ ব্যাপ্ত সার্গেজার, কে আছে আর সেই বিনে। স্বকরে নির্মাও যায়, পরে দেও প্রাণ তায়, किकाश अक्रिकि काञ्च, यथार्थ (क काटन ॥ ध कि (पथि णविष्ठात्र, त्रुर्डि जिन्न जिन्नाकात्र, नामार्थन कत कात, अकल्भिक कारिमारम। व्यनिजा (एथ मश्मात्र, निजा क्रव्य नित्राकात्र, निर्विकात विश्वायात्र, निर्निश जिश्राण ॥ ज्ञाज्य विन खन, जाब जादा चुनः चुनः मर्नन ति वामर्गन, एक मञ्जिति ।

त्राणिनी जुणानी। कान सन्तर्देशाना।

प्रमा क्राणानी क्रियां क्राणानी।

प्रमा क्राणान क्राणानी क्राणानी।

प्रमाणान क्राणानी क्राणानी।

प्रमाणान क्राणानी क्राणानी।

प्रमाणान क्राणानी क्राणानी।

(\$\$)

রাগিণী কেদারা। তাল ধিমাতেতালা।

শহং জ্ঞানে মন্ত এত একি বিবেচনা।

অবশ্য হইবে ধংস, মন্ কি বুঝ না।
সলিল বিশ্ব সমান, ক্ষণমাত্র দেহ প্রাণ,
তথাচ এ অভিমান, পরিবর্ত্ত হইল না।

যড় ঋতু দিবা নিশি, দিবাকর তারা শশি,
রহিবে সবে প্রকাশি, ভুমিমাত্র রহিবে না।
শুন তত্ত্ব উপদেশ, তাজ হিংসা রাগ দেব,
ভক্ত সত্য নির্বিশেষ, পুন না পাবে যাতনা।

(२०)

রাগিণী খাষাজ। তাল ঐ।
ভুল না মন বিশ্বময়, সেই বিশ্বেশ্বরে।
বিশ্ব জন সহ তব, পালন ঘে করে॥
বিশ্ব ব্যাপ্ত বিশ্বাধার, যেই বিশ্বে দেয় আহার,
না কর সন্ধান তাঁর, আছ মত্ত অহকারে।

(<>)

রাগিণী আলাইয়া। তাল জলদ্তেতালা।
কি প্রজাতি কি বিজাতি, সকলি সমান মানা।
বর্ণভেদ জাতিভেদ, সে কেবল বাহা ভিন্ন॥
নানা জন্ত নানা কপ, কিন্তু ছন্ধ একই কপ,
ভদ্রেপ নর-স্বৰূপ, এক কপে কর গণা।
ব্রাহ্মণ খ্রন জেছ, পরুম্পরে করে ভুছ,

কিন্ত এক আত্মা শ্বন্ধ, অভিনানে মান্যামান্য।
দেশ দেশ ভেদাভেদ, আহার ব্যবহার ভেদ,
কিন্তু আত্মা নাহি ভেদ, কেবা মান্য কে অখন্য।
ব্রহ্মাণ্ড ইহার স্থাটি, সর্বব্রে সমান দৃষ্টি,
সকলে সমান ভূষ্টি, একমাত্র ভিনি ধন্য।
জন্ম মৃত্যু দিবা নিশি, রবি বায়ু ভারা শশী,
অথিলে সম প্রকাশী, স্বপ্রকাশে সেই পুণ্য। (২ই)

वाशिनी वादशक्ती। जाम कमम्द्रकामा।

নিরঞ্জন নিরাকার, কর না স্বরণ।
নির্বিকার বিশ্বাধার, সকল কারণ।
উপাধি কণ্পনা পুনা, বেদান্ত বেদের মানা,
না কর সামানা গণা, অভীত নয়ন মন।
কমলজ হরি হয়, যাঁহাতে প্রকাশ পর,
সকলের অগোচর, তাঁরে কর ধ্যান।
ভিতীর নাহিক আর, অথও মণ্ডলাকার,
চন্দ্র কহে দেই সার, ভাব সর্বাক্ষণ।

(२७)

वागिगी मूनजानी। जान थे।

জগতের ভাব দেখে, ভাবিতে হ'ল আমারে।
একে নাহি থাকে মন, সদা সংশন্ত সঞ্চারে।
হইরে থাকে একের, কভু না দেখি একের,
নিরক্ষিয়ে অনেকের, আছি চিত্ত চমৎকারে।
একে কভ স্থা মনে, না জানে মানবগ্নণে,
কিবা বাবহার মনে, ভাব কে বুক্তিতে পারে।
চন্দ্রে এই মানস, এক স্থানে থাকে বশ,
পেরে অন্তিনিয় রস, বিরস হয় সংসারে।

(38)

রাণিনী বাংগগরী। ভাল অবন্তভালা।

অচিন্তিত চিন্ধার্থনি, কেলনে চিন্তিবে নরে।

অথও সফিরানন্দ, ব্যাপ্ত আছে চরাচরে।

তুমি জান সর্বলোহক, কেহ না জানে ভোমাকে,

মহিমা সীমা জানে কে, বিধি বিশ্ব জেগোচরে।
লীলা ভোমার বুঝা ভার, সকলের নহ কার,

দিরাকার কি সাকার, বাক্য সন প্রথাপরে।

নিরঞ্জন সর্বাধার, মকলেরি চিন্তাকর,

চল্রে কেন ঘ্যা কর, চিন্তিনা বলে ভোমারে। (২৫)

রাগিণী গোর সাবজ। তাল ধিমাতেতালা।
আতি দীন হীন, আমি অভাজন।
ধনমত সর্বক্ষণ, না করি হে অরণ॥
দিবা বাস্ত উপার্জনে, নাছি মন তব ভশনে,
ধনেরি কারণ।
প্রমদা প্রমোদে বশ, ক্ষণদা করিয়ে শেষ,
তব ধ্যানে নাছি মন॥
চিন্তামণি নাম ধর, চক্র দোৰ ক্ষমা কর,
এই নিবেদন॥

(२७)

রাধিণী সবকরদা। তাল জলদ্তেতালা।
পাপ করি পুণা করি, য়থায় তথায় থাকি।
তোমার নিরোগে করি, না করি একাফী ॥
যে দিকে লওয়াও মন, সে দিকে মন গমন,
তুমি সকল কারণ, বিশদে তোমাকে ডাকি।
তুমি যত্রী সবে মন্ত্র, জুমি মন্ত্রী সবে মন্ত্র,
কুমি বেদ পুরাণ ভক্ত, কা মা তুমি ভাই কাকি।

यथा यारे मध्य जूमि, जूभि यस याण व्यामि, जूमि जिसा मसंबाभी, हरश्र स्था शिष्ट याथि। (२१)

जानिन पारमधी । जाम थे।

কিবা কাষ্ নিংহাসনে, রাজকার্যা তার তার।
হততাগা সেই জন, ত্রজা কব্লি নাহি যার।
খনে যদি সহাধনী, মানে হয় মহামানী,
তথাপি জবনা জানি, ধর্মে যার জনাচার।
যদি হয় বিদ্যাবাদ্ সর্বাপ্তবে শুণবাল,
বিনা পরমার্থ জান, কিছুতে নাহি নিস্তার।
পুজায় যাহার জাতা, বৈদিক কর্মে জনাহা,
সতাধর্মে তুরবন্থা, চক্র ক্রে তার ছুস্তার।

(24)

রাগিণী লুম থাষাজ। তাল বং।
ক্রফ যদি হন জাতা, অথবা ক্রফ বিধাতা,
হইবে সব সমতা, তব ক্রপা থাকিলে।
ক্রফ যদি হয় প্রজা, কিয়া ক্রফ হন রাজা,
তথাপিও জয়বজা, তোমার নাম জাশিলে।
সবে যদি শত্রু হয়, ভাহাভেই কিবা ভয়,
তব দৃষ্টি যদি রয়, কিবা করিবে সকলে।
ভোমা প্রতি যার ভাজা, দক্র বিশ্বে ভার সুজি,
অনুত ভোমার শক্তি, চক্র নির্ভির জলে স্থলে।

রাণিণী মলার। তাল কওয়ালির ঠেকা।
ভগতে বিভীয় নাই, একমাত্র সর্বাভার।
এক মন এক প্রাণ, একমাত্র ব্রহ্ম কর।
এক গতি এক জ্যোভি, এক মতি এক পতি,
এক সতী এক রভি, শেষ্ণা এক ভাজার।

এক লাত এক মৃত্ত, আক্তাৰ একাক্ত,
এক পহা সমানৃত, এক সভা বেদে কয়।
এক লক্ষণাতা পিতা, এক গর্জধারিণী সাতা,
এক ইক্স এক ধাতা, এক চক্ত হুর্ঘোদয়।
এক বিফু এক রাম, এক শিব এক ভাম,
এক বন্ধা এক কাম, এক হয় কিভিতনয়।
একেতেই এ সংসার, একেতে সবে নিস্তার,
চক্ত এক বো্বে য়ার, যদি এক একা হয়।
(৩০)

মানব পশু পকী কীট, পতঙ্গ জীব জগণনা।
চেত্তন এক জালা, কহে দেহ ভিন্নে নানা।
কীব মধ্যে বর্তুন, পাষাণ বিটপিগণ,
নিজ্জীব মূর্ত্তি জীবন; তন্তিন্নে প্রতীয়মানা।
জনল তথা তপন, ডেজংপুঞ্জ নিজ্জীবন,
চন্দ্র ভারকাগণ, শীভল মধ্যে গণনা।
সৌদামিনী বজ্ঞ জাদি, শক্তি মধ্যে সর্ব্বাদী,
এতন্তিন্ন নির্ব্বাদী, বেদান্তমতে ধারণা।
এসব নিরন্ধা যেই, ভক্তি রাখ ভাহাতেই,
চজ্রের বাসনা এই, এক ব্রক্ষ উপাসনা।

नामिनी थे। जान कम्द्रज्ञामा।

(42)

व्यक्षित मकन रम्बि, श्वाधीन श्रद्धां । रमायी क व्यवस्था मद्द्र निर्देशको क मेथन । मश्माद्र मद्द व्यवस्था, क्षेत्र क्ष्यम मास्त, मक्टनरे रम्ब खांख, व्यक्षां श्रद्धांच्या । भक्षांत्र व्यक्षित स्वयं व्यक्ष्य व्यक्ष्य व्यक्ष्य । मकरमत चार्छ क्रिनाम, जिनिमाळ चिनाम, मकरमत चार्छ दिनाम, जिनिमाळ चिनाम, मकरमत मरम चाम, चामा-होन मरहचत। পদার্থ দর-সগুণ, আলা ক্ষেত্র । চন্দ্র নহত নিপুণ, সম্পূর্ণ জানা ত্র্মর ।

मन्पूर्व कामा क्रुक्त । (३२)

व्यानिनी हेमनकमानि। जाम थे। ज प्रिट्य कान मश्क्रात्र, मन जामात्र। পाक्षरजोजिक (मरु, भक्षजा देश होत शांत । प्तिट् श्रमाञ्च व्यः म, किन्छ व्याचात् नाहि धःम, यमविधि थाटक इश्म, ভाৰত প্রাণ-मঞ্চার। यथन जरु इरेटव, शद्ध शक्ष मिनारेटव, षाञ्चाय याञ्चा मिनिद्य, दम्दर दक षाद्ध दिश्यात ॥ कात कर्या क्वा करता, कानना जाहा जलदत्र, পড়েছ মোহ जाधादा, ना कानिएस उत्नात । कित्रिया नाना यजन, क्त धन छेशार्कन, रहेटल ८५र পতन, এ धन रहेटव कात्र॥ दिन दिन यन जमान्त, धन-शर्विक निकान्त, व्याना-शूर्विज এकाख, ছाড़ ना कुमश्काता। थन छे शार्कात्न मन, मक्षात्र क्ष वर्जन, (म्राथ ना र्य (हजन, जरमात्र जन जनात्र ॥ देवत्राभा जाजाम कत्र, जाणा जांक जन्नकत्र, ठक्त निर्माल जाखन, उद्ध विभाग निर्दात ॥

(99)

वाभिनी थे। जान क्रीनामा। नगरस मिलानम्, नगरस भूतमानम्, नगरस सभानम्, नगरस ५१ निवस्ता। নমতে বিশ্বন্ধ, নমতে আদি শ্বন্ধ,
নমতে সং চিচ্চেপ, নমতে সর্ব কারণ।
নমতে বিশ্ব, আধার, নমতে দৈবা সাধন।
নমতে দর্বা বিভার, নমতে দর্বা সাধন।
নমতে ভূবি-ধারক, নমতে জার জীবন।
নমতে দর্বা কারক, নমতে আত্ম জীবন।
নমতে বিশ্বন্ধপার, নমতে বিশ্বাধারায়,
নমতে পর ভভুার, নমতে বিশ্ব-ভারণ।
নমতে চিদানন্দার, নমতে বা অচ্যুভার,
নমতে সর্বা-শান্তার, নমতে সর্বা চেতন।
নমতে আদিমাক্ষর, নমতে জগদীশ্বর,
নমতে পরাৎপর, নমতে তং পুরাতন।
নমতে সর্বা-সাক্ষিণে, নমতে বিশ্ব কারিণে,
নমতে গ্রাভ্বন, নমতে চক্তা রক্ষণ।
(৩৪)

রাগিণী গারা-তৈরবী। তাল ধিমাতেতালা।
নিরাকার নির্কাকার, সংসারেতে কে কে হয়।
সর্বাত্র হিত অমৃত, যাহার নাহিক লয়।
সর্বাত্র আছে গমন, অথচ নাহি চরণ,
এমন বা কয়জন, কেমনে হবে নির্ণায়।
কজন তাহে সপ্তণ, তার মধ্যে কে নির্ভাণ,
বিশেষ কেবা নিপুণ, বচরাচরেতে কয়।
কার মধ্যে আকাশ, ভেদক্রপ বাজাস,
অন্তর্বাহে নিবাস, গুণ অবলমে রয়।
স্বাত্র আকার হীন, বস্তুসাত্র মধ্যীন,
অবংগ সর্বা স্থাধীন, মদশুণে স্থিতি লয়।

जित्र जारिए विकास, जिनियां निर्मिकांत, जैटिन जानिएस जारांत्र, ठल जार उक्तमस्

রাগিণী কানেজনে তাল কওরালির ঠেকা।
মনোমধ্যে বেই করে বাস, তাঁরে নাহি কর আস।
তাঁর সঙ্গী হয়ে কেন, কুসজেতে অভিলাষ।
আত্মা যেই জীবে আছে, কি লুকাবে তাঁর কাছে,
সকল সে দেখিতেছে, জানিতেছে মনো আল।
যথা তব মতি হয়, তাঁর অগোচর নয়,
মন তাঁহার আলয়, আত্মারূপে তাঁর বাস।
তিনিই মনের মন, জীবের হন জীবন,
পাপ পুণ্য দরশন, করি করেন প্রকাশ।

রাগিণী হাথির। তাল জলদ্তেতালা।
অধনে করণা কর, প্রাভু করণানিধান।
কাতরে ডাকি তোমার, ছু:খ কর সমাধান।
বোধ করি মহাপাপী, অসুভাপে অনুভাপী,
প্রভু তব নাম জপি, ভরদা হয় কলাগে।
তব পদে অপরাধী, ভাবি ভাই নিরবধি,
ভুমি রূপাজলনিধি, ভক্তে কর পরিত্রাণ॥
স্থাক্রিয়া হলো বিরল, ছুজুয়া দেখি সকল,
কেবল ভক্তি সয়ল, ক্রিয়া-মধ্যে বলবান।
অপরাধী যদি হই, মহাদোহে ছুবা নই,
তথাচ তোমারি হই, করি তব গুণ গান॥
বেই দিকে মনগামী, ভাহা প্রভু জান ভূমি,
হে নাথ। অন্তর্মধামী, রাখ চক্তা ধন মান॥

(99)

वाभिनी महादि। जान कडवानि। चाट्य निकाम एक कत्र, निक मन एत्र त्रिशू कत्र प्रमन। वृक्षियात्रि कित्रि (महन, (धोक क्त्र छूनज़न । পরে লহ कानाक्षन, তবে পাবে দর্শন। भार जाकि रूख यमि मटाजन, जटन रहेटन मिलन ॥ (मर्रे निष्ठा निर्देशन, क्य प्राणा विमर्कन, र्द ज्खिजाजन, পूळा পরিবারগণ কেহ ত নহে আপন। मञ्ज जावर कन, याकर प्राट् कीवन ॥ यथन कतिरव धान, छुत्रख काल नमन। काथा त्रदव वक्करान, काथा त्रदव धन कन । व्या काल र्वा, मावधान रूख ध्यन। काथा ছिटल काथा यादन, कि छामान मनी हदन, धन लागि (कन कत्र, ममा भन्न भी फ़न। वाना लाख वाकिथन, अ एक् कदत्र मार्न ॥ देवताभा अयद्य द्वाभ, कत जूमि निवात्। গৃহ্বাস তাজ মন, আর তাজ ধনজন, निভূতে বসিয়ে চক্র, কর তাঁর ভজন। (생)

নাগণী হামির। তাল জলদ্ তেতালা।
নিত্য নিরপ্তন জনাদি, সর্বস্থলাধার।
শক্তি স্বভাব ৰূপে, সদা জগতে বিহার।
মহেশ পরম যোগী, শ্রীকৃষ্ণ বিহার ভোগী,
ব্রহ্মা জগত নিয়োগী, রাম রাজ্য স্থবিস্তার।
বিষ্ণু বৈকুঠবাসী, স্বয়ং সূল জবিনাশী,
চন্দ্র ভঙ্গহ সন্তোমী, মহিমা যাঁর জ্পার।

जानिनी स्वीत । जान कनम्दक्कांना।। वागात कि मापा क्षाव, कतिएक क्षामात खिन। काशर वार्गिक कृत्रि, स्काषा कवित धार्गिक ॥ शृश्याखरत्र वास्टित, नित्रीदत्र जात जायदत्र, डीं त मटक कि धाकारत, कतिव डाँश्रात निड। वादकात जाजीज बिनि, मदनत जाजीज जिनि, অচিন্তা তাঁহাকে জানি, চিন্তা করি কি আরুতি॥ जुमि नर जेकनी है, बार्था करा जबमी है, कि माधा প্রভু মদীয়, অসাধো লওয়াই মতি। वाकात विभिन्ने इटल, शृक्षिकाम कुल कटल, তুমি প্ৰভু জলে হলে, কোথা তব অবহিতি॥ मरहजन जीव यज, घरहजन जीव कछ, বস্তুমাত্রেতে নিয়ত, জগতে কর বস্তি। ভুমি কৰ্ত্তা ভুমি কীৰ্ভি, ভোমা বিনা কোথা স্ফুৰ্ভি, তোমার সকল মুর্ভি, শিব বিষ্ণু প্রজাপতি॥ অथिन बका ७ म स स्व स्व स्व स्व श्वार तम शुका कि शुका नश्न, ट्यामात्र किटम विविधि। ভুমি বল বলি আমি, কিন্তু ভাহা কর ভুমি, তোমার নিদেশ গামী, সেই দিকে করি গভি ॥ षामान्न कि षाट्ह माधा, ट्यामान निवदम वाधा, তুমি জগত আরাধ্য, তুমি হৃত তুমি হৃতী। षाणा कार्य खब वाम, याश कित्र षां ज्ञाना म, नकटन তব প্রকাশ, সুমতি কিয়া দুর্মতি॥ ज्य कार्य युक्तिया, चाट्ट (पवका निर्माय, जूमि त्मरे ममूनस, ভाराटिख खव ভाडि।

নির্দিট স্থানে পুলিত, ঈশপক্ষে অসুটিত,
ব্যাপিত হয় খণ্ডিত, কিনো নাই তব জ্যোতিঃ ।
তোমার হৃদয়েখনী, প্রতিমা প্রণাম করি,
তুমি দর্বা অধিকারী, মটে মটে তব ছিতি।
বস্তুর বাহু অন্তরে, যে প্রস্তু বসতি করে,
সে প্রণাম অর্মে তারে, তুমি ছাড়া কি আকৃতি।
বস্ত্রাণ্ড বাঁহার স্থান, সর্বাভূতে বিদামান,
চন্দ্র সম ভাব জ্ঞান, আকার তাঁর জগতী।
(80)

রাগিণী দেশমলার। তাল কওয়ালির ঠেকা।
বিবয়ে আশের মনঃ লুক হয়ে কেল রও,
সঞ্চয় করিয়ে ফল, কিবা হবে তাহা কও।
ধন উপার্চ্জ নে দেখি. সদা বাস্ত কিন্তু সূধি,
অপরে করিয়ে তুংখি. ছলে বলে ধন লঙা।
উপার্চ্জন চমৎকার, কত করি কদাচার,
নাহি দেখি পরিহার এত কেন লোভী হও।
আশা বলবতী মন, নাহি হয় নিবারণ,
বৈরাগা করি সাধন, চক্র ধন তাগে সঙঃ

রাগণী বাহার আড়ানা। তাল জলদ্ভেডালা।
রক্ষ মান পরাৎপর, কুরু হৃদের আনন্দ,
কালগতি দহামান, খণ্ড নাথ নিরানন্দ।
মানস মহাছুর্রীত, প্রয়ান পাপপূর্ণিত,
লোভে বিষয়ে ফুর্ণিত, দেহি চল্লে সদানন্দ। (৪২)

या कार्क तम क्षाप्ताम, कार्कतम मणा कार्यम, कामाथा श्राप्तवर्जीम, यहक वृक्ति मानम। বাসনা মহাছুর্জন্তর, দাবনা মন বর্জন্তর,
প্রভারণা পাপাশর, আশরে লুক মানদ।
বনে সদা লিপ্ত মন, ভূপ্ত থাকি প্রাপ্তে ধন,
ক্রিপ্তে করে আকিঞ্চন, স্থপ্তের আশার বশ।
লোভের মহা আশর, জপ তপ করে ক্ষর,
ভক্তি মুক্তি নাহি রয়, লোভিতে তাজিত যশ।
বাগবজ্ঞ কিয়া ধানি, আশার থর্বিত জ্ঞান,
ধনলোভে অভিমান, ছুর্তি সদা মানদ।
ধর্মকর্মে শিখিলতা, বৈদিক কার্যো থর্বতা,
আর্থপিন্থার মূঢ়তা, ধনা মনের সাহন।
দনাতন ধর্মচ্ছেদ, শ্বি বচন উচ্ছেদ,
গারেত্রী করে বিচ্ছেদ, চন্দ্র হইল বিরস।
(৪৩)

শ্বেণিনী লুন্-খাষাজ। তাল যং।

যে দিকে তাঁথি কৈরাই, সে দিকে দেখিতে পাই,
সেই স্থানে আছেন তিনি, যেখানে সেখানে যাই।
আলোতে কি অক্ষকারে, স্থলৈতে কিয়া সাগরে,
হরে অথবা বাহিরে, সমভাবেতে সদাই।
শরীরে কিয়া অন্তরে, নগরে কি ত্রপান্তরে,
প্রতিমায় স্থিতি করে, তুমি ছাড়া কিছু নাই।
বাহা দেখি তুমি তাহা, যাহা কহি তুমি কহা,
তুমি ছাড়া বস্তরহা, সেকথা রখা বলাই।
মঙ্গা পূজা গঙ্গা জলো, তদ্ধেপ ঈশ্বরহ্তে,
তিনি বলেন যে যা বলে, এন্সমে ভ্রমে স্বাই।
নর্মভূতে বিরাজ্যান, ক্রিবে তাহা স্থাই॥ (৪৪)

মতাজানানন্ত ব্ৰহ্ম, আনন্দৰপং বিভাতি।
শান্তং শিবমধৈতং, গুণাতীতং মহাত্যুতি।
আচিন্ত্যাবাক্তৰপায়, গুণাত্মনে নিগুণায়,
সৰ্বন্ধভাষারায়, মূর্ভরে ব্রহ্মণে নতি।
পরমজরমমরং, প্রণ্য-স্কলেবরং,
চন্দ্রশীতলকরং, স্বয়স্থ জ্যোতিরাক্তি।
(৪৫)

वाशिशी हेमभ्। जाल क उग्रालि धिमा।

মন সত্য বচন কর সার,
ত্রী পুত্র পরিবার সকলি অসার।
এক ব্রন্ধমাত্র অন্তি, দিতীয় কুত্রাপি নান্তি,
ভজনায় প্রাপ্ত স্থান্তি, বীজনপে মূলাধার।
ভুবন ব্যাপিত জ্ঞান, যে হয় প্রাণের প্রাণ্ড,
বস্তুমাত্রে অধিষ্ঠান, স্থমহান একাকার
ত্বং হি জগৎ আবরণ, ত্বং হি জ্যোতি চিক্নণ,
ত্বং হি সর্ব্ব কারণ, তব মহিমা অপার।
নমঃ প্রণব বাচ্যায়, শাশ্বতায় নিপ্তাায়,
চল্রের এ ভব দার, ক্রপয়া কুরু উদ্ধার।

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদতেতালা।
সাকার কি নিরাকার, ভাহার কে জানে সার।
সকলেই আছ ভূমি, কার্যা হেডু নানাকার।
সর্বভূতে তব স্থিতি, আকারে তব বসতি,
বস্তু মাত্রে তব জ্যোতি, নিগৃঢ় ভাবে প্রচার।
সচেতন জীব যত, অচতন আছে তত,
জড় বস্তু আছে কড, সকলি স্থি ভোমার।

(34)

থেকে অন্তি একে নান্তি, এ কথার নাহি স্বন্তি,
কেহ বলে কুল অন্তি, লান্তির বশে বিকার।
জীব আত্মা ৰূপে স্ফুর্ডি, সকলেই ডোমার মূর্ত্তি,
ভোমার সমূহ কীর্ত্তি, তুমি সর্বস্থাধার।
প্রতিমাদি পুলা করি, তাহেও ডোমারে হেরি,
জগতে তব মাধুরী, বিশেষ ৰূপে প্রচার।
ভোমা বিনা বস্তু থাকে, কভু না মানিব তাকে,
দোব কি বা পৌজুলিকে, ত্রন্ম তাজা কি সাকার।
ভূতেশ জগত স্থামী, জড় মাত্রে আছ তুমি,
ভোমারে বলি যে আমি, চন্দ্র জান সারোদ্ধার। (৪৭)

রাগিণী পরজ! তাল একতালা।

অবাক্ত অচিন্তা অভ্রান্ত অরোগ ব্রহ্ম,

অদেহ অগ্নেহ অনোহ অশোক ব্রহ্ম।

অজন্ম অকাম অকাপ অদোষ ব্রহ্ম,

অনুষ্ঠ অনাদি অমনঃ অন্ধিতীয় ব্রহ্ম॥

(৪৮)

রাগিণী জঙ্গলা থাষাজ। তাল আদ্ধা কওয়ালি।
স্মার জগদীশ্বরং কুপাসাগরং,
প্রণবেবাচা গুরুং পরাৎপরং।
স্কান লয় কারণং নিগুণং গুণাকরং,
অজরামরং সভা সনাভনং,
তুরিত নিবারণং বিশ্বধরং।
(৪৯)

রাগিণী রাগেশরী। তাল জলদ্ভেতালা।
আহিংসা পরম ধর্মা, এই ত ধর্মা প্রধান।
ঐহিক স্বর্গ নরক, এই ত কর্মা বিধান।
মনের সুধেতে সুখ, মনের সুংখেতে সুংখ,

রামিণী হাগির। তাল ধিগা কওয়ালি।

नित्रक्षन नित्राकात्र, जिनि नकल क्षथान।
क्कानिमाद्ध व्यक्तिश, क्षक द्वक्त स्विथान।
लक्ष উপानक व्यात्र, नाम क्ष्म व्याद्ध काँत्र,
क्ष वाजीज व्यवजात्र, नामा क्ष्मद्व भूक्षिमान।
व्यक्त्य क्ष्मद्व वाणाः, नित्र क्षिमान।
व्यक्ति क्ष्मद्व प्रश्वाणाः, नित्र क्षिमान।
क्षिन लार्ड्रेयू मूर्थाणाः, वाद्य वहन क्षमाण।
क्षित्र ना मदन विहात्रि, व्यान मा क्षादना कृति,
क्षित्र व्यवक्ष व्यक्ति, व्रद क क्षजीत्रमान।
वाहात्र व्यक्ति क्ष्मद वहर क्ष्मद नरह क्ष्मद व्यक्ति,
व्यक्षत्र व्यक्ति क्ष्मद वहर क्ष्मद नरह क्ष्मद व्यक्ति,
व्यक्षत्र व्यक्ति क्ष्मद वहर व्यक्ति।

(क्टाबर वहन कार्य, महाकान शक्षा धर्म, हे ज्वाब कार्य कार्य कि हात्राटन काल (6))

त्राशिवी (वर्शा । जीक धक्जामा।

ভক্ত মন্ চরণ তাঁর, যিনি সর্বামূলাধার।
দেব দেবা যাঁর কুপায়, হয়েছেন অবতার।
যিনি সকল নায়ক, যিনি সর্বা বিধায়ক,
হও তাঁর উপাসক, দ্বিতীয় নাহিক যাঁর।
অমৃত নহে নশ্বর, শ্বয়স্থু দিগস্বর.
তিনি সতা পরাৎপর, তগৎ যাঁর অধিকার।
পরিপূর্ণ অদিতায়, শাশ্বত অচিন্তনীয়,
তিনি চক্ত ভক্তনীয়, আতা্রাবেপে একাকার।

(@?)

(60)

क्रांशिगो (वर्गा । जान जनम्द ज्ञांना।

यश हि श्राष्ट्र नित्रक्षनश, यश हि ममछ कात्रनश, यश हि शतश श्राह्म श्राहम श्र

রাগিণী বেহাগ। ভাল জলদ্তেভালা।
বিভুং জগদীশ্বং অচিস্তাং অজরামরং ভলে।
নিরাকারং বিশ্বাধারং, অনাদি গুরুং
অবিনাশং জ্ঞানং, অজপাভাসং ভলে।
হজন-কারণং পালকং মহেশ্বরং,
সর্ব-ভূতেশং পরং প্রাব বাচাং ভলে।
জগতো মূলং অনাদি অক্ষরং রূপামরং,
চন্দ্রায় দেহি স্থং ভক্তিং ভলে।

রাগিণী বেছাগ। তাল জলদ্তেতালা।
জগতের কি রীতি দেখ, কোথা হাস্ত কোথা খেদ।
কোন স্থানে নব প্রেম, কোথাও প্রেম বিচ্ছেদ।
কোথাও নব কুমার, কোথা শুনি হাহাকার,
কাহার রাজ্য বিস্তার, কাহার ধন উচ্ছেদ।
কেহ স্তম্ব কলেবরে, কারে রোগে ক্লিফ করে,
কোথা যজ্ঞস্ত ধরে, কোথা হয় স্কৃ চ্ছেদ।
কেহ করে পুল কর্ম, কেহ বা করে অধর্ম,
কোথা সবে এক ধর্ম, কোথাও বা জাতি ভেদ।
কোথাও পড়ে কোরান, কোথাও পড়ে পুরাণ,
কেহ বাইবেল পড়ান, কেহ পাঠ করে বেদ।
ধরা স্থা সব রবে, জামান দেখিবে সবে,
কেহ কবে কেহ কবে, আলোভে নহে আভেদ।

রাগিণী বেহাগ। তাল একতালা।
স্মরণ কর তাঁরে মন বিরাজে যে অন্তরে রে।
যে তোমার অন্তরে আছে, কেন না চাও তার কাছে,
কোথা র্থা যাবে দূরে রে।
(৫৬)

রাগিণী কানেড়া। তাল কওয়ালি ঠেকা।
আর কত দিন এ অধীন, দীনভাবাপন্নে রবে।
ক্লপাময়ের ক্লপা বিনা, দুঃখ নাশ কে করিবে॥
তুমি নাথ সর্বাময়, জান প্রভু সমুদর,
বুঝিয়ে মন আশয়, তদ্রূপ কি ক্লপা হবে।
সর্বাভততে থাকিয়ে, রহ এ দাসে ভুলিয়ে,
আশা পূর্ণ কবে হবে, দুঃখ সব দূরে যাবে।
সকল অন্তর স্থিত, হৃদয় ভাব বিদিত,
তবে কেন ক্লপান্বিত, না হইবে সমভাবে॥
রাগিণী বাহার। তাল জং।

কি ছুঃখের বিষয় হলো, কেছ সত্য কয় না।
সত্য কহিলে কেছ, তাহে তুই হয় না।
সত্য বাক্যে করে দ্বেষ, সত্যভার নাহি লেশ,
অসত্যে পুরিল দেশ, আর সত্য রয় না।
সত্য প্রকাশিত হবে, প্রবঞ্চনা ধংস রবে,
সবে সত্য সত্য কবে, মিখ্যা প্রাণে সয় না॥

ত্য কবে, মিথ্যা প্রাণে সয় না॥ (৫৮) রাগিণী বাহার। তাল জলদতেতালা।

যে কিছু ঐশ্বর্যা নাথ, দিয়েছ নিজ ক্নপায়।
ধন্য আপনারে মানি প্রভু, সভত তাহায়।
যারে যত ক্নপা তব, সে পায় তত বিভব,
ব্যক্তি ভেদে যে সম্ভব, তারে দিয়া থাক প্রায়।
গ্র অথিল জনগণ, সকলি তব স্কুন,
সমভাবে সবে ধন, নাথ কেন নাছি পায়।
ব্যক্তি ভেদে অনুগ্রহ, ব্যক্তি বিশেষে নিগ্রহ,
কারে কবে যে বিগ্রহ, বুঝে উঠা হয় দায়।

দেবতা নর-প্রভৃতি, স্থিকর্ছা অধিপতি, সকল ভূতেতে স্থিতি, আর বল কব কায়। অন্তর নির্মাল কর, কুবাসনা পরিহর, িবেদন পরাৎপর, চক্র দেহী সতা ধ্যায়।

(63)

রাগিণী দেশ মলার। তাল ধিমা কওয়ালি। व्यवश्र मञ्जग हत्त्, जत्त दक्न এज जग्न। जलका यमाणि जान, उथाणि दकन मःभग्न ॥ याश यछा आताथन, स्ति प्रिकीत शूजन, क्रिटल खटका त्रायुन, युवन बायुन नय। কি তপস্থা স্বত্নস্কর, যতই না জপ কর, এ দেহ कान नश्रत, ४१म इरेटव निन्ध्य ॥ यङ जाकात विशेन, जमत्र हित्रिमन, व्याकात गाट्य विलोन, व्यवभा इरेटव काय। निङास यारा घिटित, ऐक्षस्यन कि क्रित्र. खतू जार को ज मार्च, श्रुष्टा नारम कण्या इस u मद्राप्त व्यक्षिकात, निवाद्रण माधा काद्र, नाम (मर्थ जक्तकात, किन्ध जनाथात नरा। याशाटक नाहि निखात, अकगिक मवाकात, क ज्ञानक वााशाव, श्वत् कार्श क्रम्य । षाड्याव शृष् जाक, निष्टि धानव खक, हम (दन नाहि मक, कूनित कति वाधारा।

(30)

রাগিণী বাহার। তাল জলদ্তেতালা।
আশা-ৰীজ মনঃক্ষেত্রে, করিয়া রপন।
অঙ্কুরিত হলো ক্রমে, পত্র তার আকিঞ্ন।
ধন ৰূপ শাখা তার, ক্রমে হইল বিস্তার,

রুহত মূল ভাণ্ডার, গর্বা দ্রুম উপার্জন। এ রুক্ষ যাহাতে যায়, চন্দ্র কর সে উপায়, জ্ঞানৰূপ অত্রে তায়, সমূলে কর ছেমন।

(७५)

রাগিণী হামীর। তাল জলদতেতালা। প্রণব বাচ্য গুরু, সর্বব্রোষ্ঠ ঈশ্বর। ভাষিতীয় সর্বাপাতা, কার্যায়তা প্রাৎপর। विका मकल व्यथान, এकश कतिरव छ्वान, দেবতা না কর ধ্যান, তাহে কিবা ক্ষতিকর। • धेकाश्विक कन्न (वम, (वम (कान्नना छेट्छम, পুরাণ করিলে ছেদ. কে করিবে মতান্তর॥ জ্ঞানির এই ভ মর্মা, বৈদিক করিবে কর্মা, পৌরাণিক নহে ধর্মা, বাক্যে মাত্র আড়ম্বর। व्यगद्यद्व बावाधित, कृष् कृष् ना विनाल, कि कि जियम इरल, तुबिल्ल इरव उ९भत ॥ भाराजी भारे कतिरल, मकल कामना करल, (भोदािकी ना जिभिटल, जाङा किया शानिकद्र। शृिकटि रेष्ठा क्रिल, उन्न शृक फुटल कटल, कि काज मूर्जि পृक्तिल, প্রতিমানহে ঈশ্বর। का जीय कत जिलक, रेश न दर भोखिकक, সম্প্রদা চিহ্ন ধারিক, বিভিন্নতা পরাপর। दिविषक कत्रम यं छ, छ। दह ना इदव वित्र छ, পৌরাণিক তন্ত্র মত, তাহে হও স্বতন্তর॥ পাষ্ড বলি সে জনে, ঈশ্বর যে নাহি জানে, व्यि जिमादक बक्त कारन, ठक्क छ्वारन रम शामत ॥

(७२)

রাগিণী মলার। তাল কওয়ালি। अकाश मकाश मध्या, ना कानि किছू निक्श। किवा में किवा मिथा।, क्यान क्रि धारा ॥ माकात कि निताकात, कि कानित्व माद्राकात, छुरे मिक् ष्यक्षकांत्र, किवा नम्र किवा रूम। नयदनित्र व्यक्ति। जित्रृष्ट काना कुछत्र, তবে কোন্ দিকে ভর, উচিত ধর্ম বিষয়। দেহাত্তে পুনঃ আসিজ, কি সভ্য মিথা। জানিত, অদুখ্যে কিসে প্রতীত, আকারে করি প্রত্যয়। जिश्र य निर्विष्णय, मूर्जि य कर्य विष्णय, তবে কেন হয় দ্বেষ, এ কি निन्द्रनीय नय ॥ ञिश्वदत्रत (काभानटन, महित्व मूर्जि मानित्न, এৰপ কিসে জানিলে, কি প্ৰমাণ কেবা কয়। उका ७ गाँशत की डिं, नकिन डाँशत पूर्वि, চচ্চের এই প্রবৃত্তি, তিনি সবে অভ্যুদয়॥ * (·9·3)

রাগিণী মলার। তাল কওয়ালির ঠেকা।
স্বভাবেতে আবির্ভূত, এই জগত সংসার।
স্বভাব অন্ধাপা কর্মা, কে করিবে সাধ্য করে॥
স্বভাব স্বভাবভূত, স্বভাবে সবে আর্ত,
স্বভাবে জন্মে অমৃত, স্বভাবে করে সংহার।
কে পারে স্বভাবাতীত, স্বভাবে সবে আল্রিড,
নাস্তি স্বভাব ব্যতীত, স্বভাব সমস্ত সার॥
ঈশ্বর পুরুষ আখ্যা, স্বভাব নারী স্মাখ্যা,
কোন মতে করে ব্যাখ্যা, শাস্তভেদেতে প্রচার।
পুরুষ প্রকৃতি বিনা, স্কি নহে সম্ভাবনা,

শ্বভাব সর্ব্য খাধীনা, শ্বভাব শুণ চমৎকার।
শ্বভাব ক্রিয়া সম্ভূত, কে শ্বভাব বশীভূত,
শ্বভাবে সবে সম্ভূত, শ্বভাব বে মূলাধার।
ঈশ্বরের কার্রিন্ডা, শ্বভাব সহ মিলিন্ডা,
উভয়ে কর্মা জোঠতা, মূানাধিক্য বোঝা ভার॥
দেখ গতির সঞ্চারে, স্তনে তুর্ম সদা ক্ষরে,
কিন্তু অপত্য সংহারে, তুর্মের নহে বিকার।
ঈশ্বরের অভিমত, যদি জন্ম মাত্রে-হোত,
তবে তুর্ম সঞ্চারিত, স্তনে কেন হয় আর॥
ঈশ্বর সর্ব্ব প্রধান, শ্বভাবে সর্ব্ব বিধান,
স্থি স্থিতি সমাধান, চন্দ্রের উভয় সার॥
রাগিণী দেশ স্থরট। তাল জলদ্তেতালা।

স্পার বাতীত বস্তু, কিবা আছে ত্রিসংসারে।
সকল নিয়ন্তা তিনি, বাছ কিয়া অভান্তরে।
বিভু বিনা বস্তু থাকে, কভু না মানিব তাকে,
যাহা দেখি দেখি তাঁকে, নিকটে কিয়া অন্তরে।
নশ্বর কি অনশ্বর, তিনি ব্যাপ্ত চরাচর,
যা দেখি তাতে ঈশ্বর, সে বিনা কে মান্য করে।
প্রতিমায় নহেন তিনি, ব্যাপিত্ব খণ্ডে তথনি,
সর্বব্যাপী যদি মানি, তবে আছেন সর্বান্তরে।
ফুছিলা ধাতু সলিলে, কাঠে লোফে সর্বান্তরে।
ফুছিলা ধাতু সলিলে, জানাজ্ঞানে বাস করে॥
ক্রীয়র বস্তুতে মূর্তি, গঠিলে হয় কুর্তি,
তিনি ছাড়া কি প্রবৃত্তি, মানবের হতে পারে।
প্রমন বস্তু যদি থাকে, যাতে নাহি দেখি তাঁকে,

खर পূজা পৌজলিকে, নিন্দ অশেষ প্রকারে॥ যে দিকে ফিরাই আঁখি, সব ব্রহ্মময় দেখি, এই ভাবে চন্দ্র স্থী, ব্যাপ্ত জিনি চর্চিরে॥

(30)

वािशिशी हेमन् कलाािश। जाल कल्ए जिला। তুমি ত মূর্তিতে আছ, তরু সবে দ্বেষ করি। **(मव (मबी ज्यामि यङ, मव-ञ्रक्तभ (ङ्याज्याति ॥** मट्य ভर्य मग्राचार, जामारम्य প्রভাব, 🕆 মানবের এম্বভাবে, দ্বিভাবেতে অহঙ্কারি। श्राज्य। मूर्जि পृजित्न, পाছে পৌত্তলিক বলে, किन्छ जूमि मर्किन्ड टल, जार्श ना मारन विष्ठाति ॥ व्यिचिमा शृका कघना, नवामटल नट्श भंगा. चिर्विषक ভाव थना, এकि वृक्षि विष्ट्राति। जूमि जाह मर्ख घटि, जूमि घटि जूमि भटि, म शृकाय किन हर्हे, किছू वृविद् ना शार्त ॥ टिडन कि घटिडटन, জीवि किश्वा निर्जीवटन, জড় কিয়া মূৰ্তিমানে, তোমার স্বৰূপ হেরি। ভুমি নাহি প্রতিমায়, কিন্তু আছ মৃচ্ছিলায়, कार्छ लाष्ट्रे य क्राश, नानाविधकारधाति॥ थाजू প্রস্তর সলিলে, পাপ পুণা সর্বস্থলে, ভুমি আছ ভূমগুলে, সমভাবে সমাচারি। জগৎ वााश्च जूमि इ.७, मदव ममजादव त्र.७, कारक इंख कारक लंख, क्रजांव महाहाजूरित ॥-मकत्म खन्न गानिव, गूर्डिएड (कन डाजिव, नर्तमस् कि कानिव, वाष्ट्रावाष्ट्रि अधिकाती। পুণোতে একোর স্থিতি, পাপেও একা বসতি,

ত্রকোর সকলে জ্যোতি, পাপ পুণা হটিকারী।
তার হৃষ্টি ছাড়া থাকে, কভু না মানিব তাকে,
ঘাহে গড়ে প্রতিমাকে, তাতেও ব্রহ্ম মাধুরি।
ব্রহ্ময় না বলিলে, অপুজা মূর্ত্তি সকলে,
তিনি স্থিত সর্বাহলে, অকায় মূর্ত্তি প্রচারি।
ব্রহ্ম হলে বিশেষণ, সর্বাময়ত্ব থওন,
চন্দ্র বেদান্ত ধারণ, সকলে ব্রহ্ম লহরী।

(&&)

त्राशियो आफ़ाना। जाल जनए जिल्ला। তোমার কিয়া আমার, পাপ পুণা ভোগ কার। ७ (प्रह इहेटल ४१म, नाहि किছू थादक जाश्म, यमविध तटह इश्म, जमविध मव् विष्ठात । পরমাণ্র নহে নাশ, তাহে জীবের কোথা বাস, তবে কিসে কি বিশ্বাস, দেহান্তে হবে বিচার ॥ পाशी किया शुनावान, भजास मम विधान, ব্রন্ম ছাড়া কোথা স্থান, লিপ্ত ভাজা কেবা ভার। পाशीत इहेर्द क्लिंग, हेहा य विषम क्लिंब, उप्नित्न कि चाहि (घ्र, ध ममखा काना जात ॥ यिनि वाश्वि চর চের, তার কেবা আত্ম-পর, সেহপাত ঘূণাকর, ত্রন্সের সম বিচার। शूगाणा उद्या विनीन, भाभी भाष्यिक मनिन, (कर स्थी नदर मीन, अकि नेन वावरात ॥ পুণোতে ব্ৰহ্মে বসতি, পাপে ভার নহে স্থিতি, ব্যাপিতত্ব বিনশ্যতি, হয় কি না হয় তার। ज्राक्ष याहात जाथा, भारभ नाई कत वाथा,

তবে কার হবে রক্ষা, পাথ পুণা এ সংসার। কারে বা ব্রহ্ম সদয়, কারে বা ব্রহ্ম নির্দর, একপ যদি বা হয়, তবে নাহি প্রতীকার। সর্বভূতে অধিষ্ঠান, সর্বভূতে যে সমান, তার চক্র সম জ্ঞান, পাপ পুণা একাকার।

(49)

রাগিণী ইমন্ কল্যাণ। তাল জলদ্তেতালা। কে খণ্ডিতে পারে বল, ভবিতবা যা ঘটিবে। जारर डेझब्बन करत्र, अमन रक जारह जरव ভবিষা ঘটনা যত, ঘটিবে সময় মত, তাহে হইতে বিরত, ক্ষমতাতীত মানবে। ঈশ্বর নিয়ম হয়, কিন্তু তারে সাধা নয়, चिवात या घेषा, इवात छाहा इहेरव ॥ ভবিতবোর সময়, প্রবৃত্তি তদ্রেপ রয়, निवृद्धि कि (म ममय, कब्रिट्वन (मवी (मद्व। धमनि इয় याজना, খতে ना मिरे घটना, कत्र তা यত প্রার্থনা, ঘটিবে কে বা রাখিবে॥ ভবিভবোতে নিস্তার, অসাধা যে দেবভার, याञ्च कि जात्र ছात्र, ভविषा जव कलिएव। ভবিতবা এই রীত, আপনি নহে থাওত, मगरग़रू छेशिष्डि, दल कि छेड़ीर्ग हर्द ॥ তপভা জপ পূজন, যাগ यक आद्राधन, কোন্ মতে কে থণ্ডন, করিতে ভাছা পারিবে। यङ इंड मट्डलन, खिवया ना निवाबन, চন্দ্ৰের এই কখন, ভবিতব্য কে খণ্ডিবে॥

(46)

वार्तिनी मृत शंषाण । काम क्वशांति ।

कृषि मंग शांत काम, कृषि वा त्याद कोषम ।

कृषि मान कृषि कान, कृषि मतन मनन ।

कृषि तार जान्नम दर, कृषि केदमार कामन ।

कृषि तार जान्नम दर, कृषि केदमार कामन ।

कृषि तार जान्नम दर, कृषि केदमार कामन ।

कृषि तार जान्नम तार जान्मम निम्न ।

कृषि केदमार त्यान, कृष्ण कामम-तमन ।

गर्था केदमार त्यान, काम्मम काम मर्गन ।

गर्था केदमार वाकीक, मतन ना रम्भ शांतन ।

गर्भा केपाम वाकीक, मतन ना रम्भ शांतन ।

गर्मा विष्यु हरम, कामादित काममा ।

वासम निर्माणन, त्यान कामादित काममा ।

तारे स्थ-मर्वारम, मक्क काम्यानम ।

विभाग भक्षा काम, माज्य त्यान ।

गनतम केदमार काम, माज्य त्यान ।

गनतम केदमार काम वालीक तम्मन ।

(60)

त्रिंगी क्षित्रकातः। তाल सल्द्र छालाः।
नश्त्रद्वतं नात्रं विनि, क्ष्यां चात्रं क्रियं त्रतः।
नश्त्रद्वतं नात्रं विनि, क्ष्यां चात्रं क्ष्रः।
नात्रं विना किया थाटक, च्यात्रं विनि काटक,
क्षत्रं कथा विशादक, च्यात्रं नात्रं वियतः।
क्षितं कथा छथा, च्यात्रं चात्रं नात्रं विश्वः।
नात्रं वित्रां च्यां छथा, च्यां च्यां च्यात्रं क्ष्रः।
नात्रं वित्रां च्यां कथा छथा व्यात्रं व्याद्यं,
च्यात्रं वित्रां च्यां कथा क्ष्यात्रं क्ष्यात्रं व्याद्यं,
च्यात्रं वित्रां च्यां कथा क्ष्यात्रं व्याद्यं व्याद्यं विति,
च्यां व्यात्रं विति, च्यां व्याद्यं व्याद्यं विति,

শাবার বদাপি মানি, মার নে অন্ধরে কর।

সার প্রকা সর্বা ভূতে, মার নে বে জ্বালুমর।

সার বাহির ভিতরে, স্বার কি, হুজে পারে,

সার বাহির ভিতরে, স্বার কি, হুজে পারে,

সার থাকিলে অসারে, স্বার ক্রাজমান,

সর্বা সার করি জ্বাল, শ্রার কিরাজমান,

সকল যার সমান, অসার কেন প্রভায়।

অসার ভ্রম সংকার, অসার কৈ যথা সার,

অসার ভ্রম সংকার, গ্রার বিরাজিন।

ত্বার বলাের বারা, সার নাহি জানে ভারা,

চন্দ্র নাহি হয়ে৷ হারা, সার ব্রহ্ম নিরাময়॥

(৭০)

রাগিণী বাহার আড়ানা। তাল জলদ্চেতালা।
সকল কর্মের স্থান, সংগ্রহ করহ সার।
মর্মা ছাড়া কর্মা নাই, জানিবে হে সারোজার।
পূজার সার হয় ভক্তি, কার্মোর সার দেখ যুক্তি,
ভ্রানের সার যথা মুক্তি, এই ত শান্ত কিচার।
মনের সার দেখ কর্মা, সাধুর সার সদা ধর্মা,
যোজার সার গাজে রর্মা, একান্তিক সার নিস্তার।
বিপদের সার ধর্মা, প্রাশার সার কার্মা,
কপের সার মাধুর্মা, রাজ্যর সার স্থানিকার।
সতীর সার হয় প্রি, পিডার সার স্থানিকার।
দেবভার সার ইন্দ্র, শীক্তবের মার কর্মা,
নাগের সার ফণীন্তা, ধল্মজুরি বৈদ্যা স্থার।
ভক্তবের সার নিশা, স্থায়র সার উক্তম আশা,

षायात मात्र खत्रमां, मियात मात्र खित्रकात्र । टिजिटनत गात क्याः, जिलिटतत्र गात्र स्थाः, শক্র সার হয় বিধা, স্তুতির সার নসকার। भीटित मात जाप्यत, का जिस मात व्याप्त, धारनत मात श्राप्त , जायान मात्र निकार्गत । ভূতা সার প্রভুভক, শরীর সার হয় রিজ, क्राध्यत मात्र विवक्त, जैयांची मात्र जाखात। **म**र्दनत मात ज्यम, (ज्यन मात रक्ट रन, वटलत मात প्रवन, बाति मात्र भारतितात ॥ कीर्जित मात्र हित्रिक्षि, ভार्याात मात्र धर्नवडी, সাধারে সার সীতা সতী, ভূষা সার অলকার। युक्त मात (मना औका; त्रजन मात यानिका, व्यि जिल्ला नात वाका, कथात नात चाठात्र॥ পাপ কর্মা সার ভোগ, ঋষি মুনির সার যোগ, অনিয়ম সার রোগ, তুফি সার পুরকার। (मरीत मात्र महाकाली, माजात मात्र देमजा राल. कुक्टर्यात मात किलं, भाभ मात जनागत । প্রভা সার দিবাকর, কর্মা সার তৎপর,

(45)

রাগিণী মুনিউানি। তাল জলদতেতালা।
মনে মহা তুরাশার, জন্মগামাত তেলারা।
বিপর্যায় ধনাশার, শারাশার তুনিবার।
লোভের নাহিত্র শান্তি: তেম-গুলে সদা জান্তি,
পুণ্য নাহি এক জন্তি, ধনাবে শাহি প্রতিকার।
প্রাস রৃদ্ধি বিষয়ে, সানস ধন সঞ্চয়ে,

वानिनी होनीत । जाम मन्यम् एक जाना ।

वाजनाय कू व्याणदंत, व्यव्धि मके मश्कात ।
वागना मना व्याप्त, व्यव्धि मके मश्कात ।
वागना मना व्याप्त, व्यव्धा व्याप्त व्याप्त ।
वागि त्यादक व्यक्तिमान, वागि वदम व्यव्धान,
वाग वग वगाय, वाग्रा त्यादक व्यव्धान ।
वाग्रा वग त्वर्गा त्याप्त, वाग्रा वग त्वापा वाप्त,
कृणाणहंदकत नाम्न, भंजांगिक व्यापा व्याप्त,
कृणाणहंदकत नाम्न, भंजांगिक व्यापा व्याप्त,
व्याणाणहंदकत नाम्न, भंजांगिक व्याप्त व्याप्त,
व्याणाणहंदकत नाम्न, भंजांगिक व्याप्त व्याप्त,
व्याणाणहंदकत नाम्न, भंजांगिक व्याप्त व्याप्त,
व्याणाणहंदकत व्याप्त, व्

(92)

शृत्वा क्रेश्व जावान, शार्ट्स स्था वान।
वाहाराहि क्व वनि, वाण्यि स्केटव नाम ।
क्षांक वाण्यि स्न, नर्साकृत्क क्वित तन्,
वित्या क वित्ययम, क नर्स माळ जाकाय।
मारञ्ज वांचा करस् ना, कर्द्स वांचा तरस् ना,
क क्या गरन नरस् ना, द्वांच वांचा विनाम ।
यक कीर नरस्का, यक कींव जरस्का,
यह वस निक्षींवन, क्वारम खंद्मंत्र क्वांमा।
दिसारक्व मक वांचा, क्वांमिष्ठ क्वांक क्वांमा।
वांक् ज्यां ज्वांचा, व्यांचा व्यांच्य क्वांमा।
वांक् ज्यां ज्वांचा, व्यांचा व्यांच्य क्वांचर्चा,
वांक् ज्यां ज्वांचा, व्यांचांच्य क्वांचर्चा,
वांक् ज्यांचा ज्वांचा, व्यांचांच्य क्वांचर्चा,

(90)

वाभिनी समात। जाम देका कवराणि। भाज वर्ष उपायक्त, व्यायक्ति (याका कात्र । किया गठा किया विश्वा, किया गात्र कि पागात्र । शुद्रार्थ (य स्वरम्बी, महायद्री नाना ह्रि. शान वामा जात कति, महत्व श्रीविक माकात्र। क्र उक्त निक्रिय, दकाया वा पादक कुडीय, ट्रमिविधि वर्क्षनीत्र. अक खन्म नित्राकात्र । डेड एसरे जयुभारन, साइत भाग जास्त्र भारन, ठिक् क्रिक् नाहि कार्टन, गर तिक् प्राक्षकात्र। विषादम कति निर्देश, महा मिष्या निर्वेशत. चयुगारन कत्रि छत्र, बाका विनारम क्षात्र । जुमि (क्या कारत मान, जिनि क् जाहारत मान, क्षरम (य छाद्र ज्यान, रक्न क्य ज्याविधाता याद्र खाव त्रहे कृषि, याद्र खाक त्यहे चाथि, षात्रि ज्यि जरम जित्र, मकान कि लाद र्छात्र। जामि जामि वन बादत, भट्ड खम जज्ञकादत. चामि दक्वा कान काँद्र क्या कन्निया विहास। यर जित्र के पि (शक ना. ८वमटक ८क्ट ८वक ना. ठिकृ ना (कदन रमक मा, कार्ट् स्काम किन्नमान । जारतिक दशदम मज, निकृदक केचा का कल व्याचा। भनी जान, कर्य त्वम स्ट्य मात्र ।

(88)

शाधिनी सूमकानि। जान मनग्रज्जान।।

थर्म विषय कामित्र, स्थानिक मत्य इत।

रमें कामि काफिर्स मत्य, सिस्टिंगक कथा कड़ ।

কার সতা কার ভুগ, জানিয়া সে পথ লও।
আত্মবৎ মান লগঁৎ, এই অভিমত অসৎ,
কিবা জ্ঞানে বুলিলে তথ, ভূমিও তৈা জ্ঞানি নও।
খানিগণ বাকা তাগে, বেদের মতে বিরাগ.
জ্ঞানি বলে অমুরাগ, কিন্তু কথা নাহি সও।
বেদ বিরোধীর কর্মা, তাহা নহে কোন ধর্মা,
জানি খাবি বাকা মর্মা, লশী সেই মতে রও।
(৭৫)

बाशिशी हेमम्कला। जान किला।

মুগ্ধ সম হয় দেহ, আগলা নবনীত সম।
আজ্ঞানে অদৃত্য বাস, একৰূপ বোধ ভ্ৰম।
মুগ্ধ হইতে মাখন, প্ৰকাশে হলে মথন,
মিশ্ৰিত ভাবে ৰথম, তখন এক নিয়ম।
প্ৰেক্ষল ভাবে নিবাস, শ্রীরে করেন বাস,
যোগ বলে স্থকাশ, বিধিমতে হলে ক্রম।
ছায়াৰূপে নিরাকার, শ্রীরে বসতি তাঁর,
চল্র ভাব এ প্রকার, প্রগণ পুরুষোত্ম।

(95)

दाशिगी मोश्या। जाल जनए जजा।

এক সতা পালনে হয়, শত শভ যভাগর।
সতোরি পালন করা, বেকেরি প্রধান মশা।
সতা ভল সতা কহ, সভা কর সভো রহ,
সতা ধর্ম সবে লহ, সভাই নিগৃত কর্ম।

(99)

রাগিনী ইমন্ থোজী। তাল ললন্তেতালা।
কি আর বলিব নাথ, শান্তর্যামী লব লান।
মনের বাসনা পূর্ব, যাত্ত ক্য কর বিধাল।
সর্বময় সর্বান্তা, শান্ত ক্যি বিজয়ী ক্যিতা,
জগতের স্থদতা, পরমালা পূর্ব জান।

(9r)

वाशिगी मुन्दानि। एवं स्वर्ग्डिंग। ज्ञियात वक् नाष्ट्राक्ष्य ज्ञानम् कार्यः এकण्ड प्रशाहित कालो एक गर्ने करते थे। मर्वा विशाप उक्षन, मक्षा पूर्व भागिन, मकल जात जीवन, रूपरास्थ्य शाम कर्त्राम (१३४)

वाशिकी जुलकालि। जाम जनम्द्रकारा।

नाथ! मदव यमि, ममजादब धनी इरेजा রুত্তিভোগীর যত কর্মা, কেবা করিত 🖫 🖫 इहरा य य श्राम, ना ब्रह्छि ममाधान, किक्रिश कार्या विधान, इट्डा मम श्रविभिन्। क्हि वा भाश अश्वर्धा, किह करत भित्रिष्धा, क कि कोमल कान्ध्या, कार्यायाया निस्मिक । ना थाकिटल माना।माना, कि कि कि कि दि भग, ভোমার নিয়ম ধনা, চক্র সদা আপায়িত 🔭 (৮০)

वाशिशी मुल्डानि। डान कलम्ह्डाला।

जात कारत विल नाथ! जुमि ज मवः क्षशान। নিভান্ত অধীন ভোমার, বুঝায়ে কর বিধান। ट्याद्र निर्वाह् खाद्र, चार्ट्स मन अधिकाद, সংহার কিয়া নিস্তার, কর জাহা ক্যায়াক। 📉 🦠 (৮১)

ताशिनी मद्रमञ्जा। । स्वामा सामार उठावा।

व्यम्बाका (कन मन, अस क्रिज मर क्रमा। कान उत्ना २७ मह, द्रा का शक भारता । नर्क छङ्ग यूनाधात, निक्रकात निक्कित्र, ममख जनम्यात, कत्रकात जारनाचन

- ("PR.)

त्राणिनी थाषाण। छाम अक्छामा।
त्रणाः कुङ त्रकाः कुङ, मधूष विणयः।
त्रणाः कुङ मानः अष्ट्र, त्रणाः कुङ मन्नदमः।
त्रणाः कुङ जीवन वाद्ये, त्रक नम नमीक्द्रवे,
त्रकाः कुङ मव मक्द्रवे, निद्यमन क्रिश्रदमः।

(>0)

वानिनी ख्रष्टेमसात्र। छाम कत्रपानि।

रणन कान्नर्भ, रक्ष जल ना। किलाड जान्नक्षना, यन क्रड छाज ना। रुक्षि विकि नाम गाउन, जानन क्ष्मछात करन, रम कि उक्ष क्रड भारत, मराजा रक्षम मान।

(58)

त्राशिशी लूम थाकाक । छाल मर।

विनाम (मर्म अजू, त्रका कत्र महरहे। जन्म प्रश्रम यारहे, मकरहे उटहे। उद क्रमात्र नित्रक्षन, कत्रि (मम भ्रमाहेन, जन्म। उद व्रमा, (यन विन्न नाहि घटहे।

(be)

वाभिगी सूम थाषाक। जाम सर।

मठा उस मठा मन, मठा मनन क्षरान।
मडा थान मठा कान, मठा का ममाथान।
राम विश्व (क्षरं, ठाट्स नाहि स्ट्या करे,
ठाला का का कामके, महासन क्षर विधान।

(64)

वानिनी दरहाम। जान जाड़ा टोका।

कामीण ताथ मान, रयन ना क्टेटक इस मादन काशमान। होत नम धन तूकि, हात नम क्टे क्यांग ॥ मान क्य गतिक नकी, मान श्राटन इस धर्म, मान बाका क्टे गर्की, मानव मान क्यांन। कि कन हरेट बदम, कि कन हटन के आदिन, ज्यान यात्र मादन, जिंहिल करे नियान। यात्र यपि नर्क धन, महन्त हत्र मत्तन, यात्र यपि क जीवन, जटब भारे भित्रजान।

(P9)

বাগিনী নিজ্বলাজি। তাল ধিমাতেতালা।
এই দেহের কিলে অহংকার, মন হয় তোমার।
মূগ্রা দেহ ইহা, অন্তর বাহ্য সব অসার।
পাঞ্চভৌতিক এ দেহ, ভোমার নাহিক কেহ,
তবে কেন এত স্নেহ, তাহা বুবো উঠা ভার।
জন্মিলে হবে মরণ, করিবে কেবা বারণ,
বুবো ইহা দেশ মন, সকলের এক আকার।
নানা বিধান যতনে, দেহ কি রহে প্তনে,
কলের ক্ষার প্রাণ্ড ক্রেমে হবে ছবে প্রার

কালের স্বভাব গুণে, ক্রমে হবে ছার থার। কি সম্বন্ধ দেহ প্রাণে, কি সম্বন্ধ এ ভুবনে, স্থায়ী মাত্র কিছু দিনে, পরে সকলি আঁখার॥ যে আছে সব শরীরে, বিরাজে চন্দ্র মন্দিরে,

भिष्ठे जार्छ वाश्रित, जाजा उक्त ममाकात। (৮৮)

व्राणिशी हेगन्कलान। जाम कीजामा।

প্রথম বন্দ সকাবাণী, প্রভু নিরাকার।
সূর্যাবংশ অবতংস, রাম অবতার।
মীন কমঠ শৃকর, নরসিংহ ভয়য়য়,
রেণ্কা-মত কঠোর, রুদ্ধ হিংসা প্রতীকার।
হলধর শ্বেত বরণ, থকাকার শ্রীবামন,
কল্ফী মেছ-নিস্থদন, প্রভু দশ্যা আকার।

ज्ञक जानामि ज्ञकत, मर्स युम भनाएभन, मर्स घট भन्न प्रमान, ठला ज्ञा निषाधान ॥

(49)

वाशिनी दवहाश, जाम जाए। टोका।

তুহি জ্ঞান তুহি খান, তুহি মান তুহি প্রমাণ। जूरि जान जूरि जासान, जूरि व्यानी जात्न व्यान। তুহি মন তুহি যতন, তুহি ধন তুহি রতন, कृष्टि भारत कृष्टि क्षायन, कृष्टि क्षीयन कृष्टि क्षाया ॥ তুহি জল তুহি স্থল, তুহি বরণ তুহি নিশাল, ভুছি করণ ভুহি উজ্জ্ল, ভুছি কারণ ভুহি বিধান। जुहि भूगा जुहि धर्मा, जुहि धृना जुहि कर्मा, जुहि धना जुहि मर्या, जुहि माना जुहि कला। ॥ जुहि जाय जुहि जाकाम, जुहि मिक् जुहि क्षकाम, जूहि श्वाम जूहि क्षश्वाम, जूहि रिष्ठम जूहि निर्साण। কুহি অনন্ত তুহি অচল, তুহি অতল তুহি বিতল, जूरि वल जूरि मश्रल, जूरि जल जूरि निमान ॥ जूहि जदाशुक अधक, जूहि উछिक (अमक, जूरि (पव जूरि पत्रक, जूरि स्का जूरि महान्। তুহি জীব তুহি কায়া, তুহি রূপা তুহি মায়া, जुहि ज्ञािक जुहि काशा, जुहि अक ठक्त जान ॥

(904)

র গিণী জয়জয়ন্তা। তাল চোতাল।
আত্মারূপে সর্বাঘটে, স্থিত সং হি নিরাকার।
তোমার অভাবে নাথ, সবে হবে শবাকার।
তুমি জীব সচেতন, তুমি অজপা কারণ,
তুমি ব্রহ্ম সনাতন, তুমি সর্বাধার।

দেহ যন্ত্র যন্ত্রী তুমি, তুমি কহ আমি আমি,
অথিল ব্রহ্মাণ্ড স্বামী, তুমি সব সারাৎসার॥
ভোমার ভাাগে অচল, ভোমার স্বায়িত্বে বল,
তুমি ত চক্র সম্বল, তুমি জগত আধার॥

(%)

রাগিণী স্থরটমলার। তাল আড়াঠেকা।

এ দেহের অভান্তরে, কেবা করে অবস্থিতি।
কেবল কি জীব আত্মা. কিয়া পরমাত্মা ভাতি।
ইহার নির্ঘণ যখন, জানিবে বুলিবে তখন,
অনা ভাব আছে এখন, জান না স্বৰূপ গতি।
নিতান্ত তোমার কাছে, অন্তরেই যেই আছে,
তবু ভান্তি হইতেছে, তবে নাহি অব্যাহতি।
নিগৃচ ভাবিয়া দেখা অনোর কাছে কেন শেখ,
চল্লের এই কথা রেখ, প্রকাশ পাইবে জ্যোতিঃ। (৯২)

ব্রহ্ম যদি ঘটে ঘটে, আছেন বিরাজমান।
পাপ পুণাভোগী তবে, কে হবে বল বিধান। (আছাই)
জীবের কিবা ক্ষমতা, আত্মা সর্বাকারয়িতা,
শুভাশুভ জ্ঞানদাতা, আত্মাই সর্বপ্রধান। (অন্তর্না)
তাঁর নিয়োগে করে কর্মা, এতে জীবের কি অধর্মা,
বোঝা ভার এর মর্মা, বলিবে কে সে সন্ধান।
ভার ইচ্ছায় স্থর্জি, ভাঁর ইচ্ছায় কুর্জি,
যোজনায় অনুবর্জী, যে দিকে প্রবৃত্তি লওয়ান। (অভোগ)

यमि भाभ भूगा थाटक, भ कल कलिएव काटक,

क्रिट्ल (जप जीवांकारक, मानव পশু नमान॥

त्राणिनी कग्रकग्रस्थी। जान क्रिजान।

टकान टकान मटड कटर, जीवाचा टकवन टलटर, পর্মাত্ম ভিন্ন রুট্ছে, এটেড কি আছে প্রমাণ। (অভোগ) कीर जाजा এक नज्ञ, शत्रमाजा जिल्ल इत्र, काना हेरात निन्छत्र, भ्य क्विंग जासुभाग । वाबात स्थ इथ नारि, जीव माज भार भारि, निर्लिश जाथे जासि, किकार १ ह्र (म खान। (जाजार) छ्यान रहेर्द यथन, चर्डम रूद उथन, कीव जाजा जिन्न रून, जात्न कदन्न वार्थान। পাত्र भाष्य अधि कीवन. प्रथ छाट् वछ ज्ञान, श्रामा (कार्किन, वाधारत क्षकानमान्। (कारकार्भ) আত্মার স্থায়িত্বে সব, সুথ ছুঃথ অনুভব, डांत जार्ग पर वन, दक भाभी दक भूगाबान ॥ कोबाजा (का निवाकात, कद (काश इद कात, এই দেহ হোলে ছার, পুন দেহ কোথা পান। (অভোগ) (म (क (य क्रिय धर्म, क्रिय कर्त्र भाभकर्म, (क जुनिद्व वल मर्गा, इत्य जाजिक्न शानान्। वाशात्र र'ता विदय्याभ, कात्र रूप बासूर्याभ, जोबमद्य (जात्रारजात, निक्कीर्य (क मश्र भान। (करजात्र) ानःटल्य रहेटल रूरम, व्यवश्च (मटर्ज ४१म, वाजाशक कीव जरम, त्क रहेत्व मूर्जिमान्॥ हत्त्व मश्यव याहा, यीयाश्मा कवह जाहा, दिवल याज वादका करा, करता ना उदर्ब जान । (20) दाशिनी वयकश्रही। जान क्रीजान।

जाजाकरण मर्का घटडे, जिनि जीव मरहजन।

(আস্থাই)

चाटछम कीय जार्जान, कानिट्य (वप-व्हन॥

षाषात त्यह षाधात. कीवनत्य नित्राकात, वस विना कि श्रकात, कदव डाँत छकी भन। (অন্তরা) পরিষ্কার পাত্রে জল, থাকিলে দেখ নির্মাল, ভদ্রপ আত্মার স্থল, প্রকৃতি মূল কারণ॥ शुनर्खात (मरे कटल, त्राधर मिन स्टल, পত্তিদোষে ক্রিয়া ফলে, স্থানগুণে বিশেষণ। (অভোগ) শর্করা মিশ্রিত বারি, হবে মিফ্ট স্বান্ত ভারি, ভিক্ত রস মিশ্র করি, স্থাদ হয় পরিবর্তন॥ • वाति नट्श मिखे जिङ, किछ ज्दा श'टल मिङ, গুণাগুণ অভিরিক্ত, মূল হয় বিসর্জ্জন। (অভোগ) প্রকৃতি গুণে স্থান্থর, প্রকৃতি দোষে অন্থির, ज्वाक्षरण यथा नीत्र, मिखे जिङ्ग बाञ्चापन॥ নিলিপ্ত নিগ্ৰণ যিনি, অপাপ অক্ৰিয় তিনি, সক্ত ভাঁহাবে মানি, ভিনি জীব ভিনি জীবন। (অভোগ) এই যে শরীরভার, বহিবার সাধ্য কার. আজাই মূল আখার, তিনিই সর্বা কারণ ॥ घठाष्ट्रम मीशनाम, मिटण्डचे निश्चन आम, बानामि निक প্রভায়, মুলভূত গুণভাজন। (অভোগ) डांत मार्था (पर बर्ट्, डांत स्वाधित्व (पर तर्र, ভার শক্তি বাকা কছে, ভার ভাগে দেহ পতন। (महे ७ षात्रा कानित, मिलिश वर्गाक कोरव, প্রকৃতি ক্রিয়া-সভাবে, আত্মান দোষ ভাজন। (অভোগ) তুষো যথা ঘৃত স্থিতি, অগ্নিতে ধুম বসতি, তদ্রপ আত্মার জ্যোতি, ঘটে ঘটে নিরপ্তন।

আত্বাসমভাবে হিড, চক্র-ছাদি বিরাজিত, কর্মগ্রণে হিতাহিত, আত্বা সভা সনাতন। (১৪)

गानिनी हेमन् कलानि। जान किला। नमत्य मर्वाङ्ट ज्यू. नमामि मर्वा कात्र । नमस्य मर्वणिकमन्. नमामि मर्व जीवनः ॥ नमत्ख পরিপূর্ণায়, नमस्ख (यদ-মান্যায়, नगर्छ ज्ञ हिजनाष्ट्र, नगामि मर मनाजनर। नमत्य जाि विः यक्षार्, नमत्य मणाकानार, नमत्य छानाधाताय, नमामि नर्यकिणिगः॥ नगट्ड निर्लिशाय, नगट्ड निर्विकायाय. नमेट्ड माরाएमाরाয়, नमामि জগৎ শিশ্পিনং। नमस्य व्यथिन वाािशदन, नमस्य हिल्यकिशदन, नमत्ख खन् श्वामित्न, नमामि मकल छानः ॥ नमत्य मठा অজরায়, नमस्य निठा অমরায়, नमस्य व्यवन-वाठाय, नमामि चार नित्रक्षनर। नमस्य অচিন্তা চিন্তার, নমস্তে শোকরহিতার, नद्याख्टक निर्लिशाय, नगामि नर्ख माधनशा नदमाञ्चटक जाननाश, नदमाञ्चटक जनसाश, नदमाखट्ड निर्शाय, नमामि मर्य एडनः। नमत्त्र जीवनभाष, नमत्त्र जूवन वीजाय, नमाख र्भक्षात्, नमामि ष्पणाण मखन्। नगर् कुणागाथाय, नगर् काञाथाय. न दमा खट्ड युक्तिमात्र, नमामि हम्प्र्यानः॥

वाणिनी सम् थात्राका। जान सर्।

मठा रहना कता, भानत्वत्र क्षथान कर्य।

(96)

সতা ভজ সতো মজ, সভাই বেদের মর্ম। সতা কহ সতা কর, সতোই সব নির্ভর নচ পুণা সতাপর, সতাতা প্রধান ধর্ম।

(29)

इालिनी लग् थाश्राज । जान यदः

অজপা হইলে শেষ, বল কি করিবে তখন।
সময় আছে ভক্তি যারে, ভাবহ তারে এখন॥
পঞ্চ দ্বার পথিমধ্যে, ভাবিয়া পরমারাখ্যে,
যাও যদি নিজ সাধ্যে, তবে পাবেশ্রেশন॥

(22)

वाणिणी अवष्यक्षाव। তाल जलम् एउ जाना।

কুবের সমান ধনী, তোমার নিকটে দীন।
ভীম সম পরাক্রমী, তব সন্নিধানে ক্ষীণ॥
সকলের আছে সীমা, তুমি কেবল অসীমা,
সর্ব্ব মহিম মহিমা, তুমি যুবা সবে প্রাচীন।
পৃথিবীর রূপবান, কে হবে তব সমান,
তুমি প্রধান প্রধান, স্বাধীন তব অধীন॥
কর্ত্তার তুমি হও কর্তা, রাজগণের তুমি ভর্তা,
চন্দ্র স্থ্যার তুমি হর্তা, তুমি প্রবীনের প্রবীন॥
রাগিনী বেহাগ। তাল জলদ্তেতালং।

(89)

 भवीत हरेटन कीन, यूथ-स्माजा हरन हीन, (तारगत हरम कथीन, उस हरन शम कत्र।

(34)

वाणिनी हेमन् कलान। जान थिमाटडड:ना।

'(मर्ट एमएम शमन विषान। यथा में देव अक का कि, यथा मकल ममान ॥ यथा हक्त स्या नाखि, नाखि भूगा भाभ माखि, যথা এক ব্ৰহ্ম অন্তি, একৰণ সমাধান। यथा नाहि क्रानिट्डम, यथा नाहि दिनान दिम, नाहि मिलन विष्कृष, नाखि উक्त नी ह सान ॥ यथा नाहि (माक রোগ. তথা नांखि कर्यां जांग, ज्या लाज कि विद्याश, यथा नाखि घृगा मान। यथा পाপ किया कछ, नांखि धर्म कि जनिछ, यथा मद्व श्व श्व ट्याकं, यथा नाश्वि व्यविधान। यथा शीम न नी उल, उथा न जल न खल, नास्ति पूर्वल अवल, यथा क्विन निर्वाण॥ यथा न श्रीडिन वन्ह, नाखि जाल किया मन्ह, यथा अভाव जानम, नान्छ काরाণ পুরাণ॥ यथा मना छहानमञ्ज, न देवती न छोत्र छग्न. उथा চল্লের অভায়, যথা গেলে পরিত্রাণ॥

(%%)

द्रांशिनी (दर्शन । जान कन्म (उज्ना।

मत्ना जाजासदा स्व विदारिक, छाष्टारिक छाङ द्विश।
निकरि थाकिएक क्वन, बन छाँद्व दूरत स्थ।
स्थ प्रश्थ कि मक्षि, स्व थाक जव निकरि,
जाव छाँद्व जाक गरि, हरस्मा निकरि स्थ।
(>00)

व्राशिनी সর্ফরদা। তাল জলদ্তেতালা।

भेश्वतंत क्षणा किया, श्राचाय क्षाचाय छाता ।
भूकी ज्यार्जिंड करना, ज्याया कात कात त्व ॥
क्रिंच वा र्य ह्य धनी, क्ष्म वा ह्य निर्धनी,
कर्म जना यि मानि, उत्त माथ मयउत्न।
व ज्या कति धर्मा, श्राव ना करत छाति॥
ज्यामान वाका मर्मा, धात्रण ना करत छाति॥
ज्ञिंड य श्रुणा करह, महास्त्र क्षाथा तरह,
श्रुनः श्राक्ष ह्य यारह, डाहा क्ष्म कातन।
क्षिट्ह हरेन পত्रन, काथा तहित्व जीवन,
भक्षण्टाउ मिनन, कि मयका मह श्राप्त ॥
ज्ञा श्रिड जात धरम, भरत नाहि थारक ज्राण,
किरम मह धरत हरम, मर्मेश हरम्त मरन॥

(>0<)

तां शिशी वारलगा। जाल जलम् एउ जाना।

সত্য কহ সত্য ভজ, সত্য কেহ ছেড় না।
সত্য জেন পরম ধর্ম, অসত্যে তায় ভুল না॥
পৌরাণিক যত কর্মা, অপর অনেক ধর্মা,
সত্যের অধিক মর্মা, সকলে তাহা বুঝে না।
বেদবিধি যাগ যজ্ঞ, বেদবেস্তা মহাবিজ্ঞ,
সত্যের হইলে অজ্ঞ, কিছুই ফল ফলে না॥
অশ্বমেধ শতাধিক, অন্য যজ্ঞ ততাধিক,
এক সত্যে তদধিক, তাহে রহ দৃঢ়মনা॥

(50.0)

রাগিণী আলেয়া। তাল জলদ্ভেতালা। মায়া-হ্রদে ডুব না মন, জ্ঞান-সন্তরণ জান না। কিৰপে উত্তীৰ্ণ হবে, তাহা কি মনে বুঝানা।
সে যে ত্ৰদ ছুন্তার, ভয়স্কর স্থাবিস্তার,
তাহে কেমনে নিস্তার, পাইতে হবে বল না।
মোহ যে অগাধ বারি, কিৰপে তাহাতে তরি,
ধৈর্যা অবলম্ব করি, তাহাতে কেন ভাস না।
(১০৪)

রাগিণী ইমন্কলাণ। তাল জলদ্ভেতালা।
শরণ লহ তাঁর যে নহে, তোমার আমার।
নির্লেশন, ভজ নির্কিগর॥
আছেন সকল স্থান, বস্তু মাত্রে অধিষ্ঠান,
অন্তর বাস্থে সমান, জ্ঞানরুপে নিরাকার।
জগতে আছেন ব্যাপ্তা, কিন্তু তিনি নহে প্রাপ্তা,
নাহি তাঁর পর আপ্তা, সকলেতে সমাকার॥
কেবা জানে কেবা আমি, নাহি জান কেবা তুমি,
এই ভ্রমে চন্দ্র ভ্রমি, সন্ধান কি হবে আর॥
(১০৫)

রাগিণী ইনম্কল্যাণ। তাল জলদ্ভেতালা।
পুণা কিয়া পাপ করি, তোমারি অর্জিত হই।
যেই ৰূপে রাথ নাথ, সেই ৰূপে সদা রই॥
পুণা যদি স্বর্গে যায়, পাপে নরকে ডুবায়,
কিবা স্থ ছুংথ তার, না থাকিব তোমা বই।
তুমি ত জগৎ ব্যাপ্ত, নরকেও হব প্রাপ্ত,
তুমি বিনা কিবা আপ্ত, তোমা ছাড়া কোথাও নই।
নরক যদিও থাকে, তথায় পাব তোমাকে,
তুমিই স্থথে বিপাকে, তব সঙ্গে সব সই॥
জগত ব্যাপিত তুমি, তোমা ছাড়া কোথা আদি,
তুমি ভ অথিল স্বামী, তোমা ছাড়া আছি কই॥

আমি ত সঙ্গের সাথি, যথা যাবে আমি তথি, ষেমন সারথি রথী, চন্দ্রের ভারতী এ। (১০৬) রাগিণী মলার। তাল কওয়ালি।

যদি ভাঁরে কাছে মেলে, তবে কেন দুরে যাও।
ভাঁরে সঙ্গে লয়ে ভাঁরে, উদ্দেশে কেন বেড়াও।
মনেরে আনিলে বশে, পাবে ভাঁরে অনায়াসে,
ভ্রম কেন দেশে দেশে, আপনাতেই যদি চাও।
ছক্ষ করিয়া মথন, বাহির হয় মাখন,
তদ্রপে করি যতন, হাতে হাতে ভাঁরে নাও।
যত দিন কাছে থাকে, তত দিন দেখা ভাঁকে,
চন্দ্র জান আপনাকে, হেলায় কেন হারাও। (১০৭)

ताशिशी ल्या जान यए।

জলে স্থলে শূন্যে জীবে, বস্তুমাত্রে বিদ্যান।
ভজ অনাদি অক্ষরে, যিনি সর্বাত্র সমান॥
যেখানেতে নাহি চাঁই, সেখানেতে ভুড়ুর ভাই,
অন্তর বাহে গোসাঁই, কুপাল কুপানিধান।
মনুষ্য মন নির্বালি, সকলে দেবতা বলি,
সৌলামে ঘর খালি, ইহা নাহি হয় জ্ঞান॥
পুজা করি যার তার, কুত্রিম হয়েছে সার,
ভাহার কিসে নিস্তার, শশী ভাবে সমাধান॥

वाशिशी देमन्कमाव। जाम कि जाना

জগত সব অজ্ঞান, তিনি মাত্র মহাজ্ঞান।
সকলই অকল্যাণ, কেবল তিনি কল্যাণ॥
সব বস্তু হবে নাশ, তিনি মাত্র অবিনাশ,
সকলেই অপ্রকাশ, তিনিই প্রকাশমান।

(306)

সকল বস্তু সগুণ, কেবল তিনি নিগুণ, বস্তুমাত্র অনিপুণ, নিপুণ তিনি প্রমাণ॥ জড় সকল সংসার, অজড় বিশ্ব আধার, সকলের আছে আকার, নিরাকার জগৎ তাণ। সকল হইবে ধংস, তিনি মাত্র অধংস, সকলেই তাঁর অংশ, চন্দ্রের সেই সংস্থান॥

(>0 >)

রাগিণী সরক্রদা। তাল জলদ্তেতালা।

নিশি গতে, যখন হয়, সূর্য্যের উদয়।
ভান না তোমার আয়ু, এক দিন হলো ক্ষয়॥
যবে হয় উষাকাল, তৎ পরে হবে সকাল,
কিন্তু যে নিকটে কাল, তা কি তব মনে হয়।
কর্মা বিশেষেতে কহ, হবে কিছু দিন রহ,
ভীবিত রহ না রহ, জানিবে কিসে নিশ্চয়॥
মানব কিবা প্রকৃতি, জীবিত রহিতে মতি,
আশা মহাবলবতী, এ জগৎ মায়াময়॥

(3>0)

রাগিণী বেহাগ। তাল একতালা।

বন্দেহং সংসার সার, ভূবনেশ্বরং ভূবনেশ্বরং।
ভঙ্গ অনাদি অক্ষর, জগদীশ্বরং জগদীশ্বরং ॥
নমানি ত্রিলোকনাথ, মহেশ্বরং মহেশ্বরং।
তংহি বন্দে আদি স্বভূ, অনশ্বরং অনশ্বরং॥
ভঙ্গ বিশ্ব বীজ ৰূপ, লোকেশ্বরং লোকেশ্বরং।
নমানি ত্রিগুণাতীত, দেবেশ্বরং দেবেশ্বরং॥
বন্দে অথিলেশ বিষ্ণু, ভূতেশ্বরং ভূতেশ্বরং।
ভঙ্গ অকাল নির্ভন্ন, সর্বেশ্বরং সর্বেশ্বরং॥
নমানি অনন্ত ৰূপং, জীবেশ্বরং জীবেশ্বরং॥

বন্দে বিশ্বনাথ নাথ, যজেশ্বরং যজেশ্বরং।
নমামি জ্যোতিঃ-স্বৰূপং বিশ্বেশ্বরং বিশ্বেশ্বরং॥
ভজ জগন্নথে বিভু. হংসেশ্বরং হংসেশ্বরং।
বন্দে অলক্ষ্য আত্মানং, চন্দ্রেশ্বরং চন্দ্রেশ্বরং॥ (১১১)

वाि शिश्वी देमग्कला ११। जान जनम् ए जाना। সংসার অসার, সার নিত্য নিরঞ্জনং। ष्यवाक व्यवव वाठा, शुक्र निथिन कार्तवः॥ मर्किषु एः मर्कि गृलः, मर्कि स्का मर्कि शृलः, मर्विष्णुव वासुकूलः, मर्विश्वन जाजनः। নিরাকারমপ্রকারং, পরাৎপর পরেশ্বরং, व्याविकीय्रायकश्वतः, मखनरेक्षव निर्छनः॥ উপाধि धर्मा विर्क्तिष्ठः स्रमः श्रेष्ठात मास्रकः, সর্বা মহিমা অন্থিতং, ত্বং হি সত্য সনাতনং। অশোকমজমভয়ং, স্বতন্ত্র পূর্ণয়বায়ং, সৎ স্বৰূপ চিন্ময়ং, ত্বং হি নিখিল বিধানং। ष्यनामि विভूমकातः, ममानमः यद्यातः, ত্বং হি জগদাধারং, অনুপম নিত্য জ্ঞানং॥ यः हि श्रञ्ज जाजाखः, यः हि व श्रञ्ज माखः, प्रशा हक्त प्रथ्य माजः, प्रश् हि मर्वि माधनः ॥

রাণিণী হামীর। তাল জলদতেতালা। ব্রহ্ম উপাসনার একি, হইল বিধান। তাঁর স্থান নিৰূপণ, যে সর্বতি বিরাজমান॥ যে প্রভু আছেন যরে, তিনি আছেন বাহিরে,

সেই বিরাজে অন্তরে, ব্রহ্ম ছাড়া কোন স্থান। দিবা-রাত্র সপ্তবার, বারমাস সম্যার, (>><)

নিয়মিত করি তাঁর, উপাদনা একি জ্ঞান ॥

থিনি ব্রহ্মাণ্ড বাাপিত, তাঁর স্থান নিরুপিত,
উচিত কি অমুচিত, বুঝে দেখ বুদ্ধিমান।
পাঠ্য পাঠী খিনি হন, ষাহা বল তিনি কন,
অন্তর্বাহ্যে তিনি রন, সংসারে যে অধিষ্ঠান ॥
নির্দিষ্ট স্থানে প্রতিমা, পূজার বাড়ে মহিমা,
ঈশ্বর ভক্তি অসীমা, তাঁর গৃহ সীমা ভান।
পুজিত হলে সাকারে, উপাদিতে নিরাকারে,
স্থান আবিশ্বক করে, কি জনা গৃহ নির্মাণ॥
তাঁর কাছে তাঁর কথা, বলিয়া থাক সর্বাথা,
চন্দ্র শুন না সে কথা, মানসে করহ ধাান॥

(270)

ব্ৰহ্ম-সঙ্গীত সমাপ্ত।



माभा विषय मञ्जी ।

রাগিণী সুরট মলার। তাল জলদ্তেতালা।
শঙ্কটে পড়ে উমা, ডাকি তোমায় শঙ্কটে।
ভূমি ঘটে ভূমি পটে, ভূমি আছ সর্বা ঘটে।
যে ডাকে মা বোলে ছুর্গে, রক্ষা কর তায় ছুর্গে,
নাশ কর উপসর্গে, তাহিমে যম-কপটে।
সময় প্রায় উপনীত, কালে দেখিয়ে তাসিত,
যেন না হই পতিত, কালের কর বিকটে॥
নহি ত মাতঃ পাষগু, তবে কেন পাব দগু,
চন্দ্রের কলঙ্ক খণ্ড, নিবেদন করপুটে॥

वािंगी कात्म ए। जान क अग्रानि रहेका।

কি লাগি করেছ, এলো কেশ [গো মা!]।
রিঞ্জিত বেশ তেজি, ধরেছ বিকট বেশ।
কেন তেজিলে আবাসে, কেন তেজিলে মা বাসে,
শ্মাশানে মা দিগবাসে, করেছ কেন প্রবেশ।
এই কি তোমার স্থান, শ্মাশানে যে অবস্থান,
এই কি হলো বিধান, কতো যে হইবে ক্লেশ।
কুবের যার ভাগুারী, কৈলাস যাহার পুরী,
এ সব তেজি মাধুরী, আসবে কেন আবেশ।

রাগিণী কামোদমলার। তাল ঐ।

कात वामा এলো, এলোকেশে विकरे-विष्म, जामव जनम, मारेजमारेजजीया मगरन तमना ध्रा, मूर्जि जाजि जतकता, (>)

(२)

কম্পান্তি বস্থারা, দানব-সমূহ গ্রাদে । কি কারণে ও মা শিবে, চরণ রেখেছ শিবে, বুঝিলাম অমুভবে, শ্রামা অমুর বিনাশে। সম্বর অম্বর পর, যাও মা শেথর পর, চন্দ্রচুড় দিগম্বর, সকাত্র তব আশে।

(७)

(8)

वाशिशी लूम थायाज। তाल यए।

তুর্গে তুর্গে রক্ষা কর, তুর্গা তুর্গতি-নাশিনী। ভবার্ণবে ভ্রদারা, তব চরণ ভরণি॥ নাহি চাহি মা সম্পদ, নাহি চাহি রাজ্যপদ, বাসনা মা মোক্ষ পদ, দাও গো ভব ভাবিনি॥

क्राभिनी टेडक्री টোড়ि। তাল ধিমাতেতালা।

এ শ্রামা কার বামা, কপে মনোরমা।
বিকট কপ অথচ, অনুপ স্থঠামা।
এলায়ে পড়েছে কেশ, শোভনা ভীষণ বেশ,
আসবে হয়ে আবেশ, সমরে বিষমা।
দমুজ মন্তক করা, শিব হৃদে পদধরা,
প্রকল্পিত বস্থারা, স্থর শুভকামা।
সঘনে বহে নিশ্বাস, প্রশ্বাসে দমুজ ত্রাস,
মাভৈঃ করে আশ্বাস, ভক্তে মাতৃ সমা।
গলে ন্মুগুমালিনী, কটিতে করকিক্ষিনী,
চল্রের শুভদারিনী, হও নিরুপমা।

(@)

রানিণী পরজ। তাল একতালা।
শঙ্কর শঙ্করী উমাপতি, উমা ভবভাবিনী।
দিগম্বর দিগম্বী, মুওমাল মুওমালিনী॥
তিপুরারি শীতিপুরা, সার সংসারসারা,

পরাৎপর পরাৎপরা, আদি আদ্যা শিব শিবানী। বিশ্বময় বিশ্বময়ী, ক্ষপাময় ক্ষপাময়ী, গুণ-ত্রয় গুণ-ত্রয়ী, সর্ব্বেশ তথা সর্বাণী। তিলোচন তিলোচনা, বামদেব বামলোচনা, যুগ্যৰূপস্থয়মানা, চক্র ভজ ইশ ইশানী॥

রাগিণী লুম খাম্বাজ। তাল ঠেকা।

ভবানী ভয়-হারিণী, ভব ভাবিনী। ভবার্ণবে কর্ণধার, ভয়ার্ভ ভব বারিণী। ত্রাহি মে জঙ্গমে, ত্রাহি মে তুর্গমে, জলে স্থলে ত্রাহি মে, মোক্ষদে মোক্ষদায়িনী।

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদ্তেতালা।

শ্বামা কেন নাচ গো, উন্মন্তা হয়ে রণে।
ত্যজিয়ে আবাস বাস, হেন বেশ কি কারণে।
এত কি তব বিপদ, ত্যজিয়ে নিজ সম্পদ,
শিব বক্ষে ধরি পদ, লজ্জা নাহি হয় মনে।
ত্যজিলে কেন অয়র, পদতলে বাঘায়র,
সয়র, রণ সয়র, কে যুঝিবে তব সনে।
অসি কেন মুক্ত করি, মুগু কেন করে ধরি,
নরকর কেন পরি, রসনা ধরি দশনে।
বল কি কর্মা সাধিতে, এলে মা কারে ববিতে,
তুমি সর্বা আরাধিতে, দমুজ কি নাহি জানে।
এ মুর্ভি দেখি ত্রাসিত, হুল্গারে সবে মোহিত,
চক্র তব পদাজ্রিত, গতি মতি জীচরণে।

রাগিণী কানেভা। তাল কওয়ালি। নবঘন-ৰূপা স্কুৰ্না, কান্ন বামা। (**>**)

(&)

(9)

অশিবনাশিনী, শিব-গেহিনী অন্তুপমা।
অভিনন্ধর বেশ, রণে করেছ প্রবেশ,
আসবে হয়ে আবেশ, সুত্রী মূর্ভি মনোরমা।
মৃত শিশু কর্ণমূলে, নরমুগুমালা গলে,
সদাশিব পদতলে, রুধিরাক্ত শোভে শ্রামা।
বিগলিত দীর্ঘ কেশা, নরকর-কৃত্বাসা,
পূর্ণ কর চক্র আশা, অদ্ভুত ছবি প্রতিমা।

(9)

बागिगी (कमाता। जान धिमार्ज्जाना। কেমন বেশ ধরেছ, [ওমো স্থামা]। পতিত যে পতি তারে, চরণে রেখেছ॥ व्यामदव रुद्य विख्तला, किन मा এত উতला, শवबाप পড़ে ভোলা, তাহা कि দেখেছ। ডाकिनी (यातिनी मदक, नाहिट्डि नाना तुदक, নাশিতে পার জভঙ্গে, তরু রণে সেজেছ। रुधि शिं ि श्राच श्राप्त श्रेष्ठ्। मार्ज रुग्न, তাহার উচিত নয়, যেৰূপে এসেছ। শান্ত হও ধর ধৈর্যা, হয়েছ মা কৃতকার্যা, তোমার কিবা আশ্চর্যা, ভবভার হরেছ। পরিধান নরকর, এ কি তব শোভাকর, (मिथिटिंक् . जग़कत, य (वर्ण त्रदेश्ह ॥ विश्राणिक क्रि (क्रम, ज्रासंत्र नाहिक लिम, विकछे क्रिया (वर्ग, मन्यू क वर्ध । চন্দ্র সূর্যা হুতাশন, প্রফুল্লিত তিনয়ন, এৰপ করি ঈক্ষণ, সবে ভয় দিতেছ। অসিমুগু শত্রুপক্ষে, বরাভয়ে ভক্তে রকে,

চতুষ্ণর উপলক্ষে, দ্বিভাব হয়েছ।
ভামার হুংকার রবে, স্থির হয়ে কেবা রবে,
দেখ চন্দ্র শবে শিবে, বহুভাগ্যে পেয়েছ।
(১০)

রাগিণী মলার। তাল কওয়ালি। काटनाय (य कद्र जाटना, अभन क्रि कि (मरथेटह । जर्मती अज्यती, একে विजात क अप्तर्हा সবর অভয়করা, ছিন্নমুগু অসিধরা, विदर्शियनी পद्रष्पद्रा, जमामाना क दूरवारह। मवामना विवमना, नत्रकत्र भन्नीधाना, मिन-हात পরিহীনা, নুমুগুহার পরেছে। চিৎস্থৰূপা নিরাকারা, অথচ সাকারা তারা, क्षिताक कटनवता, किवा कात्रप घटिट । निर्लिशा यथा निर्रुण, देव्हा लिश्राट मराण, भ कि तर् प्रमा हाना, य काली श्रि करत्र हा। यात्र शम कात्म श्राम, भिव जात्र शमजात. विक छे कर्प भाहित्ल, जरक याहा जाविर जरहा मानव मल निमिन्छा, जिम्मश्री विमिछा, স্থরাস্থর তব স্থাট, দ্বিভাবে কেন গো দৃষ্টি, स्रुधा (काथा विष-त्रिक, এ ভাব চন্দ্র জেনেছে॥ (55) রাগিণী খারাজ। তাল কওয়ালি আধা।

শঙ্করী শিব-মনমোহিনী মা।
তারণ কারিণী, শিবে সনাতনী।
শেখরি ছহিতা, পরমশোভিতা,
দেব আরাধিতা, ছঃখ-নিবারিণী।

ঘোরা মহাদিব্যা, অথিল জন সেব্যা,
শস্থু সেবিত সব্যা, ভূ ভয়হারিণী।
মহাসতী সাধ্যা, জগত আরাধ্যা,
ত্বং হি ভক্তি বাধ্যা, বিশ্ব প্রসবিনী
অস্ত্র গর্বিত, সমর থর্বিত,
উবী নিবর্বীর কৃত, তুই বিনাশিনী।
ত্বং হি শস্তু-শক্তি, ত্বং হি সাধক ভক্তি,
ত্বং হি পাপমুক্তি, যুক্তি বিধায়িনী।
ভব স্থিকিত্রী, ত্বং সংসার ধর্ত্রী,
চন্দ্র কুপা দাত্রী, কামপ্রদায়িনী।

(52)

वागिनी (दश्ग। जान जनम्द्जजाना।

অভয় অভয় কর, সমূহ ভয় হারিণী।
ত্বরিতে তাপিতে তার, মনন্তাপ নিস্তারিণী॥
ক্রগৎ গতি জগৎ ধাত্রী, রূপাময়ী রূপাদাত্রী,
সংসার স্থাদা কর্ত্রী, বরদে ক্লেশ বারিণী।
ত্বং নাশিনী স্বমেকা, ত্বং ভব-ব্যাধি নৌকা,
ত্বং মহতী ত্বং অধিকা, ত্বং হি ভব বিহারিণী।
ত্রন্ধাণ্ডভাত্থোদরা, সাকারা ত্বং নিরাকারা,
সহাদেবী মহাঘোরা, নানা রূপ প্রচারিণী।
ত্বং হি অন্তি ত্বং হি স্বন্তি, তদন্যথা গতিনান্তি,
ত্বিতে ভুবি কিমন্তি, শহর-ক্রদি চারিণী॥
দেহি মে মন বিরাম, দেহি মে মা'নিতা ধাম,
ভক্তপূর্ণ-মনস্কাম, চন্দ্র-কর্মণা-কারিণী॥

রাগিনী গারা ভৈরবী। তাল পোস্তা।
পাষাণের মেয়ে হয়ে, কত আর হইবে দয়া।
কেমনে থাকিবে গুণ, নিগুণা তথা অকায়া॥
উৎপত্তি প্রলয় যাতে, করুণা কি থাকে তাতে,
সদা অসি যার হাতে, তার কোথা হবে মায়া।
তমু যার ভয়য়রী, ছিয়মুগু য়য়ংকরী,
কিন্তু ভক্তে শুভয়রী, স্ব-শরীর মাত্র ছায়া॥
ভূমিতো মা নিরাকায়া, কার্যা কার্ণে সাকারা,
নির্লিপ্সা পরাৎপরা, চন্দ্রের ভূমি কর্মা ক্রিয়া॥
রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল চৌতালা।

চণ্ডিকা মুগুমালিকা, ত্রিগুণাত্মিকা মহাযোগিনী।
দাক্ষায়ণী মোক্ষ দায়িনী, দক্ষযজ্ঞ বিনাশিনী॥
নির লিপ্তা মহামায়া, নির্গুণা স্বপ্তণ কায়া,
জগৎ প্রস্থু জগন্মায়া, শঙ্কর মনমোহিনী।
শক্তিরপা শুভপ্রদা, সর্বমঙ্গলা বরদা,
মোক্ষদা সর্বকামদা, নিত্যা সত্যা কাত্যায়নী॥
মাহামেঘ প্রভা রূপা, জ্ঞানময়ী চিৎস্বরূপা,
কুরু ময়ি চল্ডে রূপা, শুভমতি বিধায়িনী॥
(১৫)

রাগিণী ইনন্কল্যাণ। তাল জলদ্ভেতালা। কে এল এ রণে, সহনে করে হুংকার। বিগলিত কেশ ছিল বেশ, গলে মুগুহার॥ পদভরে টলে ধরা, শিব-বক্ষে পদধরা, এ ধারা কেমন ধারা, ও গো মা এ বোঝা ভার। নৃকর করি ধারণ, তেজেছ কেন বসন, শিব-হৃদয়ে আসন, করেছ মা কি বিচার॥ ধরাধর তুমি ধাত্রী, ভবসারা তুমি কর্ত্রী, জনগণ স্থাদাত্রী, তাঁর কেন এ আকার। সম্বর সম্বর রণ, দমুজ হল নিধন, যাও নিজ নিকেতন, পৃধিবীর গেল ভার। দমুজ করি নিঃশেষ, কত যে হয়েছে ক্লেশ, চন্দ্র জ্ঞাত সবিশেষ, মহিমা মা গো ভোমার॥ (১৬)

রাগিনী সরকরদা। তাল জলদ্তেতালা।
তব পদে ও'মা শ্রামা, অস্থ্য়া ভক্তি কেন হয়।
চঞ্চল হয়েছে মন, স্থির কভু নাহি রয়॥
যে দিকে লওয়াও মতি, সেই দিকে মনোগতি,
কি হইবে ভবিষাতি, মনোগতি দেখি ভয়।
আমি ভাবি শ্রীচরণ, মন তাহে উচাটন,
কেন হয় এ ঘটন, ভাবি না পাই নির্ণয়॥
কুকর্মা করেছি কত, যাতে হয় এই মত,
অস্থির মন সতত, মূঢ়তা কেমনে জয়।
যদি মা দূষিত হই, সদা শ্রামা গুণ কই,
নাহি জানি শ্রামা বই, জান ত চক্ত হুদয়॥
(১৭)

রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল জলদ্তেতালা।
কাল বলে কে মাকে, এ যে উচ্চ্ল বরণা।
যে জানে না সেই বলে, শুনা বিবসনা।
দৈতাগণে ভয়ঙ্করী, ভক্ত জনে শুভঙ্করী,
দেবী জনে অশঙ্করী, ক্ষুদ্র বুদ্ধিতে জানে না।
প্রাণানেতে নহে বাস, স্বধানে তাঁর আবাস,
কে জানিবে এ আভাষ, তাঁহার কিবা বাসনা।
চিন্নারী সা নিরাকারা, ইচ্ছামাতেই সাকারা,

যাঁর করতলে ধরা, তাঁর কি অসি ধারণা।
বিনি হন জগন্ধাত্রী, তিনি কি সংসারকর্ত্রী,
জনগণ মোক্ষদাত্রী, সে কেন মুগুভূষণা।
বিরাট যাঁহার মুর্তি, ত্রন্ধাণ্ড যাঁহার কীর্তি,
হননে তাঁর প্রবৃত্তি, কিন্ধপেতে সম্ভাবনা।
বিরাজিতা সর্বা স্থানে, শবসনে বিবসনে,
তাঁরে বলে জনগণে, কালী করালবদনা।
চন্দ্র মন হয়ে শান্ত, কেন হও রে অশান্ত,
নির্লিপ্যা ভাব একান্ত, অকায় কায় কল্পনা।
(১৮)

রাগিনী বিভাষ। তাল একতালা।

গৌরী আমার শ্রামা হলো, কে জানিবে কি কারণে।
বিকট বেশে আসব আবেশে, শঙ্করে রাখি চরণে।
ভয়স্করী ঘোর রবা, অসম্ভাবিত সম্ভবা,
এ কি ভাব শবে শিবা, টলে ভব পদার্পণে।
নাহি মা বাঁধিয়ে কেশ, নাহি করিয়ে স্থবেশ,
রণে করেছ প্রবেশ, কিবা শ্রামার আছে মনে।
এই কি তব উচিত, গাতেতে মাথ শোণিত,
চন্দ্র কর নিবারিত, মাকে পাঠাও স্বভবনে। (১৯)

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদ্ভেতালা।
বিপদে পড়েছি মা গো, এ বিপদ কর নাশ।
ঠশুর্যা পাইয়া ও মা, পেয়েছি ষে মহাত্রাস॥
দিয়েছ রাজ্য বিস্তার, সময়ে মহা ছুস্তার,
কেমনে পাব নিস্তার, তুমি বই নাহি আশ।
চুসুক সমান ধন, লৌহ সম পর মন,
সদা করে আকর্ষণ, এমন ধন প্রয়াস॥

भव किया পितिवात, लाख प्रांथ मवाकात, ध्रम ना प्रिथ विकात, मकदनत ष्रांखनाय। ध्रमीत क्रिट व्यू नारे, ध्रमीत काथा ष्राष्ट छारे, ध्रमीत मक मवारे, लाए ध्रम करत नाम॥ जव नाम कित धाम, विश्रप প्रसिद्ध छान, ताथ छुर्रा ध्रम मान, हक्क कित्र ह ष्राफाम॥

(50)

রাগিণী ঝিঝুটী। তাল একভালা।

শামা মা কেন নাচেরে, বিবসনে মহারণে।
নর কর কাঞ্চী পরি, অসি মুগু করে ধরি,
রসনা ধরি দশনে।
মুগুমালা শোভে গলে, দৈত্য নাশে রণস্থলে,
সদা অট্রহাস বদনে।
ধরাধর প্রকম্পিত, শঙ্কর হৃদয়ে স্থিত,
হুক্কার রব সঘনে।
রুধিরে অঙ্গ আর্তা, চিকুর আলুলায়িতা,
বহ্নি নিংস্ত নরনে।
বামা কাল সৌদামিনী, চন্দ্র ছুংখ নিঝারিণী,
দেহি স্থান শ্রীচরণে।

(<>)

রাগিণী হাগীর। তাল কওয়ালি ঠেকা।
কেন শিবে করেছ, আমায় বিষয়ে বন্ধন।
কেমনে জপিব তব, নাম মায়ার কারণ॥
দিয়াছ মা রাজ্য ভার, ধন জন পরিবার,
এ সবে কিসে নিস্তার, গৃহী অসাধ্য সাধ্ন।
বিষয়ে হইয়ে লিপ্ত, ধন আশে থাকি তৃপ্ত,
ভজন সাধন লুপ্ত, আশা নহে নিবারণ॥

শ্রমন ধনের শক্তি, থাকিরে থাকে না ভক্তি,
লোভে লণ্ডয়ায় অযুক্তি, মহা অনর্থ কারণ।
আশা মহাবলবভী, সভত সঞ্চয়ে মতি,
কিসে পাইব নিছ্তি, সদা মন উচাটন।
মহামায়ারে পুজিয়া, ঘেরিল মায়া জাসিয়া,
বল কাহারে সেবিয়া, আশা হইবে ছেদন।
নির্লিপ্স কর গো ভারা, মোহে হলো বুদ্ধি হারা,
ধনের আশ্চর্যা ধারা, মন করে আকর্ষণ।
বে দিকে লণ্ডয়ায় বুদ্ধি, ভাহাই বোধ করি শুদ্ধি,
ক্রমে আশা হয় বৃদ্ধি, নাহি দেখি নিবারণ।
ভুমি প্রধান প্রকৃতি, সংসারে করেছ বৃতী,
চল্রে করহ নির্হৃতি, আশা লোভ ধন জন।
(২২)

রাগিণী আড়ানা বাহার। তাল জলদ্তেতালা।
কি এত ভার হলো ভোমার, তারিণী গো মম ভার।
সাধন বিহীন জনে, এই কি হলো বিচার॥
স্থক্তী অকৃতী হই, জানি না মা তোমা বই,
তোমা ছাড়া কভু নই, অধমের ভুমি সার।
মাতার সব সস্তান, নিশুণ কি গুণবান,
সকলে স্নেহ সমান, তবে কেন এ আচার।
নহি মূঢ় প্রতারক, শুনো পদে নিবেদক,
চক্র ভোমার সেবক, নিজ গুণে কর পার॥
রাগিণী সিন্ধু। তাল পোন্তা।

আর কারে ডাক্ব শ্রামা, ছাওয়াল কেবল ডাকে মাকে। এমন সন্তান নহি ভোমার, ডাক্ব গো মা, যাকে তাকে। শিশুতে মা বৈ বলে না, মা বৈ ত শিশু জানে না, মা ছাড়া কভু থাকে না, আমি থাক্বো দেখে কাকে।
পুত্র লাগি তাজি স্থা, মাডা কভ পান ছু:খ,
দেখিয়ে অপতা মুখ, কিছু ছু:খ নাহি থাকে।
মা যদি শিশুকে মারে, শিশু কাঁদে মা মা করে,
ঠেলে দিলে গলা ধরে, ছাড়ে না মা যত বকে।
জগত জননী হও, পুত্র ভার তবে লও,
মা গো আব্দার সও, এই জন্য চক্র ডাকে।
রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল বাপতাল।

কার জন্যে এত ক্রোধে, শ্রামা এ বেশ করেছ।
উন্মন্তা হয়ে কেন, করেতে অসি ধরেছ।
রণে কেন আগমন, কি লাগি বেশ এমন,
দন্ত্রজ বধ কারণ, বুঝি নৃকর পরেছ।
এ হেন পদ কোমল, তবু ধরা টলমল,
গঙ্গাধর পদতল, দেখিয়ে না দেখিতেছ।
নাকারা কার্যো সাকারা, অসার সংসার সারা,
চন্দ্রগতি মতি তারা, মাতৃ সেহ কি হরেছ।
রাগিণী সিন্ধু। তাল পোন্তা।

রণ রঙ্গিণী শ্রামা, কেন নাচে রণ রঙ্গে।
ডাকিনী যোগিনী শ্রেণী, উন্মন্তা সঙ্গে সঙ্গে।
কুঞ্চিত কুন্তল এলো, ভীমবেশা কেন এলো,
দশ দিশ ৰূপে আলো, দমুজ জাসিত ভঙ্গে।
ভূষণ কেন তাজেছ, নুমুগু হার পরেছ,
বসন কোথা রেখেছ, নর কর বাস অঙ্গে।
কমঠ সহিত ফণী, সদা কিশাত মেদিনী,
ভীষণ হুন্ধার ধনি, তাসিত সবে আতঙ্গে।

गांधक (मिविज পेদ, मि श्रम हिन्स मण्लोम, সংসার মহাবিপদ, সংহর মাতঃ ভ্রাভঙ্গো।

(२७)

वाशिशी बिवूणी। जान त्थाखा।

কেন শাসা এলে রণে, ছাড়ি ঘরকরা।
অসি করে কেমন করে, করিতেছ হল।
শিবে রাখিয়ে শেখরে, এসেছ মহাসমরে,
যাও মাতা নিজ পুরে, শিব ঘরে রলা।
ঘোরবেশা দিগম্বরী, কেন মা এ বেশ হেরি,
যাও মা রণ সম্বরি, চন্দ্র দিবে ধলা।

(२१)

রাগিণী খারাজ। তাল কওয়ালি।

নৃত্যসি শামা শকর হৃদে।

এলো কেশা দিগবাসা, কীর্ত্তিবাস প্রমদে।
নরকর পরিহিতা, নরমুগু করে ধৃতা,
মুগুহার স্থশোভিতা, তড়িত ফেন অমুদে।
এ হেন কপ উপমা, কে পারে করিতে সীমা,
সামানাা নহে এ বামা, সাধকগণ ক্ষেমদে॥
করে অসি বরাভয়, পদতলে বিশ্বময়,
দর্শনে কলুব ক্ষয়, সেবক জন স্থপদে।
মায়া মোহেতে আরত, সতত থাকি বিত্তত,
ভ্রমবশে পাপকৃত, শ্রী চন্দ্রে রক্ষ বিপদে॥

(२৮)

রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল ধিমাতেতালা।
আসব অলসে মগনা, নগনা কে এলো রণে।
নবীনা মহপ্রেবীণা, শোভনা শ্যামবরণে।
কমলান্তে অট্রাস, কোমলাঙ্গে কর বাস,
কমল করে, করে নাশ, কঠোর দানবগণে।

লিখিত কৃঞ্চিত কেশ, ত্যজিরে স্থবেশ বেশ,
চরণতলে মহেশ, দেখ না দেখে নয়নে।
করে করি মুগু অসি, পদে গঙ্গা বারাণসী,
সাধক মন সন্তোধী, নৃত্যতি রণ অঙ্গনে।
দশনে ধরি রসনা, হয়েছ রণে মগনা,
ব্রহ্মময়ী সং ত্রিগুণা, দেহান্থিতা কার্যাগুণে।
ক্রধির মেথেছ অঙ্গে, ভাকিনী যোগিনী সঙ্গে,
চল্রে হের মা অপাঙ্গে, নিবেদন জীচরণে।

(\$\$)

রাগিণী মল্লার। ভাল কওয়ালি।

कालि शिष्ट मन, किन मां ना।
कालिनामाम् ज मना, किन मन थां ना।
कालिनाम महोष्टि, शादन थर्ड शाश्र वादि,
कालि जावि निवर्वि, शांलि क्रशा हां ना।
शांव वहे कि ना वहे, काली नाम मना वहे,
कालीव नाम श्र काली छंग भांड ना।
कालीव नाम मां शंक, काली विना किवा खांच,
कालीव नाम मां शंक, हक्त किन यांड ना।

(७०)

রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল চোতাল।
কালীর শ্রীচরণ ধন, সবে কি পায় সে রতন।
সাধকের দৃঢ় ভক্তি, আর বিনা আরাধন।
সামান্য রতন নয়, অপ্প আয়াসে কি হয়,
ঐকান্তিক যার রয়, সেই পায় শ্রামা ধন।
বরং সন্তরণে পার, হতে পারে পায়াবার,
শ্রামাপদ প্রাপ্ত ভার, সে ধন নহে সাধারণ।
ভক্তিভাবে নিরব্ধি, মনং স্ক্রংখ্যে সাধি,

তবে ত অমূল্য নিধি, প্রাপ্তির হবে ভাজন।
খ্যামাপদে ভক্তি রাখি, তৃপ্ত হও হৃদে দেখি,
নামামৃত পানে স্থা, সফল কর জীবন।
সাধকগণ সেবিতা, দেবদেব আরাধিতা,
জননি চন্দ্র বন্দিতা, হৃদয়ে করি স্থাপন।

(<>>)

वाि शिवी विভाष। তाल कलम् एउ जाला। শ্রামা আমার মন, বড় হয়েছে উদাস। मन कछ क्र नछ, अछ हेन्हा क्र नाम। ঘোরতম তমোরাশি, বাসনা তুর্মতিফাঁশি, व्यादमान व्यदमादन जुवी, मदनागि जिलाय। আশয় ষেন বারণ, নাহি হয় নিবারণ, किटम इदव छेशार्डीन, अहे छ मडड आणा वक्ष विषय वक्षात्म, जिंक माखि जी हत्रत्म, माधा नाहिक মোচনে, क्रिय़ा वछ श्रयाम। क्रुर्याप भाष्टि यन, नाहि ভাবে খ্যামা ধन, বিক্লতি প্রকৃতিগণ, রূপা ধন অভিলাষ॥ थन জन পরিবার, কেহ্ নহে আপনার, वूरवा व वूरवा ना मात्र, भार्ट् करत्र इं इंगा । পঞ্চতोতिक এ দেহ, এরা নহে তব কেহ, তাতে হয়েছে সন্দেহ, यए द्रिश्व मना जाम। कुक्टर्याट मत्नागिष, क्रम्श्य महा मिछ, ना क्रि ज्व जात्रि, यदन कुर्खित वाम। এ ভব জলধি ঘোর, চরণ ভরণি ভোর, कानि कान हत्ना (जात्र, ध्यवन कान याजान।

হে জননি! ত্রাণ-দাত্রী, মায়াচ্ছন্ন মোহকর্ত্রী, চন্দ্র মন তমোহর্ত্রী, জ্ঞানার্ক কর প্রকাশ।

(७२)

वािशिशी हेमन् शोदी। जान जनम् ए जाना।

শ্রামা গুণ গাও রে, মন আর কি চাও রে।

এ বামা সামানাা নহে, কে এমন দেখাও রে।

যার নামে যায় নিভাধামে, এমন আর কি পাও রে।

শ্রামা মতি শ্রামা গতি, তাহে মন ধাও রে।

শ্রামা চরণ অমূল্য ধন, ক্রদিমাঝে লাও রে।

চক্র উক্তি শ্রামা শক্তি, ভক্তিপথে যাও রে।

(৩৩)

রাগিণী কালেড়া। ভাল ধিমাকওয়ালি।

বিত্রত হয়েছি তারিণী, বিষয় করি আশ্রয়।
আরত করেছে দেহ, বিষ সমান বিষয়।
আচ্ন বিষয় বিষে, স্বচ্ছন্দ হইব কিসে,
কালী মন্ত্র বিষ নাশে, এই প্রবল আশয়।
কালী গুণ উক্ত তন্ত্রে, পাপ নাশে কালী মন্ত্রে,
ভুমি ত সকল যত্রে, তবে কেন ভুরাশয়।
অস্থায়ী স্থখ এহিক, কুপ্রবৃত্তি মানসিক,
চন্দ্রের ক্লেশ দৈহিক, শ্রামা নামে হবে ক্ষয়।

(98)

य्राशिशी विवृति। जल এकजाना।

মহারণে বিবসনে, এলো কার কামিনী।
সহজে প্রবীণা, অথচ নবীনা, ভীষণা রণ-রঙ্গিণী।
শ্রামাঙ্গে রুধির শোভে, নবঘনে দামিনী।
আসব আবেশে অউ অউ হাসে, দৈত্যনাশকারিণী।
হক্ষার রবে স্কর্ন দানবে, প্রকাশিকা মেদিনী।
নর কর কটীপর, নর মুগু মালিনী।

শিব বক্ষে পদ ধরি, সঙ্গে সমূহ যোগিনী।
মাতৈ ভক্তে সম্ভাবে, বিপক্ষে ভয় দায়িনী।
পদভরে ধরা কাঁপে, সহিত কমঠ ফণী।
নাহিক উপমা অসীম মহিমা, চক্রচুড় ঘরণী।
রাণিণী ইমন্কল্যাণ। তাল ধিনাতেতালা।

এ নব বয়সে এলো কেশে, এলো কে সে।
চতুক্ষরা ভয়য়য়া, অধীয়া ভীষণ বেশে।
শ্রামাঙ্গে লিপ্ত শোণিত, নবীন ঘনে তড়িত,
বজ্রসম হুম্বারিত, আসব পান আবেশে।
মুগুহার লয়মানা, নয়য়য় পরিধানা,
ঘোরোয়তা বিবসনা, ঘন ঘন অউহাসে।
সমরে মহাপ্রথরা, ছিয়মুগু অসি ধরা,
ভক্তে বয়াভয় করা, মাতৈঃ মাতৈঃ সদা ভাষে।
ব্রন্ধাণ্ড করিতে নাশ, হলো কি মা তব আশ,
অবিনাশ হয় নাশ, চয়ণে পতিত ত্রাসে।
এই কি সম্ভবে শিবে, পদতলে রাখ শিবে,
ত্রাহি ত্রাহি করে দেবে, রক্ষা কর আশুতো্বে।
সামান্যা নহ রমণী, সাধক কফ বারিণী,
চন্দ্রসহ সীমন্তিনী, আননদ সলিলে ভাষে।

রাগিণী পরজ। তাল একতালা।

অষিকা অয়ে অয়ালিকা, মোক্ষদায়িকা, প্রমথপালিকা।
পিরিশ গেহিনী, জগৎ জননী, তারিণী গিরিবর বালিকা।
কলৌ কলুষ নাশিনী, কংকালী কাল বারিণী,
গীর্বাণী স্থং সনাতনী, স্থং হি পরমাজিকা।
কুপ্রান্ত বিনাশিনী, স্থেরন্তি বিধায়িনী,

শঙ্কর হৃদি চারিণী, ভক্ত মোক্ষ দায়িকা।
বোগাদ্যা মহাবোগিনী, চিন্ময়ী শিবে শিবানী,
ব্রহ্মাণ্ড বীজ কপিণী, সাধক জন সাধিকা।
কামাখ্যা দক্ষনদিনী, ভদ্রকালী স্বং রুদ্রোণী,
হিম শেখর বাসিনী, কমলা কামদায়িকা।
সতী সাধ্যা স্বং অন্নদে, স্থাদে মাতঃ শুভদে,
চল্র পতিত বিপদে, রক্ষ নানা বিভীবিকা।

(৩৭)

রাগগণী ঝিঝুটো গোরী। তাল পোন্তা।

শ্রামা গুণ গাও রে, যদি মুক্তি চাও রে।
শ্রামা মত রূপাময়ী, আর কোথা পাও রে।
শ্যামা মায়ের দোহাই দিয়ে, ভব পারে যাও রে।
শ্যামাপদ রেণু চক্র, ভক্তিভাবে নাও রে॥ (৩৮)

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল ঝাপতাল।

রণ মাঝে হেন সাজে, বিরাজে কে রমণী।
দশ দিশ করে আলো, বরণ কাল ত্রিনয়নী।
কারে নাহি করে ভয়, ঘোর নাদে কথা কয়,
শক্রগণ করি জয়, দেব ভয় নিবারিণী।
ঘোরদন্তা সাউহাসে, মাউভঃ মাউভঃ সদা ভাষে,
ইচ্ছামাত্র শক্র নাশে, দেখি যেন উন্মাদিনী।
শামে শরীরে শোণিত, নবীন ঘনে তড়িত,
চরণে শিব পতিত, তথাপি রণ রক্ষিণী।
এ যে নারী দেখ কার; কে তথা বুঝিবে সার,
চক্র কর না বিচার, কেমন কার কামিনী।

वाभिनी दिश्मा। जान अक्जाना। स्था भारत विवनरन, धरना तरन कात वाना। (%)

শোণিত শোভিত অঙ্কে, যেমন ঘনে চপলা।
লায়ত কুঞ্চিত কেশ, তাজিয়ে স্থবেশ বেশ,
ভীষণ রণে প্রবেশ, অভয়া সদা চঞ্চলা।
অধরে শোণিত ধারা, লোল জিহ্বা ভয়য়রা,
কর কাঞ্চী বাস পরা, ছার ত্যাজি মুগুমালা।
শলি ভাল ত্রিনয়না, বিকট ঘোর দশনা,
ঘোর অমৃদ বরণা, কালম্বপে সমুজ্জ্লা।
ঘুর্ণিত রক্ত লোচনা, শব শব লেলিহানা,
শবে শিবে শোভমানা, উম্বন্তা যেন বিহ্বলা।
সামান্যা নছে এ নারী, চতুষ্করা ভয়য়রী,
দিতিতনয় সংহারি, ঘোরা বদন করালা।
অশিব নাশিনী তুর্গে, ত্রাহি গো সাধকে তুর্গে,
চক্র পরিবার বর্গে, নিস্তার সর্বামঙ্গলা।

(80)

রাগিণী আড়ানা। তাল জলদ্তেতালা।
মা! তব ভয়হারিণী, ভবানী নিস্তারিণী।
সক্ষট বারিণী, সক্ষটা দেবী রুজাণী॥
চণ্ডমুগু ঘাতিনী, শিব হুদিচারিণী,
দক্ষযজ্ঞ নাশিনী, বিশ্ব বিধায়িনী।
ব্রহ্মাণ্ড ভাণ্ডোদরা, সাকারা জং নিরাকারা,
জং হি মাতঃ বিশ্বাধারা, জং হি নারায়ণী॥
বোড়শী ভুবনেশ্বরী, জং হি শাশ্বতী ঈশ্বরী,
জং হি মাতঃ ত্রিপুরারি, মনমোহিনী।
জং হি সর্বামঞ্চলা, কমলা জং হি বিমলা,
জং হি মাতঃ গিরিবালা, জং হি কাভাায়নী॥
পারমা পারমাজিকা, জং হি বছলাজ্বমেকা,

हिल्का भिव नाशिका, जगৎ প্রস্বিনী। हिन्स महा অভিলাষ, তব हরণ প্রথাস, পূর্ণ কর মন আশ, কৃত্তিবাস গেহিনী॥

(\$\$)

রাগিণী সরপরদা। তাল জলদ্তেতালা।

রণে কেন হলে মন্ত, আত্মতন্ত্র না জানিলে। নাশিতে ভুচ্ছ অস্তুরে, কেন গো অসি ধরিলে॥ घात (वन जिला किन, त्रा करत्र अरवन, ভয়ের নাহিক লেশ, অনিমেশ কুতুহলে। কোথায় গেল বসন, কোথায় গেল ভূষণ, কোথা গেল আভরণ, করাল মূর্ত্তি করিলে॥ স্থমিষ্ট মধুর রব, ভীষণ কি শব্দ তব, অবলার কি সম্ভব, পতি রাখা পদতলে। त्रमना मगदन धति, (कन श्रामा मिशश्रदी, ना रहित कल माधुती, कि कात्ररण किवा ছला। কমল সম নয়ন, হয়েছে রক্ত বরণ, व्याधिकना वित्रियन, काश मृत्ये ताष्ट्रे जातन ॥ হাস্থাননে ঘোর ভাষা, বাস ত্যাজি দিগবাসা, कुलवर्डी इरम जामा, भार्ज कि ध त्र व द्र व পরমা পরমাত্মিকা, সাধকাভীফ দায়িকা, बीठम প্রতিপালিকা, ত্বং ছি একা ভূমগুলে।

(88)

রাগিণী সুর্ট মলার। তাল জলদ্তেতালা।
কালবর্ণে করে আলো, কেশ এলো এ এলো কে।
এ কামিনী একাকিনী, মহারণে পশিল কে।
দামিনী রূপ দমনা, চন্দ্রাননা বিবসনা,
তিনয়নী হাস্তাননা, আসবে মন্তা হলো কে।

ছিল্ল মুগু হার গলে, নর কর বস্ত্র ছলে,
নাতেঃ মাতেঃ মাত্র বলে, করে অসি মাতিল কে ॥
দৈত্যমুগু করে ধরি, ভীমবেশা ভয়ঙ্করী,
উন্মন্তা সম এ নারী, পদতলে পড়িল কে ।
বামা বয়সে নবীনা, সমরে দেখি প্রবীণা,
অনোর সাহায্য বিনা, অস্তরে বিধল কে ।
অপৰূপা এ ভামিনী, রণমাঝে বিহারিণী,
সামান্যা নহে রমণী, ভাবে চন্দ্র জানিল কে ॥ (৪৩)

রাগিণী সুরট সলার। তাল জলদ্তেতালা। कालकरभ हन्द्र-(ज्याजि, जीमा अथह (कामला। वल एक (मरथर्ছ काथा, कालर्ड এड छेड्ड्रना॥ অসি মুণ্ড শক্ত পক্ষে, বরাভয় ভক্তে রক্ষে, मडी हरस श्वामी वरक, शम मिरस कुलवाला। माउँराम जग्रकती, माटेजः मक अजकती, निर्ख्या मख्या दहित, देथिया इहेद्स प्रथमा ॥ निर्वाम भागारन वाम, निर्वामा कत या वाम, ভক্তে আশ শত্রু ত্রাস, কঠিন কোথা সরলা। ञ्चना (परथ मा ७८क, मक (परथ जा्रयूरक, শক দুষ্টে ৰুধিরাকে, সাধক পকে নির্মালা॥ অকায়ে আকারাশ্বিতা, দিতিতনয়ে গবিতা, সাধকেতে রূপান্থিতা, অবলা হয়ে প্রবলা। जाज़ना प्रतुक পरक, कब्रुगा माधक तरक, একেই विভाব লকে, কুটিলা কভু সরলা। क् वृक्षित्व তव मात्रा, मखना निर्छन कात्रा, চ क्र भिद्र भिष्ठाया, पिह् গো भिथेत्रवाला॥

রাগিণী সধুমৎ নারক। তাল একতালা।
খ্যামবর্ণা এ কামিনী, উজ্জ্বলা-সম দামিনী।
লোল জিহ্বা ভয়ঙ্করী, কিন্তু ৰূপেতে মোহিনী ॥
ভীমবেশে সাউহাসে, সাধক ছুঃখ বিনাশে,
জান না কে এ আভাষে, এ বালা কার ভামিনী।
রুধিরাক্ত কাল দেহ, দোসর নাহিক কেহ,
রণে না করে সন্দেহ, শত্রুমধ্যে একাকিনী॥
অবলম্ব মাত্র অসি, ভীষণা মহাৰূপনী,
নির্ভয়ে রণে প্রবেশি, বিচরে রণ রঙ্গিণী।
নাশিতে দলুজ কুল, ত্রাসিত নহে ব্যাকুল,
স্থি করিতে নির্ম্নল, প্রতিজ্ঞা তব ভারিণী॥
জেনেছি তব উদ্দেশ, শত্রু করিতে নিংশেষ,
ধরেছ এমন বেশ, চক্রশেখর গেহিনী॥
(৪৫)

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল একতালা।
স্বেশ তাজিয়ে শ্রামা, বিকট বেশ কেন করিলে।
পট্টায়র তাজি কেন, ময়ুজ কর পরিলে।
অমূল্য হার রাখিয়ে, পরেছ মুগু গাঁথিয়ে,
কবরী মুক্ত করিয়ে, ওলোকেশে কেন এলে।
শেখরে ছিলে ছিকর, রণে দেখি চতুষ্কর,
স্থা মুর্ভি ভয়য়য়, অসি নুমুগু ধরিলে।
মগুর তোমার রব, ভীম রব কি সম্ভব,
পান করিয়ে আসব, শিব বক্ষে পদ দিলে।
তাজিয়ে মণি কুগুল, পরেছ শিশু যুগল,
কুলদায়িনী বায়কুল, নিজ মাহাম্মা তাজিলে।
কুম্কুম আদি চন্দন, কেন করিলে বর্জন,

ক্ষণির করি লেপন, রণ বেশেতে সাজিলে।
পতি দেখ বিদ্যমানে, পিতা মাতা বর্ত্তমানে,
কি ভাবে আইলে রণে, কি যুক্তি মনে বুঝিলে।
ত্যজিয়ে রম্য ভবনে, কি কারণে এ শ্মশানে,
কি বিধানে কি সাধনে, একাকিনী প্রবেশিলে।
যড়ানন গজানন, মাতা বিনা উচাটন,
মায়ের কঠিন মন, পুল্ল ছয়ে কি ভুলিলে॥
ছিলে গৌরী হলে শ্রামা, কে জানিবে এ মহিমা,
তোমার রপ অসীমা, চন্দ্র-জ্যোতি পদতলে॥
(৪৬)

রাগিণী খায়াজ। তাল কওয়াল। শक्षत क्रमग्न हातिनी, नृकारे श्रामा डेलिकिनी। क्षिताक कटलवता, यन डेमामिनी॥ মহারণে মোহিতা, পদ বিচলিতা, कर्प महिक्छा, धात निनामिनी। নুমুণ্ড স্থােভিতা, অসি মুণ্ড কর প্লতা, করকাঞ্চি পরিহিতা, ছঙ্কার রব কারিনী। वामव वालाटम, वाछ वाछ शारम, मारेजः मारेजः जार्य, रेमजा विनामिनी। লিষিত স্থাচিকুর, পদে শোভে ভূপুর, ভীষণা ৰূপ মধুর, শিব মন হারিণী ॥ (कामल श्राम जक, (यातिनीत्रन मक, রণে কুত করে রঙ্গ, রণ বিলাসিনী। ত্রিনয়ন ঘুর্ণিত, দৈত্যগণ ভাপিত, বস্থারা কম্পিত, সহিত কমঠ ফণী॥ मश्र त्र मश्र , भ्रम् उटल मिश्र द्र,

পর শ্রামা অম্বর, হে ভব ভামিনি। মহাকাল কামিনী, কালরাত্রি ৰূপিণী, কাল ভয় বারিণী, চন্দ্র দেয়ী কলাাণী॥

(87)

রাগিণী বিভাষ। তাল পোস্তা।

শ্রামা কেন নাচ গো, মা শঙ্কর হৃদে।
জান না কি মহাদেব, পতিত যে তব পদে॥
চরণের মহাভার, কি সাধা সহে সংসার,
ভব বিনা কেবা আর, সবে সম্পদে বিপদে।
পতিত যে পতি তব, পদতলে অগৌরব,
ভোমার কি সম্ভব, এ কি যুক্তি বিসম্বদে॥
ভব যে পতিত ভবে, দৃষ্ট করি দেখ শিবে,
তুষ্ট হও চন্দ্র স্তবে, শিবে রাখ নিরাপদে॥

(84)

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদ্তেতালা।
মহারণে এলোকেশে, এলো কে সে দিগবাসে।
নির্ভয়ে রণে প্রবেশে, ঘারে রবা সাট্ট হাসে॥.
শিব দেখি মহীতলে, কমল চরণতলে,
মাতৈঃ মাতেঃ সদা বলে, আসব পান আবেশে।
কালরাত্রি স্বরূপিণী, ভীষণা মূর্ত্তি ধারিণী,
শক্রমধ্যে একাকিনী, কে জানে কিবা আভাষে॥
অহিরা যেন দামিনী, গম্ভীরা সম মেদিনী,
সামানাা নহে কামিনী, কটাক্ষে কলুষ নাশে।
বামা দৃশ্যে পাগলিনী, কিম্তু নহে উন্মাদিনী,
সর্বভূত বিধায়িনী, অসাধ্য জানা বিশেষে॥
নির্বিকারা নিরাকারা, কার্যোতে হয় সাকারা,
চক্র স্ব্র ছুঃখ হ্রা, স্থায়ী কর মা আবাসে॥

(8%)

রাগিণী বেছাগ। তাল একতালা।
নীল দামিনী এ রমণী, রণমাঝে রণবেশে।
দিগবাসে এলোকেশে, দেখি স্থিতা ক্তিবাসে।
শ্রাম বরণে ৰূপদী, চন্দ্রাননে মিফ্ট্রাসি,
ছিল্ল মুগু করে অসি, মন্তা আসব আবেশে।
শ্রামাঙ্গে রুধির শোভা, যেন চন্দ্রে কলকাভা,
চরণে স্থধংশুনিভা, কটা শোভা করবাসে।
বিরিঞ্চি বাঞ্জিত পদ, ভক্তজন স্থাসম্পদ,
চন্দ্রে কর নিরাপদ, তারিণী গো কুপাবশে।
রাগিণী ভৈরবী। তাল মুন্রী।

শ্বামবরণ নরকর বসন, মুগুমালা ভূষণ করে বামা।
শোণিত লেপনা হেরি ত্রিনয়না, দশনে রসনা অনুপ্রমা॥
আলুলায়িত কুন্তল, যুগল শিশু কুগুল,
শোভিত কর্ণ যুগল, তুমুল সংগ্রাম রমা।
এ নারী কে চতুষ্করা, মুগুাসি অভয় বরা,
ছহুক্কার রব করা, দিগবাসা মহাভীমা॥
আসব পানে আনন্দ, পদতলে সদানন্দ,
দিতিপুত্রে নিরানন্দ, সাধকের শুভকামা।
পদভরে টলমল, ধরাধর রসাতল,
কমঠ ফণী বিকল, বিশ্ব বিনাশিনী শ্বামা॥
দেখিতে শ্বামা নবীনা, কিন্তু সমরে প্রবীণা,
চন্দ্র ভুজ ত্রিনয়না, শক্তিকপা সর্কোন্তমা॥

রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল জলদ্ভেতালা। শ্বাম অঙ্গ শশি প্রভা, প্রভাবা কার কামিনী। শোণিত মিলিত অঙ্গে, যেন ঘনে সৌদামিনী॥ এলোকেশে শোভা করে, বিচ্ছিন্ন বেশে বিহরে,
সাউইসিত সমরে, দমুজ ত্রাসে কামিনী।
এ হেন নব বয়সে, রণে উল্লাসে প্রবেশে,
দেখি আসব আবেশে, কালরাত্রি স্থারুপিনী।
বিচলিত শ্রীচরণা, সদা সচকিত মনা,
চঞ্চল অসি ধারণা, এ বেশে কেন ভবানী।
শ্রীকরে বর ধারণা, ছিল্ল মুগু শোভমানা,
লোল জিহ্বা গ্রিনয়না, সঙ্গিণী সঙ্গে যোগিনী।
শঙ্কর হৃদে শঙ্করী, গুভঙ্করী ভয়ঙ্করী,
চন্দ্র প্রতি ক্ষেমন্করী, স্থাদে তুঃখ হারিণী।
ব্যাগিণী পরজ। তাল একতালা।

কমলা করালা, কালিকা কাত্যায়নী।
কাতরে করুণা কর, মহাকাল কামিনী॥
শবে শিবে তারা শ্রামা, বোড়শা তৈরবী উমা,
মাতঙ্গী কামাথা। ভীমা, কালরাত্রি স্বরূপিণী।
আনন্দময়ী বগলা, ভুবনেশ্বরী বিমলা,
সভী শক্তি দক্ষবালা, আদ্যা মহাযোগিনী॥
ব্রহ্মাণ্ড ভাণ্ড উদরা, শক্ষরী শক্ষর দারা,
স্বয়ন্তবা পরাৎপরা, মহীষাস্কর মার্দিনী।
বামা অথচ দক্ষিণা, এলোকেশী ত্রিনয়না,
ব্রহ্মময়ী স্থ ত্রিগুণা, ভদ্রকালী কপালিনী।
কামদে ভক্তে মোক্ষদে, বিপদে রক্ষ সম্পদে,
চক্রে স্থাদে শুভদে, অভয়া কুলকুগুলিনী॥

রাগিণী সিন্ধু কাপি। ভাল পোস্তা। স্থামা সামান্যা নয়, স্থামা ভত্ত কেবা জানে। বিবসনে মহারণে, নারী হয়ে কি কারণে। (00)

কেন করকাঞ্চী পরি, কেন করে অসি করি,
কেন শিবে পদ ধরি, গৌরাঙ্গী শ্রামবরণে।
কেন এলো করি কেশ, কেন আসবে আবেশ,
কেন এ বিকট বেশ, কেন রসনা দশনে।
কেন গলে মুগুমালা, কেন বা এত চঞ্চলা,
কেন বা এত বিহ্বলা, দিভিস্তুত সন্ধি।নে।
ছিনয়নে ত্রিনয়ন, কেন করেছ ধারণ,
কেন দস্তুজ ছেদন, নাচিছ রণ অঙ্গনে।
নারীর এ নছে কর্মা, সন্তীর এ নছে ধর্মা,
চল্র জ্ঞাত শ্রামা মর্মা, সন্তাণা কার্যা সাধনে।

রাগিণী দেশ স্থান। তাল জলদ্তেতালা।
স্থপুত্র কুপুত্র হৌক, মাতার সমান স্থেই।
শ্রামা তোমার পুত্র মধ্যে, আমি কি মা নহি কেই।
পুত্রের যে আব্দার, মাতার সহা নহে ভার,
ভবে কেন ভিরস্কার, এ দেখে হয় সন্দেই।
ভনয় অবাধ্য হলে, মাতা নাহি দেয় ঠেলে,
বরং ধরে রাখে কোলে, কখন নহে অস্কেই।
ভোমার ভনয় হই, জানি না মা ভোমা বই,
ভবে কেন ভিল্ল রই, চত্রে সদা কফ দেই।
(৫৫)

রাগিণী আড়ানা বাহার। তাল জলদ্তেতালা।
বিষয় কুপেতে শ্রামা, করেছ মাতঃ পতিত।
বিবেক অবলয় বিনা, কিসে হই উদ্ধারিত।
সদা উপার্জ্জনে মন, ধনে হয়ে অচেতন,
না করি তব সাধন, আশয়ে হয়ে মোহিত।
শ্রামার সাধনা শ্রেষ্ঠ, মায়া মোহে করে ভ্রেট,

ধন মদে সব নক, না বুঝিয়ে হিতাহিত।
সাধনা চরম গতি, ধন জন্য ছিল্ল মতি,
লোভে নাহি অব্যাহতি, মন বুঝে না বিহিত।
লোভের গভীর খাদ, পতিতে হবে প্রমাদ,
তথাপি সে পরমাদ, কভু না করে গণিত।
সেবিতে শ্রামা চরণ, বাসনা যে সর্বক্ষণ,
ধনে করে আকর্ষণ, সাধনা করে রহিত।
ধন সংগ্রহে অভ্যাস, য়ত পাই তত আশ,
লোভে করে পুণ্য নাশ, হয়ে ধৈর্য্য বিচলিত।
আর কেন তুঃখ পাই, হেলায় কেন হারাই,
চল্র শ্রামার দোহাই, কর মা যথা উচিত।
রাগিণী খারাজ। তাল কওয়ালি।

नील नीत्रम वत्रत्य, क्र भाष्ट त्या।
विवस्त जिनश्राम, भवक्षेत्र भिवास्त ॥
अमा ছिन्न सूख्यात्म, इरश्र्ष्ट भाष्टिक गत्म,
व्याध्वचर्म क्रिक्टिल, श्र्यकाली महत्य।
हीशीम्म भाष्ट भिरत, क्रिश्वाक कर्णवर्द्व,
म्बूष्ट्व भाष्टा कर्द्व, त्रमना ध्रि मभरन ॥
स्वाविमा। जाता सूर्वि, श्रमात मश्मात शूर्वि,
क्रिष्ट हर्ष्ट छान सूर्वि, निर्वमन श्रीम्त्रत्य ॥

(69)

রাগিণী বিভাষ। তাল জলদ্তেতালা। কি কারণে ওগো শ্রামা, হইলে কঠিন। তোমা বিনা ভক্তের কিসে, যাইবে তুর্দিন॥ সতত মন চঞ্চল, সাধনার নাহি বল, তব চরণ সম্বল, ক্বান্ত ষাহে মেধীন। বিষয়ে বাস্ত সতত, অর্চনায় অন্য সত,
আশা লোতে হই রত, এমত মানস ক্ষীণ।
ধনের একপ শক্তি, নাশ করে দৃঢ় ভক্তি,
সময়ে হয় অভক্তি, মায়া মোহে অর্কাচীন।
সঞ্চয় কিসে হইবে, ধনবান সবে কবে,
উপার্জনে মন রবে, আকাজ্জা মহা স্বাধীন।
বিষয়ের লালসায়, সাধন সময় যায়,
পতিত ঘোর মায়ায়, বুদ্ধিরন্তি অতিহীন।
আশা অতিবলবতী, করে তাহে ছিল্লমতি,
নাহি তাহে অবাাহতি, আশা জানিবে প্রবীন।
মায়াময় এ সংসার, কেমনে হব উদ্ধার,
অভয়ে কর নিস্তার, চক্র পদান্ত্রিত দীন।

(eb)

রাগিণী হারট মলার। তাল একতালা। করে করি অসি, রণে এলোকেশী, ষোড়শী কপসী, কে বিহরে। করবাসা অট্টহাসা, গ্রীবা শোভে মুগুহারে॥ ছিন্ন মুগু কেশপ্রতা, শ্রী অঙ্গে রুধিরাইতা, কাল ভীষণা আরুতা, কম্পিত ধরা হুল্গারে। ঘোরদন্তা ত্রিনয়না, রক্তাক্ত লোল রসনা, নারী হয়ে বিবসনা, একাকিনী শবোপরে॥ দেখি রণ ভয়য়র, পদে পতিত শক্ষর, বুঝিতে চন্দ্র হুম্বর, এ বামা কেন সমরে॥

((()

রাগিণী হাগির। তাল জলদ্ভেতালা। আমার তামস মন, কুপা করি কৃপাময়ী, কর গো তম থওন॥ সাধনার নাহি বল, তুরা চরণ সম্বল,
মন মধ্যে ঐ বল, করো না শ্রামা বর্জন।
স্বভাব দেখি বিক্তি, মূঢ় সমান প্রকৃতি,
তব সাধনেতে রতী, নাহি হয় কদাচন ॥
পুণ্য না করি সংগ্রহ, মানস মহাবিগ্রহ,
তব পূজাতে আগ্রহ, কুগ্রহ করে ছেদন।
পাপেতে ভরিল কায়া, ঘেরিল আসিয়া মায়া,
শ্রামা যদি কর দয়া, বিশ্বক্ত ভব বন্ধন॥
সদা ধন লোভে বশ, ধর্মা সাধনে অলস,
চক্র মানস অবশ, ভরসা মাত্র চরণ॥

(30)

রাগিণী খাষাজ। তাল একতালা।

আসব পানে বিবসনে, কেন শুনা এলো রণে।
এলোকেশ করি, করে অসি ধরি, ছঙ্কার রব সঘনে।
এ কি দেখি অসম্ভব, চরণে পতিত ভব,
গভীর ভীষণ রব, শঙ্কা নাহি হয় মনে।
রুধির শোভিত অঙ্গ, প্রমথ ব্যাপিত সঙ্গ,
রণে কত করে রঙ্গা, রসনা ধরি দশনে।
ছিন্ন করবাস শোভা, বরণ অষুদ প্রভা,
কালবর্ণে চন্দ্রনিভা, শোভমানা ত্রিনয়নে।
দৃশ্যে অতীব ভীষণা, কিন্তু ৰূপে অতুলনা,
চল্র হৃদেয়ে ধারণা, কর শ্রামা শ্রীচরণে।

রাগিণী বিাঝুটা। তাল একতালা।

শঙ্কর উরে বিহরে, শ্রামা শঙ্করী। এলোকেশে দিগবাদে, ৰূপ অভিভয়ন্করী॥ আসবে হয়ে আবেশ, ভয়ের নাহিক লেশ, ভীষণ করিয়ে বেশ, অথচ যে শুভঙ্করী।
এ যে নবীন বয়সে, এ মহারণে প্রবেশে,
অক্রেশে দমুজ নাশে, ভক্তজনে প্রিয়ঙ্করী॥
লোভ জন্য মোহবশে, জঘনা মানস আশে,
পতিত চক্র কলুবে, ক্ষমা কর ক্ষেমন্করী॥

(७२)

त्रिश्ती ख्रवे महात। তाल जलम्ट्डिला।

वर्ग काल करत जाल, क्लम এला वामा क।

ध्रक्ति विकृष्ठि प्रिथ, जाक्रि द्वित्रमा काल

लश्ममाना এलाक्लमा, मिशश्रती हिन्नदिणा,
जामर्व हरत्र जादिणा, प्यात पूर्वि जीमा क।

काल यामिनी किलिगी, ममरत क्ल এकाकिनी,
भक्क जश्र ध्रमाश्रिनी, कताला मख्मा कि॥

फाकिनी यागिनी मर्झ, त्रगाझ्रद्म नाट्य तर्झ,
जान्द्रमा नाष्ट्र का ज्ञल्म, हेशत ज्ञेलमा क।

ममरन त्रमा प्राणि, कृषित श्रामास्त्र व्याणि,

व वामात जल्लभी, प्राथह ज्ञेलमा क।

नाती हर्स এला तर्म, जाला कित ज्ञिज्वरन,
ज्ञ हन्म माज जारन, श्रतमा व श्रामा का

(७७)

রাগিণী ইমন গৌরী। তাল একতালা।
এলো রণে বিবসনে, ঘোরা শ্রামা অউহাসে।
টলিত এ ভব দলিত দানব, আসব পান আবেশে।
নর কর কৃত বাসা, মৃত শিশু কর্ণভূষা,
অমরে অমৃত ভাষা, কর্ণা অমুরে নাশে।
শোণিত শ্রী অঙ্গে শোভা, মিলিত তড়িত প্রভা,
দলিত অঞ্জননিভা, তুর্লভা ৰূপে প্রকাশে।

সহজে বালা নবীনা, প্রবলা রণে প্রবীনা, করালা মহা স্বাধীনা, অবলা ভীষণ ভাষে। জাজিয়ে রঞ্জিত বেশ, কুঞ্জিত মোচিত কেশ, কিঞ্জিত না হয় ক্লেশ, সঞ্জিত রণ অভ্যাসে॥ সম্পদ মহাবিপদ, রাজ্যপদ বিসম্বদ, শ্যামাপদ শ্রেষ্ঠ পদ, আম্পদ চন্দ্র মানসে॥

(38')

वाशिशी विভाष। जान कनम् दिजाना। এ যে শ্রামা শ্রামবর্ণা, কিন্তু শ্রামা শ্রামা নয়। দেখিতে শ্রামা এ বামা, শ্রামবর্ণে জ্যোতির্ময়॥ बीत्शोताको शित्रिवाला, ठन्म मम ममुब्जुला, দর্পণ সম সচ্ছলা, ছায়াৰূপ খ্যামা কয়। কভু গৌর কভু পাঁত, নীল কভু বা অসিত, কভু ধূম বা লোহিত, ভীষণা শোভিতা হয়॥ मवादम वा फिशवादम, श्रामादन कञ्च ञावादम, कञ्ज निष्ठे अप्रेशास्त्र, अनाधा कता निर्गत्र। कथन भिटवत वाटम, कथन वा तदा खरम, ध वामात कान कारम, क कारन उथा निन्ध्य ॥ माकावा कि निवाकावा, मवला कि जशकवा, धीता कि व्यथोता धाता, कि जात्न कि जात्व त्र । कञ् मृष्ठ मिछ बागी, कथन कर्कण श्रानि, कथन मह मांअनौ, कञ्च র ए क द त क स ॥ कजू क्रमा कजू खुना, कथन এका बछना, স্থির। কখন উতলা, কভু স্ফি কভু লুয়। षिनश्रना जिनश्रना, শ्वामना मिश्हामना, कथन मुख ভূषना, ইচ্ছाময়ौ कि आभग्र॥

कथन रिष्ठा शक्षन, कथन प्रित दक्षन, চন্দ্র বিপদ ভঞ্জন, শুঙামা জীচরণ দয়॥

(20)

व्राणिनी भव्यवमा। जान जनम् एउ जाना। क्नि भागा जञ्जभगा, এ जीमा विभ करत्र ह। পদাননে স্থদর্শনে, দশনে জিহ্বা ধরেছ॥ कवती ছिल वक्षन, कतिएल (कन भाइन, তাজিয়ে হার ভূষণ, নুমুগুমালা পরেছ। (क्न जाजिएन वमन, नत्र क्त्र विधात्रण, দেখি শ্যামা তিনয়ন, শিবের রুঝি হরেছ॥ শেখরে তব আবাস, শাুশানে কেন ম। বাস, নারী হয়ে নাহি ত্রাস, একা আসিতে পেরেছ। কেয়ুর তাড় কঙ্কন, ভূষণ করি বর্জ্জন, षांत्र क्ताल धात्रन, मञ्जूषनाटन भारत्ह ॥ শিব নিন্দা ক্লেশকর, তাজে ছিলে কলেবর, मिश्रे भिदि भिद्र भित्र, भिष्ठ छिक विश्वदिष्ठ। ছिলে গৌরী শুভঙ্করী, হলে শ্রামা ভয়ক্ষরী, त्रक काश्राद्य मःश्राद्य, পाभौगरणद्य उद्यह ॥ পঙ্গুরে লজ্যাও গিরি, কারে কর অধিকারী, मकिल रेष्ठा তোমারি, চল্রে কেন না হেরেছ। (৬৬) রাগিণী বেহাগ। তাল জলদ্ভেতালা।

कालिकलि धात।

कि भूरण পाইव, ও মা চরণ তোর॥ সংসার স্থা বাসনা, সদা থাকি অন্যমনা, নাহি করি, উপাসনা, কাল নিশি হয় ভোর।, ধন লোভে মন্ত মন, যেমন মন্ত বারণ,
নাহি মানে নিবারণ, চল্র কুমানস মোর।
রাগিনী খায়াজ। তাল একতালা।

শক্তি ভক্তি যুক্তি কর, মুক্তি উক্তি তন্ত্রসার।
চণ্ড মুগু খণ্ডকরী, পাষণ্ড দণ্ড সংহার॥
দশ বিধ স্বরূপিণী, পঞ্চ বিধ প্রস্কার।
ষড় রিপু নিস্তারিণী, একা বিবিধ প্রকার।
দক্ষকন্যা গিরিকন্যা, সভী ধন্যা গৌরী ধন্যা,
সদা সদাশিব মান্যা, মান্যা গণ্যা ত্রিসংসার॥
ত্বং ত্রিগুণা ত্রাণকর্ত্রী, জ্ঞানরূপা জ্ঞানদাত্রী,
স্থাদা মোক্ষদা পাত্রী, কুলদে কর নিস্তার।
নির্ভূণা ত্বং গুণাজ্রিকা, পরমা পরমাজ্মিকা,
সাধক জন সাধিকা, সকলি তব প্রচার॥
যে পদ চল্রদেখরে, যত্নে হৃদে রক্ষা করে,
সে পদ চল্রদেখরে, কেন মা অনধিকার॥

(46)

রাগিণী মুল্ডানী। তাল জলদ্তেতালা।
শ্রামা শিব মনোরমা, শক্তি মুক্তি প্রদায়িনী।
করালা সর্ব্যঙ্গলা, মঙ্গলো ভব তারিণী।
যোগাদ্যা স্থং ঘোগমায়া, সগুণ নির্প্তণ কায়া,
সভয় ভক্তে অভয়া, সাধক ভয় বারিণী।
উমা ধুমা গিরিবালা, কালী ভৈরবী কমলা,
গৌরী পার্বেতী বিমলা, দক্ষ যজ্ঞ বিনাশিনী।
উত্রচণ্ডা কালরাত্রী, আদ্যাশক্তি জগদ্ধাত্রী,
ভক্তে স্থখ মোক্ষদাত্রী, পাপহন্ত্রী কাত্যায়নী।
জগত প্রস্থ মের্কিশা, তুরদৃষ্ট তমো নাশা,

অधिन जन जत्रमा, जाहि या कछ नामिनी । प्राप्ता मकन धर्मा, ज्याका मकन कर्मा, पुर हि तक ह जन्म मंग्री, भाज्य महासिनी।

ब्रांगिनी वियुष्टी। তाल (পाञ्चा।

(생৯)

कात काभिनी, अटला त्रदा विवमता। धात भाष्म कदत खक्त, विकि प्रभारत॥ त्रप धकाकिनी, ष्यांत्र विधातिनी, नुमुख मालिनी, भवामत्न। वामव जादवरम, जाडे जाडे शारम, मारेजः मारेजः जारम, ऐलिज চরণে॥ क्षित्र श्राम जाइ, नाट त्र त्र त्र, नाहि जूक जदम, जय कदत भरन। यदनत উल्लादम, मञ्जूष विनादम, জগজন ত্রাসে, হুস্কার সঘনে॥ करत मुख जिनि, वशदन विष्णो, शृष्ठ शृष्ठ शामि, कदाल वम्दन। कथन हो ९कात, कथन इक्रात, कञ्च मात्र मात्र, क्यूतिष्ट मघरन॥ ममत मश्रत, পদে দিগয়র, চन्দ वाका धत्र, याख मा **जव**रन ॥

রে, যাও মা ভবনে॥ (৭০) রাগিণী হামির। তাল কওয়ালি ঠেকা।

ভবু তারিণী কালিকা, কাতাায়নী।
আদ্যা মহাবিদ্যা, তমোবিনাশিনী॥
অপরাজিতা শোভিতা, তুঃখ নিবারিণী,
ভব প্রস্তা অসিতা, কপ বিধারিণী।

(><)

মোক্ষদা সং হি অন্নদা, অসুদ বরণী,
সর্বস্থাদা বরদা, কুল প্রদায়িনী ॥
ত্বং হি যোগাদ্যা বিদ্যা, করাল কামিনী,
স্থামা বামা উমা ধুমা, শিব সোহাগিনী।
জগদ্ধাত্রী মোক্ষদাত্রী, তারা ত্রিনয়নী,
গুণাতীতা বিশ্বমাতা, সতী দাক্ষায়ণী ॥
রাজেশ্বরী শুভঙ্করী, পরমা যোগিনী,
সর্বমঙ্গলা বিমলা, গণেশ্ব জননী।
তারা সারা নিরাকারা, সত্য সনাতনী,
শক্ষর মোহিনী, চন্দ্র দেয়ী নিস্তারিণী॥

(45)

রাগিণী সিন্ধা তাল পোতা।

आभात मत्न कालि किन्छ काली, मना वितारक अन्छता।
मत्नित कालि काऐत्व काली, काली नात्मरू अविता।
नात्म काली उत्पा नामा, अविता करत विकान,
काल आत्ना करत निमा, काल उ काल मश्हारत।
काली यात ऋत्न तथ्न, उक्कृल करत ऋत्म्य,
काली कच्च काल नय़, कालय उत्पा निवारत॥
मत्नित काली निक्न श्वर्य, काली यानि तथि मत्न,
कालि काली निक्न श्वर्य, काली कालि नाम करत।
शायर अपत्र मत्न कालि, मायरकत मत्न काली,
जाहे काली जाल विला, कालि काली नात्म हरत॥
मत्नित कालि कि यात्व, मत्न काली कि तहित्व,
विस्त कालि कि यात्व, मत्न काली कि तहित्व,
विस्त काली शाहेरव, जिल्लावार आजा छरता॥
(१२)

রাগিণী স্থরট মলার। তাল কওয়ালি। এ বামা দেখিতে শ্রামা, শ্রামবর্ণেতে রূপদী। कथाय्याज यत्न कान, किन्छ कानी कानभनी॥ कालय এত निर्माल, कालय करत छेड्डल, क काथा (मरथरह वन, कान अञा काननाभी। काली महाकाल-काया, काली नाम कालक्या, काली विপर्त अख्या, जारे काली जालवाशी॥ नाटम काली काल नय, काली नाटम काल जय, काली जल्ज পরিচয়, জানে শিব অবিনাশী। काली नादम ऋत्थं द्रश, काली ज्ङ भाक इश, काली काली यिवा कय़, जात द्यान वातानती॥ काल ভয়েতে ব্যাকুল, ভব সাগরে আকুল, कालो यि (पे उक्त, निक छा । भाभ नामी। शुक्तिमाशिनी प्रत्मका, काली कित्रण तोका, তারণ তরি কালিকা, শঙ্কর জায়া ষেড়েশী॥ পুত कल ज मन्भ्रम्, मद्द क्र निर्वाभम, थ अभव विश्वान, हन्त अरे जिलायो॥

(93)

(98)

রাগিনী বিরুটো। তাল একতালা।
চণ্ডমুণ্ড থণ্ড কারিনী, কালী মুণ্ড মালিকা।
পাষণ্ড দণ্ড বিধায়িনী, উগ্রচণ্ডা কালিকা॥
লণ্ড ভণ্ড দৈত্যতাপা, দোর্দণ্ড মহাপ্রতাপা,
অথণ্ড মণ্ডলকাপা, থণ্ড চন্দ্র ভালিকা।
ভণ্ড জন দর্পরিষ্টা, মার্ভণ্ড সমান দৃষ্টা,
যণ্ড জনের অনিষ্টা, পণ্ড শ্রন্ধা জালিকা॥
ব্রন্ধাণ্ড ভাণ্ড উদরা, প্রন্ত প্রতাপপরা,
প্রকাণ্ড শত্রু সংহরা, দীন চন্দ্র পালিকা॥

রাগিনী সারক। তাল একতালা।
ভীষণা শিব ভামিনী, চতুর্বর্গ বিধায়িনী।
বীক্ষরপিণী ঘোর নিনাদিনী, রণে দেখি উলক্ষিনী॥
লোল রসনা ঘোর দশনা, শবাসনা ত্রিনয়নী,
সাউহাসা আবাসাবাসা, নীল নীরদ বরণী।
স্মাশনে মশনে স্থান, পরিধান কর কিন্ধিণী,
রুধির আরতা করে অসিপ্পতা, বিক্লতা যেন উন্মাদিনী॥
উগ্রচণ্ডা চামুণ্ডা, প্রচণ্ডা মহাযোগিনী,
ভীক্ষু ক্ষকণা শত্রু হননা, চণ্ডিকা দৈতা দলনী।
দীর্ঘকারা ভয়ক্ষরা, টলিত ধরা সহিত ফণী,
মুক্ত চিকুরা হ্রারে অধীরা, রণ বিহরা কাদ্যিনী॥
নবীনা ললনা সমরে প্রবীণা, স্বাধীনা শিব মোহিনী,
অস্থদে মোফেদে কমেদে কুমুদে, শুভদে চক্র নারায়ণী॥ (৭৫)

वाशिनी विভाष। जान कनम् एउ जाना।

कि कांत्रण विवमत्म, तमना ममत्म धता ॥

कि कांत्रण विष्ठत्म, भागात्म मिथ व्यक्ति ॥

कि कांत्रण श्रीमत्वरम, कि कांत्रण वेरणा करम,

कि कांत्रण कि উर्फरम, कि कांत्रण श्रीता।

कि कांत्रण व्यक्ति, कि कांत्रण घण व्यक्ति।

कि कांत्रण विष्ठ वार्छ, कि कांत्रण घण व्यक्ति।

कि कांत्रण विष्ठ वार्छ, कि कांत्रण भूछ कत्नी ॥

कि कांत्रण कत-वाम, कि कांत्रण खांक्र वाम,

कि कांत्रण माह वाम, कि कांत्रण दिम श्रीता।

कि कांत्रण मधुभारम, कि कांत्रण विमय्न,

कि कांत्रण भूभारम, कि कांत्रण कव धता॥

कि कांत्रण भूभारम, कि कांत्रण कव धता॥

कि कांत्रण भूभारम, कि कांत्रण कव धता॥

कि कांत्रण क्रि व्यक्त, कि कांत्रण कुछ मरम,

কি কারণে নাচ রঙ্গে, কি কারণে এ সত্তরা।
কি কারণে মুগুছার, কি কারণে এ আচার,
কি কারণে মার মার, কি কারণে মা কঠোরা॥
কি কারণে শত্রু মধ্যে, কি কারণে এলে যুদ্ধে,
কি কারণে গো বিশুদ্ধে, কি কারণে ভয়ঙ্করা।
কি কারণে এত ক্রোধ, কি কারণে প্রতিযোধ,
কি কারণে অনুরোধ, কি কারণে বোধহরা॥
কি কারণে কিবা মনে, কি কারণে ত্রং সাকারা॥ (৭৬)

ताणिनी तिशाण । जान कनम्द्रिजाना।
कानी वरन कान यिन, काणि जि मक्रम हरे।
जित कानवाम हर्ज, कानी नारम मुक दरे।
कानी नाम त्यरे यादा, कान जर्म नाहि करत,
कानी कन्य मश्हरत, क्वा जार्ह कानी वरे।
कानी नाम याद माद, कारनद कि अधिकाद,
कानी कदित निष्ठाद, कारनद अधीन नरे।
कानी जिल कानी वरन, कानी नाम शुन वरन,
जानी जिल कानी वरन, कानी नाम शुन वरन,
जानी प्रति धूर्ल कारन, जनामारम ह्व करे।
कानी माराष्मा यज, माध्यक कारन जज,
जारे हम्म अविद्रज, कानी कानी मना करे।

(99)

রাগিনী সুরট মলার। তাল জলদ্তেতালা।
শবাসনে বিবসনে, মহারণে কার বামা।
স্থানে ঘোর নিস্থানে, ত্রিনয়নে রূপ ভীসা॥
অঞ্জন যথা দলিত, উড়িত সহ মিলিত,
সৌষ্ঠব তথা ললিত, উজ্জুল অথচ শ্রামা।

কুঞ্জিত লয়িত কেশ, রঞ্জিত ত্যজিয়ে বেশ,
লুঠিত পদে মহেশ, লাপ্তিত ৰূপে চন্দ্রমা॥
শোভিতা নুমুগুহারে, ক্যোভিতা নহে সমরে,
অভীতা বিরাজ করে, ভাষিতা অসীম সীমা।
আরুতি বিকট ঘোরা, বিরুতা সঙ্কটপরা,
ধৃত মুগুা অসি করা, রুধির-আর্তা রমা॥
মানস মহা অধম, তামস বাসনা মম,
স্থাবিকাশ চন্দ্রসম, প্রকাশ করুণা উমা॥

(97)

রাগিণী মুলত,নী। তাল ধিমাতেতালা।

যার হৃদে আছে ব্রহ্মময়ী, তাহার কিবা সাধন।

ক্রিকান্তিকে ভাব শ্রামা, বিকল সব পূজন॥
জপ তপ যাগ যতঃ, যে করে সে শ্রামা অজঃ,
কালী মম সর্ব্ব যতঃ, ভাব কালী শ্রীচরণ।
কালী পদ ভাবে যেবা, তার কাল ভয় কিবা,
মনে কর শ্রামা সেবা, আর কিরে আকিঞ্চন॥
যেই জন শ্রামা ধনে, ভক্তিভাবে নাহি জানে,
কি ফল তার সাধনে, আড়েয়র বিউয়ন।
ব্রত করা উপবাসী, কিবা ফল একাদশী,
মন মধ্যে এলো কেশী, সকল ফল কারণ॥
হৃদে রাথ শ্রামা ভক্তি, চক্র হৃদে যথা শক্তি,
অনায়ানে হবে মুক্তি, অকাটা শিব বচন॥

(49)

রাগিণী জয়অয়ন্তী। তাল একতালা।

কাদিখিনী এ কামিনী, দামিনী স্মান শোভা। কার ভামিনী শত্রনাশিনী, মোহিনী অসীমপ্রভা। লিখিত স্থকেশপাশ, তাজিয়ে স্থবেশ বাস, আগ্রিতা শাশান বাস, রঞ্জিতা স্থাংশু নিভা।
বিকটা অস্থর পক্ষে, সঙ্কটা পাষণ্ডে লক্ষে,
প্রকটা সাধক বক্ষে, ত্রিপুটা শঙ্কর লভা॥
ঘোরা শুভৰপা রামা, তারা অনুপমা বামা,
স্থৰপা স্থৰপা শ্রামা, রূপা ৰূপা চক্র লোভা॥

(bo)

রাগিণীরট মলার। তাল জলদ্তেতালা।
দামিনী দমন ৰূপা, বর্ণ অঞ্জন দলিতা।
কামিনী কোমলা দর্পা, স্থাংশু সম ললিতা।
কজল সমান শুমা, উজ্জ্ব যেন চন্দ্রিমা,
স্বচ্ছ স্থাদর্পণ সমা, জাজ্জ্বা ৰূপ শোভিতা।
চরণে কাম দাহন, বসনে করি বর্জ্জন,
দশনে জিহ্বা ধারণ, রণে দমুজ দলিতা।
কমনীয়া স্থাতিমা, রমণীয়া মূর্ত্তি উমা,
শোভনীয়া ৰূপা বামা, জিয়া শোভে অনিদিতা।
অন্থিরা সমর মধ্যে, অধীরা শক্ত বিরুদ্ধে,
ঘোরাকারা মহাকুদ্ধে, অপরা করবালিতা।
দেবেন্দ্র সদা সেবিতা, চন্দ্র তপন পুজিতা,

(>>)

রাণিণী জয়জয়য়ী। তাল একতালা।
শ্বামা উমা ধুমা বামা, প্রতিমা বর্ণনাতীতা।
চণ্ড মুণ্ড দণ্ড খণ্ড, প্রচণ্ড প্রতাপান্বিতা॥
তারা মারা নিরাকারা, মহাঘোরা রূপান্বিতা,
স্থারা অধীরা ধীরা, পরপেরাজিতান্বিতা।
নবীনা প্রবাণা ক্ষীণা, ভীষণা ভূষণান্বিতা,
তাড়না দৈত্য হ্ননা, ছেদনা খং খড়গান্বিতা॥

युर भूनी क जाताधिका, बीहक (मशी विक्ठा।

কামিনী কাল ভামিনী, সৌদামিনী লজ্জান্থিতা।
ভবানী সৰ্বা সৰ্বাণী, মোহিনী মহেশান্থিতা।
কালিকা দক্ষ বালিকা, মালিকা নুমুণ্ডান্থিতা,
দান্তিকা অহা অন্থিকা, পালিকা শোভনান্থিতা।
অকায়া সকায়া জায়া, ত্বং হি মায়া ছায়ান্থিতা,
কুরু দয়া ভো অভয়া, ত্বং হি চক্রে কুপান্থিতা।
বাগিণী মলার। তাল একতালা।

শ্বামবর্ণে জ্যোতি, শশি সম ত্যুতি, এলোকেশ।
বাড়েশী যুবতী, আরুতি বিকৃতি, ছিল্ল বেশ।
বসনবর্জ্জিতা রুধিরে আরুতা, সমরে গর্জিতা অনিমেষ,
ঘুর্ণিতলোচনা পূর্ণিত কামনা, তুর্নীত তাড়না সবিশেষ।
ভীমা শবাসনা দশনে রসনা, নুকর-বসনা নাহি ক্লেশ,
গলে মুণ্ডহার ভীষণ হুস্কার, কল্পিত সংসার সহশ্যে॥
ছিল্ল মুণ্ডকরা তীক্ষ্ণ অসিধরা, অভয় সবরা শ্রীবিশেষ,
পদতলে ভব নারী অসম্ভব, দেবে করে স্তব্য সম্পরেশ।
সাধকসেবিতা শিব আরোধিতা, জগৎপালিতা ভীমবেশ,
কাপ ভয়কর সম্বর সকরে, চক্র শুভকর রুপালেশ। (৮৩)

রাগিণী সুরট মলার। তাল জলদ্তেতালা।
সঙ্কট সকল কাটে, কালী নাম যে রটে মুখে।
কালী কলুষনাশিনী, সাধকে রাখেন সুখে॥
গ্রামা ভক্ত যেই জন, শমন করে দমন,
এই ত তন্ত্র লিখন, তারিণী বিপদে রাখে।
কালী ঋদ্ধি কালী বুদ্ধি, একাগ্রতা চিক্ত দিং,
ভক্তিভাবে জ্ঞান রিদ্ধি, পতিত না হয় সুংখে॥
কালী কালী যেই কয়, কালী কাল করে ক্ষয়,
চন্দ্র তব্ কিবা ভয়, কালীপদ হৃদে রেখে॥

(88)

য়াগিণী ভৈরবী। তাল জলদ্তেতালা।
শ্বামাধনে কেবা জানে, যেবা জানে সেই পুরে।
ভক্তিভাবে যেই ভাবে, দে কাল চুংখ এড়ার॥
দূঢ় ভক্তি করি মনে, ঐকান্তিক ভজ মনে,
সমাধি করি সাধনে, ঘুচাও যমের দার।
মনে ভক্তি না থাকিলে, কেবল শ্বামা বলিলে,
ভক্ষেতে ঘৃত ঢালিলে, যেমন ফল রখায়॥
শ্বামারে রাখিয়া হ্লদে, ভাব সদা শ্বামাপদে,
মোক্ষ পাবে নিরাপদে, না ঘটিবে যম দার।
শ্বামা বামা মহামারা, নির্ভাগ সন্তুণা কারা,
দরাময়ী করে দয়া, কার্যোতে অকার কার॥
শ্বামা প্রতি রাখ ভক্তি, বিশ্ব করে কার শক্তি,
অনারাদে পাবে মুক্তি, চক্তের শ্বামা সহায়॥

वाणिनी देखवरी। जाल कलम्दङ्खाला।

কালী বল দিবানিশি, কিবা কায গঙ্গা কাশী।
ব্রহ্মপদ তুচ্ছ তার, যার হৃদে এলোকেশী॥
কালী মাহাত্মা এমন, কলুষ করে দমন,
ব্যাসিত হয় শমন, নামে পাপ যায় ধংসি।
শ্রামাকে দেখ যেমন, কাল নহেন তেমন,
দামিনী ক্লজ্জিতা হন, বর্ণ অকলঙ্ক শশী॥
যেই জানে শ্রামা গুণ, দেই সাধক নিপুণ,
অজ্ঞানে ক্লহে দারুণ, আছুর ত্রামসরাশি।
সাকার কি নিরাকার, চিন্ময়ীর কি বিকার,
কেবা জানে তথা তাঁর, তথাচ মূর্জি প্রকাশি॥

ত্তিভূবন প্রস্বিনী, ব্রহ্মায়ী সনাত্নী,
কণ্পিত ৰূপ ধারিনী, চন্দ্র সাধক সম্ভোষী।
র গিণী বেহাগ। তাল জলস্ততালা।

গিরিবালা গৌরী শ্রামা, গীর্ম্বাণী মহাষোগিনীং।
বোগমায়া মহাবিদ্যা, সর্বাণীং ঘোর কপিণীং।
দক্ষপ্রতা শিবশক্তি, ভামিনী দৈতানাশিনীং,
অগৎপ্রস্থ ত্রিনয়নী, কামিনী কাল বারিণীং।
অগজাত্রী জগল্লয়া, মৃজানী চপ্ত ঘাতিনীং,
অয়ালিকা পরাৎপরা, ভবানী ভয়হারিণীং।
তারা সারা উগ্রহপ্তা, ঈশানী ভবমোহিনীং,
কভোয়নী যোগমায়া, শিবানী বিক্ষাবাদিনীং।
মুক্তকেশী ভদ্রকালী, শ্রাশানী অট্টহাদিনীং,
কর কাঞ্চী লোলজিহ্বা, হননী মুপ্তমালিনীং।
নিরাকারা স্থ সাকারা, শোভনী কপ ধারিণীং,
ভো ভো মাতং, চল্র ক্লেশহারিণী মোক্ষদায়িনীং। (৮৭)

दांशिशी यहां द्रांशिशी यहां दांशिशी यहां द्रांशिशी यहां द्राशी यहां द्रांशिशी यहां द्राशिशी यहां द्रांशिशी यहां

দেখ কলিকাল এল, মন ভূমি নাহি এল, ভাব কালী শ্বামা শ্রীচরণ।
সম্মুখে ভোমার কাল, ভাব মন পরকাল,
ভারা সারা জপ মম মন॥
ঐশ্বামাত্র ভাবনা, আপন শেষ ভাব না,
পরে কোথা হইবে গমন।
সময় হয় অভীত, শ্যামা সাধনা ব্যতীত,
শক্তি ভক্তি মুক্তির কারণ॥
হিম শেখর বাসিনী, ভুগা ভুগতিনাশিনী,

ष्यामग्राक्या कत् ह (मक्या । भिवक्षि विद्यातिनी, ध्याव क्रिमहातिनी, भीन एक्ष (मग्री निद्यमन ।

(66)

রাগিণী স্থরট মলার। তাল জলদ্তেতালা।
কালী করাল বদনাং, কালরাত্রি স্থরূপিণীং।
ছোরাং বিক ট দশনাং, দক্ষজ্ঞ বিনাশিনীং॥
চতুষ্করাং মুক্তকেশীং, দিখাসাং মুগুমালিনীং,
ক্রিনয়নাং লোলজিন্থাং, ভীকাং ভীমনাদিনীং।
রুধিরাক্ত কলেবরাং, করকাঞ্চী নিভ্যমনীং,
শস্তুলিস্থিতাং দেবীং, শ্মাশানালয়বাসিনীং॥
বরাভয়করাং শ্থামাং, অসমুগু বিধারিণীং,
প্রভালীচ জীচরণাং, বোড়শীং মহাঘোগিনীং।
মৃতশিশু কর্ণপুরাং, অস্তরগণ মার্দ্দিনীং,
আদারেপাং শিবশক্তিং, মাতক্রৈলোকা বিদ্দিনীং।
মহামেঘপ্রভাং রৌদ্রাং, সৃষ্টি সংহারকারিণীং,
বন্দে দেবীং মহাকালীং, চন্দ্র সন্তাপহারিণীং॥ (৮৯)

রাগিণী বেহাগ। তাল একতালা। ধোড়শী ৰূপদী এ কে, এলোকেশী কালশণী।

ভালি বাসে দিগবাসে, শক্তনাশে করে অসি॥ ক্রিনয়না শবাসনা, ভয়মানা কালনিশি, ভীমাকারা মহাছোরা, চভুষ্ণরা বর্ণ মদী। চওদও মুওখও, লওভও তেজোরাশি, এ ভামিনী উন্থাদিনী, একাকিনী রণে পশি॥ ঘোরভাষা ছিন্নবেশা, অউহাসা এলোকেশী,

थूनाहीन हक् मीन, अंकि कोश जाताणि॥

(20)

রাগিণী পরজ। তাল একতালা।
যোগাদাা যোগমায়া চ, দক্ষমজ্ঞ বিনাশিনীং।
চামুণ্ডা উপ্রচণ্ডা চ, চণ্ডমুণ্ড বিঘাতিনীং।
অনিতা অপরাজিতা, পঞ্চাশৎ বর্ণ কপিণীং,
ঈশ্বরী ভুবনেশ্বরী, দেবী কৈলাসবাসিনীং।
দৈতা গর্ম থর্ম কৃতা, মহিষাস্ত্রর তাপিনীং,
যশোদা গর্ভ সম্ভূতা, বিস্থাচল নিবাসিনীং।
শঙ্কর হৃদয়ন্থিতা, অস্ত্রমুণ্ডমালিনীং,
শবাসনা বিবসনা, শুমো কুলকুণ্ডলিনীং।
শোণিত প্লাবিত দেহ, ভৈরবী ভীমনাদিনীং,
কুঞ্জিত স্থদীর্ঘকেশা, ঘোরবেশা চ ভামিনীং।
মহামায়া শিবজায়া, ত্রিজগৎ নিন্ডারিণীং,
চন্দ্র দীন পুণাহীন, কুপয়া পাপবারিণীং।

(%)

রাগিনী বেছাগ। তাল একতালা।
এলোকৈশা দিগবাসা, কে ও বামা জিনয়না।
মাট্ট ভাষা অট্ট হাসা, কে ও শুমা শবাসনা॥
অস্ত্রগণ নাশিনী, দেবী শুমানবাসিনী,
কেও রক্তাক্ত ভীষণা।
দল্লগণ দলিতা, মন্তক হার দোলিতা,
দশনে ধূভা রসনা॥
চতুর্জা কালশশী, বরাভয় মুও অসি,
দামিনী কাপ দমনা।
রণে মহাগর্জনীয়া, শক্ত প্রতি ভর্জনীয়া,
কামিনী ঘোর দর্শনা॥
আরতি মহাবিক্তি, প্রকৃতি মহাস্কৃতি,

সমরে শক্ত হননা।
মধুর হাস্য বদনে, সূপুর শোভে চরণে,
অধীরা রণে মগনা॥
দেবভাগণ বন্দিনী, মহিষাস্থর মর্দিনী,
ভারিণী ভব অঙ্গনা।
শ্ণু মাতঃ রূপাময়ি, দীন চন্দ্র দীনাদেয়ী,
উভয়ে কুরু করুণা॥

(\$\xi)

त्रांशिशी (वहांश। जांन धकजाना। ष्यिनकता खरूकता, सहाय्याता खेळापिनो। व्यथीता निष्ठताशता, विकिटाकाता माञ्चनी ॥ (घात मगना, त्लाल तमना, শবাসনা जिनस्नी; ह्रात जीवना, भव लिहाना, व्यञ्ज इनना, श्रामानी। ভুবন দাহিতা, কর পরিহিতা, नयन (लाहिका जवानी ; ৰুধির আহতা, করে মুগুধ্তা, শক্ত হত কতা, ভামিনী॥ অট্ট হাসিতা, কর্কশ ভাষিতা, সমরে রোষিতা, নাদিনী; মুওহারান্বিতা, ভব-বক্ষান্বিতা, त्रगणकात्रिका, (माहिनी। (कण विश्वालिडा, मःमान प्रालिडा, लायगा ललिखा, कामिनी; সমরে আয়তা, পামরে কোভিতা,

स्मारत (णाजिजा, जननी।
यामिनी किंगिनी পाणान जाणिनी,
जगजवाणिनी, (माहिनी;
माध्य (वाधिनी, जन्मा अमाधिनी,
हिन्स स्मार्का (मिनी, जन्मा अमाधिनी,

(24)

রাগিণী বেহাগ। তাল একতালা।
এ কাল কামিনী, কাল কামিনী, কাল বারিণী।
জগৎ জননী, দৈত্য হননী; জগজারিণী ॥
গিরিবরস্থতা ব্রহ্মাণ্ড প্রস্থতা, ত্বং হি শিবানী;
মাতঃ ক্ষেমকরী সর্বস্থেভক্ষরী, সর্বেশা ভবানী।
শুভে সানন্দিতা দেবতা বন্দিতা, যোগাদা। যোগিনী;
সাধক স্থাদে দমুজ তুঃখাদে, শিব সোহাগিনী ॥
মূর্ত্তি উত্রচণ্ডা ভীষণা চামুণ্ডা, অধিকা ঈশানী;
ত্রিপ্রণাতীতা নির্লিপ্সা অভীতা, ভীমা শ্রাশানী।
শিব ব্হ্বান্থিতা স্থামা শোভান্থিতা, সমরে গামিনী;
চল্রে সদরা কুরু মাতর্দিরা, ভব ভাসিনী॥

वाशिगी (वर्गा। जान कमम् जाना।

শঙ্কর উরে, শ্রামা বিহরে, উলঙ্গিনী।
বিমুক্ত কেশ, বিচ্ছিন্ন বেশ, উন্মাদিনী।
রক্তে আর্তা, ভীমা আরুতা, প্রচারিণী;
শশী শেখরা, রণে প্রথরা, নিনাদিনী।
আসব পানে, আনন্দ মনে, বিহারিণী;
বুর্ণ লোচনে, অন্তর্রগণে, প্রহারিণী।
রুষ্ঠ ভাষিতা, শত্রু ত্রাসিতা, বিধারিনী;
অঞ্জন নিভা, চিক্নন প্রভা, কাদ্যিনী।

मुखमालिका, জগৎ পাलिका, श्वकिंगी; न्कत वाम, भाषात्व वाम, निखातिगी। भिव পেरिनी, भद्रव भिवानी, मनाजनी; इत विभन, हज्ज मण्यम, श्रमाशिनी।

(D¢).

রাগিণী সিন্ধুকাফি। তাল একতালা।

श्रामा आमात नाट का, मटन माट्य।

प्रत्य कि माधा उत, महिङ विद्यादय॥

नाह थीद्र थीद्र, जत व्यक्ताभद्र, नीव अञ्चद्राद्य।

उत्ता भवामना, ममद्र वामना, विकास अवाद्य॥

अवव भक्तती, हम् क्रमक्रती, मर्ख अभवाद्य॥

(১৬)

রাগিণী সিম্বুকাফি। তাল একতালা।

भक्षत्र त्मिक्ती श्रामा, এলো ममद्र এলোকেশে ममद्र।

बिजू वन खूशमाना, खूशमाना ज्ञमद्र ॥

इश्चित क्रवादम, ज्ञानव जाद्य मार्गिका क्रियंत।

न्मू खमानिनी, भागि कलानिनी, भागिक ज्यद्र ॥

लान तमना, एवात मगना, जीवन ह्काद्र।

लान तमना, एवात मगना, जीवन ह्काद्र।

लान क्रामा, भागान ज्ञानादम, निर्द्ध विरुद्ध।

श्वामन कामिनी, क्रिकन मामिनी, मस्क भीरुद्ध॥

लाव मगनी, माधक लानिनी, क्रिला ज्ञानाद्ध।

कानिका माधना, हळ ज्ञात्राधना, स्रमात मः माद्र॥

(৯৭)

द्रांशिशी (बङ्गा। जाम धक्जामा।

जामव जादवरण, त्रंभ दक् श्रादिण, मिशेवारम এक्।किनी। मञ्ज विनारण, ममस्त विनारम,

खथकारण वद्राननी॥ मारेजः मारेजः जारम, माधरक উलारम. শक जारम जिनस्नी; नव-कव-वादम, व्रश्व बादम, क्छ जार्य निनामिनी। षालुशिङ किटम, षाक्षा छेटमटम, व्यविनारम कीमाशिनी; क्लाधभन्नवादम, भूछर्म्ब् द्वादय, भक (दिस डिवामिनी। निश्वाम श्रशादम, मन मिक नादन, रेम डाखारम काम बनी; किया অভिলाद्य, वल कि উद्भद्भ, ছিন্নবেশে পাগলিনী। यदनत इतिएय, मयदत विकारण, व्यक्षेद्राय नावाश्यी; ठक कुमान्दम, लाज जिनाद्य, क्वा नाटम निखातिगी॥

(24)

রাগিণী ইনন্কলাণ। তাল জলদ্তেতালা।
করণাময়ী তারিণী, ছুর্গা ছুর্গতিনাশিনী।
চপ্তমুপ্ত বিঘাতিনী, মহিষাস্থরমর্দিনী।
ক্রিজগত বিস্তারিণী, ভক্তপণ নিস্তারিণী,
অস্থরগণ হননী; পাষপ্ত জন দলনী;
শ্রীবিদ্যা মহাযোগিনী, অমিকা মুপ্তমালিনী,
গোরী গিরিজা গীর্জাণী, কমলা কাল কামিণী।
বিব্রা শ্রাম বরণী, কালরাত্রি স্ক্পিণী,

স্বান্তবা সনাতনী, সর্বাহ্মী কাত্যায়নী;
থড্গ করা কপালিনী, প্রথরা মুগু ধারিণী,
ভীমা রুধিরাঙ্গমোভনী, বিচ্ছিন্ন করকিছিনী;
ত্বং হি নিখিল জননী, শঙ্কুর মনমোহিনী,
লোল জিহ্বা ত্রিনয়নী, শুন্তু নিশুন্তু ঘাতিনী।
বিমুক্ত দীর্ঘ কেশিনী, অট্ট অট্ট হাস্থাননী,
বর্ণ স্থামল দামিনী, শিবহুদ্দি বিহারিণী;
শৈলজা শিবে শিবানী, অন্নপূর্ণা দাক্ষারণী:
সিন্ধবিদ্যা নারায়ণী, সাধক মোক্ষদায়িনী।
ত্রী পুল্ল সহ নন্দিনী, প্রণব ক্লেশ বারিণী।
কুরু রূপা নিরঞ্জনী, চন্দ্র ত্রিতাপহারিণী।

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল একতালা।

নীল সৌদামিনী, সমরে কামিনী, শবশিবাসনা।
আসি বিধারিণী, নুমুগুমালিনী, রণে বিবসনা ॥
মানস স্থারা, স্বকার্যো অধীরা, বিলোল রসনা;
ভীমা চতুল্বরা, ভীষণ আকারা, কর্কণ ভাষণা।
বিগলিত কেশা, ছিল্ল ভিল্ল বেশা, দশনে রসনা;
অস্তরে গঞ্জিত, অমরে রঞ্জিত, সমরে তোষণা।
ঘোর নিনাদিনী, শত্রু প্রমাদিনী, পাষণ্ডে ভীষণা;
আরতি বিকৃতি, প্রকৃতি স্কৃতি, সাধকে ভূষণা।
শঙ্কর মোহিতে, শঙ্কর মহিতে, অনুত বসনা;
তাহি মাত্রুর্ত্বর্গ, তাহি উপসর্গে, চন্দ্র উপাসনা। (২০০)

बाणिनी न्य थावाक। जान वर। कानी जाता महाविषा।, (वाएमी जूनत्मत्री। टेफत्रनी हिममन्डा, विष्णा धूमानजीयत्री। तिक विमा ह वर्गना, माजकी ज्या कमना, नडीक्षा ज्य मकना, हस्य खंख मार्थिती। (১০১)

व्राणिनी देवन्कनाम । ভान अकडाना।

मक्यनिम्ती, (भाक्यमात्रिमी, काजात्रिमी वत्रम।
काल कामिनी, वीक काणिनी, जिनत्रमी अज्ञात ।
भिव मीमजिनी, भाषण जनमी, कृथ निवादिणी स्थाप ;
मर्वविधात्रिमी, भाषणात्रिणी, भिष्ट भिवानी अञ्चरम ।
रेमठाणाजिमी, मह्यद्याधिमी, महक जाकिनी अञ्चरम ;
भिष्ट नादात्रिणी, अहज मर्वानी, आमा जवामी कामरम ।
निजा मनाजनी, जीवना जामिनी, जनजजादिणी ख्वानरम ;
महिवमर्किनी, क्छेड्।दिणी, जव विम्तनी क्षप्रम ।
रमथद्रवामिनी, जव स्माहाभिनी, नरभक्य-मिम्नी कुमूरम ;
मक्षे जक्षनी, कक्ष नादात्रिणी,

রাগিনী খাষাজ। তাল একতালা।

শঙ্রী শঙ্কর, শুভঙ্করী শুভঙ্কর, ভমোনাশিনী, হর কামিনী, পতিতে রূপা কর। দামিনী কপিনী, কালবারিনী, তারিনী ভবসাগর; নিরাকারা, পরাৎপ্রা, খোরা মহাত্রুংথ হর। যোগাদ্যা আরাধ্যা শুদ্ধা, বর্ণন স্বত্ত্ত্ত্বর; মহামায়া শিবজায়া, দয়াস্কুরু সম্বর! পাপপূর্ণিত, মতি ঘূর্ণিত, কম্পিত কলেবর; দেহি মে উমে, মুক্তি আহি মে, নাশ ক্লেশ জঠঃ ব্রহ্মাণ্ড উদরা, পাষ্প্ত সংহরা, নিবস্তি শেখর; নুমায়ি শ্রিপদে, সম্পাদে বিপদে, চন্দ্র অভিকাতর! রাগিণী বাহার। তাল কওয়ালি ঠেকা।
কালীং করালবদনাং, কালরাত্রি অবপেণীং।
ঘোরাং বিকট দশনাং, দক্ষযজ্ঞ বিনাশিনীং।
চতুক্ষরাং মুক্তকেশীং, দিখালাং মুগুমালিনীং।
ত্রেনয়নাং লোলজিহ্বাং, ভীবণাং ভীমনাদিনীং।
ক্রেমিরাক্ত কলেবরাং, করকাঞ্চী নিভিছ্নীং;
শল্প ক্লি ছিভাং চণ্ডীং, শ্মশানালয় বাসিনীং।
বরাভয় করাং শ্মামাং, অসি মুগু বিধারিণীং;
প্রভালীচ প্রীচরণাং, কোড়শীং মহাঘোগিনীং।
মৃত শিশু রূপ্রাং, জন্মরগণ মর্দ্দিনীং;
আদ্যোরপাং শিব শক্তিং, মাতবৈলোক্য বন্দিনীং।
মহামেঘ প্রভাং রৌদ্রাং, ক্রিসংহারকারিণীং;
বন্দে দেবীং মহাকালীং, চন্দ্র সন্তাপহারিণীং।
(১০৪)

ज्वानीविषय ।

बाशिनी श्राया । তाम कखग्रामि।

महती जव प्रःथ वातिनी, माथक (मविजा णिव माहाजिनी। ष्ट्र हि मरमात्रमात्रा, नित्राकात माकात्रा, पुर हि जिल्लियां, मुक्ति क्षपासिनी । प्रः हि षायुश्वणा, प्रः हि विश्ववाशा, प्र हि माण्डः स्वला, व्यक्त विशी। महामञी षाधाना।, পতিরতা षाভिधना।, पुर हि माजः नर्यमाना।, शिविवाख-निम्नी ॥ मिय श्री बाद्राधिकां, व्यथिनक्षन श्रञ्जा. ত্রিজগত কার্য্রিতা, তং হি মহাযোগনী। व्यक्तिज्ञा प्रमका, मर्ख विधासिका, क्रका (खर्क नाशिका, प्रश्रि প्रमाणनी ॥ पुर्व भ्रतादभ्रता, अश्वती मात्रादमाता, पुर कि अभाषाता, पुर हि विश्व अनमी। पुः हि व्यनिन्दिना, पुः हि व्यानिन्छ।, पुर हि कशं उ विक्ठा, जमानक माशिनी ॥ वका खगट खानता, जज्रा जयता, पुः हि माजः जिश्वा, पुः हि छ स विमिनी॥

রাগিণী বাহার। তাল কওয়ালি ঠেকা। না, সঙ্কটে সঙ্কটভারিণী, বিপদে বিপদ উদ্ধারিণী। পাপীর পাপহারিণী, ভত্তে ভক্তি প্রদারিণী। তুগে চুর্গতি নাশিনী, ভয়ার্ছে ভয় বারিণী,

(>)

मूर्ण भूण्य थेखनी, यु कि क्लाक्खिलनी।
कालिका काल कामिनी, खवार्गद निखातिनी,
छात्रिर्छ श्रम छत्रनी, कामाथा। कामातिनी।
श्रमा श्रमायानी, वत्रमा वत्रदर्गिनी,
स्माछ सन सननी, मर्खिमा खंडा मर्खानी।
यक्ष्मा विश्वक्षिमी, जिख्ना यु जिनसनी।
विज्ञाश्रण छात्रिनी, चर्छ ब्याद्ध विधासिनी।
द्यानमात्रा यु द्यानिनी, निख्ना यु खंनीव्रमी,
हत्राहत ब्यहातिनी, देएडा गर्ख विनामिनी।
महामिव नीमछिनी, नाती ख्व्छं। नातास्नी,
छेमा धूमा काछा सनी, हत्य मीनख सननी।

রাগিণী জয়ড়য়তী। তাল ঝাপতাল।
পিতৃ যজ্ঞ দেখিতে, বাসনা মনে পশুপতি।
সানুকুল হয়ে নাথ, বিদারে দাও অনুমতি।
প্রতিবাসী কি ভাবিবে, ভগিনীরা কি বলিবে,
পরে পরে কত কবে, ছাখী হবেন প্রস্থতি।
স্থাগের যত দেবতা, যজ্ঞে হবে অধিষ্ঠাতা,
সবে তথা উপনীতা, এ ঘটা দেখিতে মতি।
যজ্ঞেখরে নিমন্ত্রণ, পিতা করিয়ে বর্জ্জন,
যজ্ঞ করিতে মনন, দক্ষ হয়েছেন ব্রতী।
যজ্ঞ হলে সমাধান, হবে তব অপমান,
বিষ্ক করিতে বিধান, ষাইব তথা সম্প্রতি।
মম পিতা অহংকারী, ভোমারে অমান্য করি,
আানিব যক্ত সংহারি, শুনিবে দক্ষের গতি।
নারদের মুখে শুনি, পিতার অভীক জানি,

কহিব স্থহিত বাণী, কিন্তু জনক জুর্মান্ত।
তোমারে করি নিন্দ্র, বলেছের জুবচন,
দেখিবে সেই বদন, হইবে ছাগ আফুতি।
বিপক্ষ জনে তোমার, রক্ষা করে মাধা কার,
বিপক্ষ পিতা আমার, মুদ্ দক্ষ প্রজাপতি।
সে উরসে এই দেহ, তাতে মম নাহি স্নেহ,
চক্রে ভব সঙ্গে দেহ, দেহ তাজিবেন সতী।

(0)

वानिने विভायः। তान कलम्टिण्ना।

যাও গিরিরাজ ওহে, আন প্রাণের ভগবতী।
তিন দিনের জন্যে বলো, পঞ্চাননে করি স্তৃতি ॥
মাতার প্রাণের স্থুখ, দেখিলে অপত্য মুখ,
কহিও মনের চুংখ, আমার এই ভারতী।
এমন নয় যে পাঠাব না, জিন দিন বৈ রাখিব না,
লপথ করি কহিও না, যদি করেন অনুমতি ॥
সেত যোগী থাকে খানে, মায়ের স্নেহ নাহি জানে,
বলো ভাহে যাহে মানে, জুশেষ করি আরতি।
ভূষিয়ে সে খূলপাণি, ভূষ্ট কর কন্যা আনি,
অসম্ভব্টে কিবা জানি, পাছে না পাঠান সভী॥
যদি কন্যা স্থুখে রয়, তবু মাতা স্থির নয়,
এতে চন্দ্র ভূষ্ট হয়, সভী স্ত্রীর পতি গতি॥

,.(8)

রাগিণী নলার। ভাল কওয়ালির ঠেক।।
ভালে করে এলোকেশী, এলোকেশ বাঁথেরেঁ
ভারের প্রলালী মেরে, দোলায় হেলে জুলিয়ে॥
সাধের মেয়ে ঘরে এলো, ঘর আমার আলো হলো,
ভাপিত মন জুড়াল, চাঁদ মুখ হেরিয়ে।

धक्यां क कर्ना, भारेश र्याष्ट्र धना, रगोत्रीत या वरण यामा, मरव बरण थणशमरत्र। পাড়াপড়সি সকলে, निनिद्ध कछ ना बंदल, डियादा नाहि जानित्व, महाश्वात मम्द्र। कदत्र कछ ভিत्रकात, शिक्षि शाठाई वात्र वात्र, তাতেই শিব একে আর, বলেছে কত ভৎ সিয়ে। कड ना मिनडि करत्र, अप्यक्ति मा ভোৱে घरत्र, षात्र (पथि ठक्ष्छद्र, थाक मा काटन विमर्त्र। পাঠাইয়া ভোর বাপে, এনেছি মা কোন ৰূপে, পাছে वा जामाई काल्य, काँ शिर्डाइ এ जाविएस ॥ একে ত সে তিপুরারি, পাঠাতে তিপুলধারী, তবু শিবে তুফ করি, এনেছি কভ কহিয়ে। जिन मिन देव थाकिटव ना, वर्मदन जात्र जामिटव ना, मारয়त्र প্রাণ যুড়াবে না, ক দিন ভোরে দেখিয়ে॥ य्यमन एडमन क्र्यू, जिन मिन थाक घरत्र, छल बदल अब भटन, भोबी भागव बुवादस । (c)

রাগিনী দেশ মলার। তাল জলদ্তেতালা।
পঞ্মী গেল ষতী এলো, না এলো প্রাণের গৌরী।
ত্বরা করি যাও গিরি, জান তুমি ত্রিপুরারি।
শীঘ্র গিরে কহ শিবে, শিবানী কবে জানিবে,
বিচ্ছেদ তুঃখ নাশিবে, সে চম্রবদন হেরি।
বোধনের জায়োজন, প্রস্তুত দেখ এখন,
খুনা দেখি এ ভবন, ধৈরষ কেমনে ধরি।
শিবের কি কব রীত, ভিনি ভ মারা বর্জিত,
মারের মূন তাপিত, জানে কি সে ত্রিপুরারি।

উমা পাঠাইতে চিত, না হইবে কদাচিত,
আন ত জামাতা রীত, সেই ভেবে ভেবে মরি।
যেন তেন প্রকারেতে; যদি হে পার আনিতে,
চতুর্থ দিন প্রভাতে, পাঠার শিব শঙ্করী।
যথোচিত করি তব, তুবিয়ে শঙ্কর তব,
আমার কথা কয়ে সব, রুই না হন তুই করি।
তিলেক বিচ্ছেদে যার, শিব হয় শবাকার,
চন্দ্র লহ এই ভার, হও গিরি সমিভ্যারি।

श्रीशिशी बात्स्य। डाम कम्प्रडाम। भारत्रत्र क्षां । यङ काँ त्मि, किवा कानित्व ज्ञान्तर । जुमि উমার জন্মদাতা, আমি রেখেছি জঠরে। একমাত্র কনা৷ যার, সে বিনা কি স্থা তার, मव (मिथ অञ्चकात, शोती ना आहेटन घटत। একে ভ ভূমি পাষাণ, কন্যা প্রতি নাহি টান, या ७ मिव मिन्रान, कहित्व ध मब छात्र ॥ षामात छुःथं कहिएस, कट्शं भिरव तुवाहेएस, **छिमादित जान जुविद्य, मानाहेद्य कर्हाधद्य।** व्यमद्य यक्र (यमना, व्यञ्जि विना जादन ना, षात्र नारे छेमा विना, मा बदल ए दक मश्मादत । खव कथा खनिदव ना, यमि भोती भागादि ना, তবে ত প্রাণ রবে না, মরিব উমারে স্মরে। निट्यं (अट्यं काशा, উमा जेन माशा काशा, णागात এक उनशां, क्छ त्वर् इटङ्शात्त्र । माज् मज मन र्दन, भागारेख कुष्र्टन, **এ** त्रवादश वत्न, जानं श छेत्र। मद्दत्।

মায়ার কারণে যোগী, শিব নহে সায়া ত্যাগী, মন মায়ার প্রতিযোগী, অবশু হইতে পারে। স্থির হও গিরি রাণী, শিবে কহে মিফ বাণী, চন্দ্র উমা দিবে আনি, এখনি ভোমার পুরে।

(9)

काणिक विकास। जाम कमम्राज्यामा।
काणिक कामाज्ञ वाली, जानी मत्न পाई वाथा।
ना পाठारव निव निवा, याउशामाज्ञ इरव वृथा।
कच्च नयन अग्रद्धत, जव काया नाहि करत,
रम कि পाठाइरव मृद्धत, जामाज्ञ कथारज ह्था।
रमोजीमाज्ञ এक क्छान, रमोजी यारम यामधान,
रमोजी जांज्ञ मम व्यान, পाठारज भारत कि काथा।
मम वाका जहिरच ना, निव निवा भाठारव ना,
जममान महिरव ना, विज्ञ मा यादेव छथा।
भार्वजी मक्षत मक्षि, এই ছলে कर्द्ध क्रिंक,
भाठारज इरव विज्ञ क्रिंक, धृक्किंगित कानि व्यथा।
प्रदेश हर्मा माय, बन कि कृति जेनाय,

 (\mathbf{r})

রাগিণী ইনন্ কলাগে। তাল জলদ্তেতালা।
প্রাণ উমা আনিলাম ঘরে, দেখ দেখ ওহে রাণি;
অবতীর্ণ পূর্ণ শশী, গৃহে তাজিরে অম্বরে।
দিগমর ভয়ক্ষর, তুবিতে তারে ছক্ষর,
অতিকফুে স্মরহর, দিল বিদায় উমারে।
গৌরীরে বিদায় করি, চক্ষে ঝরে মোহবারি,
জামাতার মুখ হেরি, তুঃখ হইল অন্তরে।
গৌরী শিব প্রাণধন, শিবানী শিব জীবন,

চल यमि वटल जास, ঠেলিবে না खल कथा।

त्म छेमात जामर्भन, विष्कृष जात इत्व छादत ॥ मायाना। नटर जनसा, यरापियी यरायासा, এই জনো শিব জায়া, কভু বিচ্ছেদ না করে, यथन जामि ज्वन, किट्टनन পঞ्चानन, তিন দিনের কারণ, লয়ে যাও নিজ পুরে। পত्नीटक এতেক স্নেহ, দেখি নাই করে কেহ, গৃহিণী উচাতে গেহ, এস্থলে উপমা ধরে। मजी विद्याभ क्रिया, क्रामाजा कृष्ठिज मत्न, পाठाहेट जाती धटन, मूट्थ वाका नाहि मदत । कां माजांत स्त्रह (मिथ, हरয়िছ পরম স্থী, थना छेमा विधूम्थी, सामी रंग माहाग करत ॥ क्त वरल भिव जिकाती, कूरवत यात जाखाती; (मध्यिष्टि किलामभूती, धन तज्ज खुभाकादत। हैएथ धन नाहि गणि, खामी स्निहाधिक मानि, थना छेमा हक्ताननी, ऋथिनी मर्ख थकादत ॥ हटला अर्थे निर्वातन, खन जानी अ जाजन, (छव ना कना। कार्रा, मि य शुका जिमश्माद्र॥ (9)

मणगर्गावमग्रत गान।

काली।

রানিনী গোর সারজ। তাল ধিনাতেতালা।
কৈ ও একাকিনী, কাছার রমনী,
শালা শোভা জিনি, মসী বরণী।
দশনে রসনা ধরা, বদনে রুধিরধারা, করাল বদনী॥
এ নব বয়সী, ঘোরকাপা মুক্তকেশী, শোভে দীর্ঘবেণী;
গলে দোলে মুগুহার, কটিতটে অলঞ্চার নরকর কিঙ্কিণী।
পয়োধর পীনোলত, রুধিরধারা সন্তত, বিকটকাপিণী;
মৃত্রশিশু প্রুতিমূলে, অর্লচন্দ্র সাজে ভালে, শাশানবাসিনী॥
অসি মুগু বামকরে, দক্ষিণে অভয়বরে, রণে রণরক্ষিণী;
ভীমবেশা ভয়য়রী, ভবহুদি পদ ধরি, দক্ষিণা কাপিণী॥
চতুর্দ্দিকে শিবা ঘেরি, বিবসনা শুভঙ্করী, শিবাগণ নিনাদিনী;
মহাকালে বিপরীত, রতি বিলাস সহিত, অউ অউহাসিনী।
চল্লে দেহি এই জ্ঞান, অন্তে করি তব ধানি,
কালী ত্রিনয়নী॥

ভারা।

রাগিণী লুম থাষাজ। তাল ঠুকরী।
ভীষণ লোলরসনা, মুগুমালা বিভূষণা;
শক্ষরের ক্লিফিতা, প্রভাগলী ভীচরণা।
লয়োদরী থকাকারা, নীলবর্ণা ভয়ন্করা,
পিঙ্গবর্ণ জটাধরা, শিরে শোভে ফণি ফণা।
চতুর্জ্জা এ রমণী, কে কর্জ্ ক্লপাণপাণি,

নীলোৎপল কপালিনী, ব্যাদ্রচর্ম স্থুশোভনা; নিবেদন ভবদারা, চন্দ্র ভত্তুজ্ঞান হারা, কুপা করি হর ভারা, এ ভব যন্ত্রণা॥ (২) ষোড়শী।

ब्राधिनी युम्बर्गान। जान कम्म एकाना। ष्यপ्रकार्था (क ललना, (इति त्रङ्गात्र्कार्या। किकिनी मिन् ब्राह्ट, युक्टे मिद्रा प्या। कुं िल मीर्घ कुंखल, वाइंड मुथ्म छल, ওষ্ঠ জিত বিশ্বক্ল, প্রফুল পক্ষাননা। धसु नम का मिलिका, जिनरान सूर्णाकिका, मराखा वमनाश्विका," यशु यशुत वहना ॥ মুক্তাহার বিগলিত, নব পয়োধরাত্বিত, ञ्चर्ग कर्ग-कृषिक, मरनाइत काजत्रेग। काक्षीयुक निर्धायनी, नानर जियनी खानी, চতুর্জ বিধারিণী, রক্তাম্বর পরিধানা॥ পাশাজ্শ যুগকরে, ধনুর্বাণ শোভে পরে, (तामावली षाद्धाशदत, छेत्र कमनी जूलना। निश्र नाजि मददावद्ग, शम कमर्छ शिरुद्ध, बका विकु मदभ्यत, विक् ठात्र ठत्रा॥ গঢ় छल्क स्ट्रांडन, युद्ध नथ मीभामान, षा क्र कुम्कुम लायन, जायून शूर्ग यमना। काशमानम काननी, विश्वाकर्षण कात्रिणी, उकां ख वी जकाि भागी, जवा कुरू म वद्रा।। कतिया कद्भना शकि, केन माकः विन्यू कि, हम अहि अञ्चलि, स्वाइमी खत जलना ॥

.(0)

जूबदनश्रदी।

दांशिनी (वर्शन। खांस जसम्दक्ष्णां ।

এ কি ৰূপ হেরি আমরি মারু,
আক আভা জিনি প্রভা, প্রভাতের তমোহরী।
মিলিত হিমাংশু প্রভা, শিরে কিরীটের শোভা,
মৃত্যুক্তান্ত মনো লোভা, কিবা মাধুরি।
পাশাক্ষুণ সবা করে, অভয় বর অপরে,
চতুক্তরে শোভা করে, তিনরনা শুভঙ্করী।
বিমল ক্দয়োপরি, পানেজ্ফে, কুর্গিরি,
চন্দ্র প্র ত রূপা করি, তার গো ভুবনেশ্রী।

(8)

टेज्बवी।

वागिनी वार्नभवी। जान जनम्र जानाः

এ কি ৰূপ নয়নে করি নিরীক্ষণ,
কৈ পারে স্থৰূপ ৰূপ করিতে বর্ণন।
জিনি কোটি রবিপ্রভা, মনোহর অঙ্গ আভা,
বসন অরুণ বিভা, অতি স্থানোভন ॥
উচ্চ পীন পয়োধরে, রুধিরের ধারাধরে,
মুগুনালা শোভা করে, গলে বিভূষণ।
জপমালা এক করে, জ্ঞানমুদ্রা ধরে পরে,
দ্বিকরে অভয় বরে, করেন ধারণ॥
সহ চন্দ্রকান্ত মণি, মুকুট শিরোভূষণী,
হেন্ডেরবী ত্রিনয়নি, দেহি চল্লে বিভূষণ।

(4)

ছিন্নস্তা।

वाशिशी कमात्र। जाम भिराद्यकामा। कि अ विवनना कृषिद्र मुन्नमा क्रिक्ट्यकात्र मात्री।

कमलक गिरका शत्रि, यानिका यञ्च रहति, 'বিপরীত রতিকারী; রতিকাম ভচুপরি॥ उपूर्क विदाक्याना, প্রত্যালী ত্রীচরণা, युखयाला विভূষণা, जिनयना निवक्रती। গলে অন্থিমালা স্থিতা, মুক্তকেশ স্থাভিতা, শিরে সর্প বিভূষিতা, লোল জিহ্বা ভয়ঙ্করী॥ শিরশ্ছেদ স্বয়ং করে, বামকরতলে ধরে, শোভিত অসি অপরে, চর্মৎকার মাধুরী। ্কণ্ঠ নিৰ্গত ত্ৰিধার, ৰুধির তার একধার, স্বাধর করে আধার, ভীমৰূপা ক্ষেমকরী। उग्रेखा उनिक्रिनी, পার্ছয়ে ছিযোগিনী, শেষ विधात धातिनी, विखात वमन कति। कननी এই निद्यमन, क्रि क्रिशावटमाकन, চল্দে দিও জীচরণ, ছিলমন্তা শুভঙ্করী॥ ধুমাৰতী।

((&)

রাগিণী ঝিজুটী। তাল যৎ। বিষয়া এ কাহার নারী, চিনিতে নারি। রুক্ষবর্ণা ধুমাবতী, পয়োধর নত অতি,

कलर कतिए गाँछ, गिलना १९४ पति॥ काकश्रक तथ वाला, ऋथाजूता महश्रमा, দশনাवली वित्रला, দীর্ঘকায়া হেরি।

স্প্রামকরে ধরে, অপর সহিত বরে,

দ্বিকরে কি শোভা করে, আমরি মরি ॥

कृष्टिल नामिका नड, नय़न-काणेत शिंड, চল্লে क्रीह्रवाधिङ, क्रत शा मक्रती॥

(9)

वशना।

রাগিণী খাষাজ। তাল ধিণাতেতালা।

এ কি কাপ অপকাপ করি নিরীক্ষণ, অসাধ্য বর্ণন।
কাপের মাধুরি হেরি, জুড়ালো নয়ন॥
মণিমগুপ উপরি, রত্মবেদী শোভা করি,
বিংহাসন তত্মপরি, অতি স্থগঠন।
বিংহাসনে বিরাজিত, উজ্জ্ল বরণ পীত,
পীতাষর পরিহিত, তাহে স্থশোভম।
কিবা শোভে আভরণ, পুস্প মাল্য বিভূষণ,
স্থাক্ষি অঙ্গে লেপন, কুস্কম চন্দন।
সব্যে শক্র জিহ্বাধরি, মুদার অপরে করি,
কোধিতা হয়ে শক্ষরী, করেন তাড়ন॥
বগলা করুণা করি, চল্রে দিয়ে চরণ তরি,
পার কর ভববারি, লইলাম শরণ॥

(৮)

রাগিণী টোড়ি। তাল একতালা।
অপরপ কামিনী, নীরদবরণী, শশধুর আভা জিনি।
শশাক্ষ শোভে শিখরে, সিংহাসনাসনোপরে,
বিরাজিতা চতুষ্করে, স্বর্ণ মুকুট ধারিণী॥
থেট খড়গ বাম করে, পাশাক্ষণ দক্ষে ধরে,
চক্রে তার রূপা করে, হে মাতঙ্গী জিনয়নী॥
(৯)
কম্লা।

রাগিণী আড়ানা বাগেশ্বরী। তাল জলদ্তেতালা। এ কি ৰূপ হেরি নয়নে, বর্ণের লাবণ্য স্বত্ন্তর বর্ণনে। প্রফুল কমলাসন, তত্নপরি ক্ষত্যাসন, চপলাজিত বরণ, মৃত্হাসা চন্দাননে।
স্বালত চতুর্জ, সব্যে অভয় অমুজ,
দক্ষিণে বর সরোজ, অতি স্থাভেন।
মুক্তাহার মনোহর, শোভে পয়োধরোপর,
কমলা করণা কর, চন্দে রাখ শীচরণে।

(>0)

ত্রিপুটা।

রাজনী বারোঁয়। তাল চুক্সরী।
এ কামিনী কার কামিনী, স্থরতরুমুলে একাকিনী।
রমণীয় পারিজাত, বন-বিহারিণী॥
মণিমগুপ উপরে, রত্ন সিংহাসন বরে,
প্রফুল্ল পক্ষজান্তমে, বট্ কোণ বাসিনী।
পত্মপাশ শরাসন, পত্ম অকুশ মার্গণ,
বড্ভুজে করি ধারণ, রত্ন মোলি ত্রিনয়নী॥
রত্র মুপুর চরণে কাঞ্চী কণ্ঠ-বিভূষণে,
শোভে স্থব্ণ বরণে, বক্ষোজ নমনী।
সথি মধ্যে বিরাজিতা, চন্দের হৃদয়-স্থিতা,
ত্রিপুটা করুণান্থিতা, ভব কালান্ত কারিণী॥
(১১)

ত্বরিতা।

রাগিণী সিন্ধু ভৈরবী। তাল ঠুলরী।
্রাগানবর্ণে শোভা ধরে, কার বনিতা।
পট্ট-বস্ত্র পরিধানা, অন্ট সর্প বিভূষিতা।
দিকরে অভন্ধ করে, তাড়াঙ্গদে মনোহুরে,
কটি কাঞ্চী গুণধরে, পদে মঞ্জীর রঞ্জিতা।
ময়ুর-পিচ্ছ শিখর, তিনয়নে শোভা-কর,

भीरनाञ्च भरशाध्य, ७३ माला स्ट्रांडिडा ॥ পতিত ভব সাগন্নে, তুমি বিনা কে উদ্ধারে, চন্দ্র নিতান্ত কাতরে, ত্ররিতে তার ত্ররিতা। (><) टेठ छन्। टेख बवी।

রাগিণী থায়াজ। তাল ধিনাতেতালা। নব প্রভাকর প্রভা।

ছেরি নয়নে ভূষিতা, নানা আভরণে অনুপম শোভা ॥ শশি মুকুট মণ্ডিতা, মুক্তা বস্ত্র বর ধৃতা, পীনোন্নত কুচান্বিতা, চতুষ্ণর মনোলোভা। श्रक्त कमन करत, পानाकून (मांडा करत, मिकिन जाज्य वदत, किवा मदनाहत क्षाजा ॥ বিবিধ সংসার পাশ, চৈতনা তৈর্বী নাশ, हर्जित এই অভিলাষ, জननी इत-रल्ला ॥ (cc)

অফকুটা ভৈরবী।

वाशियो जिस् । जान कमम्द्रजामा। क कि (भावा मत्नादनावा, कवाकुस्म वर्ता। ष्यक्र वर्ग वमन, ष्य मार्ज स्ट्रांडन, सूख्याला विভूषा।। छ्वर्ग कलमवब्र, উচ্চ शीन পয়োধর, প্রভাজিত প্রভাকর, চতুদ্ধর শোভাকর, পাশাদুশ ধারণা। मिकिट्न शुखक धिन्न, अनुमाना भाजाकति, षायेकृषे। एउकती, एउमा उरणकती, हत्ज्रत वृष्ट् वामना ॥ (38)

ছুৰ্গা।

त्रांशिशी शतक। जाम थिमार्ड जा। (क ও দশভুজা রমণী, (हम वরণী। (26)

कि छोड़ि भाष्डि भिद्र, हेन्स् भोिल जिनश्नी ॥ জিতচন্দ্র চন্দ্রানন, সর্বাভরণ ভূষণ, শোভে शीरनाञ्च छन, नव योवनी। विज्ञ जित्रगाकाता, पछ १६ कि गरनाइता, मरक मृल यात्र थात्रिगी। শক্তি চাপ চক্র বাণ, করে পরশু বিধান, वाटम (थें माजमान, পाणाकूम পानि। চরণে মহিষাপ্রর, ছিল্লাপর দৈতা ক্রুর, নিরখি ক্রোধিতা ভবানী॥ भूल विमीर्ग ऋमरा, नागभाण लक्त छरा, সপাশ তৎ কেশচয়, कर्ষণ कार्त्रिगी। निश्र्य एक চরণা, দেবগণ স্থয়মানা, रिष्ठा मानव मलनी। कूर्त कूर्निक नामिनी, एक विश्वष हातिनी, गश्चिष्युत्र मिनी, नर्वकाम श्रमाशिनी।

রাগিণী পরজ। তাল ধিনাতেতালা।
প্রলয়ানল প্রবলা ভীবণা, এ কার নারী।
কালরাত্রি স্বর্গপিণী, মুগরাজ ক্ষকোপেরি॥
রক্ত নেত্র তায়ান্বিতা, অগ্নিকণা বিনির্গতা,
শত্রগণ দাহে রতা, আদিত্যমণ্ডলে হেরি।
যুগভুজা মহাঘোরা, শূল পাশান্বিত করা,
দশনে অধর ধরা, শূলে শত্রু ভেদ করি।
ভাকুটি ভীবণাননা, তুর্গে তুর্গতি হ্রণা,
পুরয় চক্র কামনা, নিবেদন শুভঙ্করী॥

(>¢)

क्र्या।

রাগিণী আলেইয়া। তাল জলদ্ভেতালা।
মৃগরাজে বিরাজে, কেও বিছ্যুত বরণা।
অইতুজা ত্রিনয়না, চক্রতুষণা ভীষণা॥
চক্রাস্থল শরাসন, অসি থেট পাশ বাণ,
তর্জনী করে ধারণ, সখীসজ্ঞা সেব্যমানা।
ছুর্গে ছুর্গতি সংহর, কিঙ্করে কটাক্ষ কর,
চক্র কলুষ নিবার, শ্রীপদে এই বাসনা॥

রাগিণী পিলু। তাল মধ্যমানের ঠেকা।
লক্ষ ভান্থ সম শোভা, সিংহোপরে কে বিরাজে।
ভুজঙ্গ ভূষিত অঙ্গ, থড়গ থেটক দিভুজে।
নয়ন ত্রয় নির্গত, অগ্নিকণা শত শত,
ত্রিভুবন ভয়ান্বিত, ভয়ন্ধর সাজে।
ব্রীচরণে নিবেদন, তুর্গে তুর্গমে শরণ,
অস্তে দিও দরশন, চল্রের হৃদি সরোজে।

उप्रकाली।

রাগিণী ঝিঝুটা খাষাজ। তাল ধিমাতেতালা।
ক্ষেবর্ণা চতুর্জুজা, এ নারী কে ভয়ক্ষরী।
পাষাণ ডমরু শূল, নুকপাল করে করি।
হিমাংশুকলা শেখরে, উর্জাপিক জটা শিরে,
শুক্ল-দন্ত ভয়ক্ষরে, ভয়ানক বেশ হেরি।
এই নিবেদন করি, চন্দ্র প্রতি রূপা করি,
ভদ্রকালী ভয় হরী, সদয়া হইও শক্ষরী।
(১৯)

जमकानी।

द्रांशिशी विভाग। जान कमम्दिकां।। महारमघ थाजा (घाता, ल्याल-किट्वा जसकती। धात-मखा नीलायती॥ वर्का ज्या भिद्र, नयन शिष्ठ का देख, धक कि। ज्लार्भ करत, अभन्न वर्ष छेलात। जुजङ भग्रदन दिना, नाभ यक देशवीना, नाश-हात सुरक्ष+िंडा,-माछ-हामा मरहामती॥ পঞ্চाশ মুগুমালিনী, নর-কুগুল ধারিণী, नवत्रज्ञ विकृषनी, भाष्ट भाष भाषत धति॥ नाश-कान्छि विভূষিতা, नाशशर्व स्ट्रविछिन, ভीষণা षिञ्जात्रिতा, বাম পার্দ্ধে ত্রিপুরারি॥ वारम जकक कक्षण, जनस मरक जूयण, नात्रमापि মুনিগণ, সেবিতা ঈশান নারী। भवाश्वामन कार्तिनी, माधकाजीक माशिनी, জগদুৎপত্তি কারিণী, তারিণী শুভঙ্করী॥ हन् अधीन निर्श्वरण, किश्विर कहे। क मारन, তার মা আপন গুণে, ভদকালী কেমস্করী। न्यानानकानी।

রাণিণী কালেজড়া। তাল একতালা।
অঞ্জনাজি প্রভা ভীমা, কেও শ্মণান-বাসিনী।
সদা শব মথা নথা, মাংস চর্বণ কারিণী।
পিঙ্গাফী রক্ত লোচনা, শুদ্ধ-মাংসাজি ভীবণা,
ঈষৎ সহাস্ত বদনা, বিমুক্ত কেশ ধারিণী।
নানালক্ষার ভূষিতা, যুগল ভুজ শোভিতা,

(20)

বামে মাংস মদ্য-ধৃতা, সদাঃকৃত্তা শব পাণি।।
চল্লের এই প্রার্থনা, তব শীচরণ বিনা,
অন্তে না হই অন্য মনা, শ্বাশানকালী সর্বাণি। (২১)
যামবতী।

রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল তিয়ট।
অসত জলদ বরণা।
হেরি চন্দ্রাননা, বিরাজে কার অঙ্গনা॥
হারাবলী পয়োধরে, চতুর্জুলে শোভাকরে,
শূল পাশাঙ্কুশ করে, কপাল ধারণা।
স্থাচিক্কণ নীলাম্বর, যামবতী শোভা কর,
চন্দ্রে অনুকল্পা কর, সতত এই বাসনা॥
(২২)
সিন্ধুত্র্গা।

রাগিণী যোগীয়া। তাল জলদ্ভেভালা।
শরচ্চন্দ্র প্রভা বামা, কেও দ্বিভুজান্বিতা।
মুখ-নির্গত অমৃত, করে পাশাঙ্কুশ-ধৃতা॥
ভব কফ এই বার, সিন্ধুত্বর্গে কর পার,
চল্দ্রে কর মা নিস্তার, ক্রপাময়ী ক্রপান্বিতা।
ত্রিপুরা-ভৈরবী।

রাগিণী খাষাজ। তাল ধিমাতেতালা।
কেও বালার্ক সহত্র বরণা।
লোহিতাক্ত পয়োধরা, লোহিত বসনা।
চতুর্জু জা ত্রিনয়নী, অভয় বর ধারিণী,
পুস্তকাক্ষমালাপাণি, সহাস্ত বদনা।
রত্নয় কিরীটিনী, স্থাকর কপালিনী,
মনুজ মুগুমালিনী, সর্বাস্কাসনা।

(₹8)

তব তত্ত্ব নাহি জানি, অনুমানি ত্বং ভবানী, তিপুরা-ভৈরবী বাণী, জপে চল্লের রসনা। নিত্যাভৈরবী।

রাগিণী সিন্ধ। তাল ধিমাতেতালা।
রক্তবর্ণা রক্তাম্বর, পরিধানা কার নারী।
ভুবন মোহন, অমুপ ৰূপ মাধুরী॥
চতুর্জ্ জা ত্রিনয়না, রক্তাভরণ ভূষণা,
অমর বন্দা চরণা, ইন্তু শোভে শিরোপরি।
পাল-পাশাঙ্কুশ করে, পূর্ণ কপাল অপরে,
রক্তাঙ্গ রাগাঙ্গোপরে, শোভিতা স্থর স্থন্দরী।
মদিরা বিহ্বলাঙ্গিনী, নিত্যাভৈরবী তারিণী,
চল্রে চরণ তরণী, অন্তে দিও গো শঙ্করী।

বজ্র-প্রস্থারিণী।

রাগিণী শারঙ্গ। তাল একতালা।
রক্তার্ণবৈ রক্তপীঠে, কেও রক্ত বরণা, ষড়ভুজ ধারণা।
দ্বাদশ দল-কমল বাসিনী, রত্ন-মোলি ত্রিনয়না॥
পাশাঙ্কুশ ধনুর্ধারিণী, দাড়িষ কপালবাণ পাণি,
অর্চ্চন্দ্র শেখরা, কুচভরা নম্রাকারা, সহাস্ত বদনা।
কুপাময়ী কুপা কর, এ ভব কফে ত্রাণ কর,
চল্রের কলুব হর, নিরস্তর—
বজ্ঞ-প্রস্তারিণী এ প্রার্থনা॥
(২৬)

জয়তুর্গা।

त्राणिनी जग्रदा। जान धिमाटज्जाना। कि नीन नीत्रम वत्रगा, भाष्ट जिनंशना। ठजूर्ज क धात्रगा, मिश्ट्शभिति वित्राक्षमाना॥ ত্রিশ্ল শস্থ রূপাণ, করে চক্র পরিধান,
নিজ তেজে দীপ্ত ত্রিভূবন।
অর্জচন্দ্র শোভা ভালে, কটাক্ষে বিপক্ষ জালে,
সদা ভয় দাত্রী বিভীষণা।
রূপা করি জয়তুর্বে, চন্দ্রে রক্ষা কর তুর্বে,
তব পদে এই প্রার্থনা।
(২৭)

রাগিণী ভৈরণী। তাল বিমাতেতালা।
নীল নীরদ বরণা, কে শোভা করে।
পাষাণ কপাল শূল, খড়গ ধরে চতুদ্ধরে॥
ভয়ঙ্করী ত্রিনয়না, পরাজিত শত্রুগণা,
তুর্গতি-ভঙ্গ-নিপুণা, অর্দ্ধ শশাঙ্ক শেখরে।
চক্রের এই নিবেদন, করি রূপাবলোকন,
থাকে যেন ভক্তি ধন, জয়তুর্গে মমান্তরে॥
(২৮)

शृंगिनी।

রাগিণী মালকোষ। তাল যং।
জলদ শ্রামবরণা কেরে, সিংহপৃষ্ঠোপরে,
শোভে অইকরে।
ছুরী শূল বাণ রূপাণ ধরে, পদ্ম গদা চাপ পাশ অপরে॥
তিনয়নে শোভমানা অর্দ্ধশশধরে,
রূপাণ খেটক অন্ত্র, চারি সখী করে।
শূলিনী কর মা রূপা, তনয় উপরে,
চল্রে এইৰূপ দেখে, নয়ন গোচরে॥
(১৯)

রাগিণী গোরী। তাল জলদতেতালা। হেমবর্ণা চতুর্ভ জা, বিরাজে কার অঙ্গনা।, দর্পণ অঞ্জন পাশ, অঙ্কুশ করে ধারণা।
সর্বালম্বার ভূষিতা, গৌরী গিরিশ বন্দিতা,
চল্রে হইও রূপান্থিতা, শ্রীচরণে এ প্রার্থনা। (৩০)
ত্রিপুরা স্থন্দরী।

রাগিণী লুম্ ঝিঝুটী। তাল যৎ।
বালার্ক-মণ্ডল প্রভা, কে বিরাজমানা।
চতুর্জা পাশাঙ্কুশ, ধনুর্বাণ ধারণা॥
ত্রী ত্রিপুরা স্থলকী, ত্রিনেত্রে ঈগণ করি,
ত্রাণ কর ভব বারি, চন্দ্রের এই বাসনা।

উচ্ছিউমাতঙ্গী।

রাগিনী লুম। তাল একতালা।
শ্রামবর্ণা কেও, বীণা বাদ্য বিনাদিনী।
মুক্ত কেশান্বিত সিত, শস্থা কুণ্ডলিনী॥
পরিধান রুক্ষায়র, বিষসম ওঠাধর,
মাণিকা পুজামালিনী, দ্বিভুক্ত ধারিণী।
বলয়াঞ্চিত চরণা, সতত স্মিত বদনা,
উচ্ছিইমাতক্ষী, ইশানী চন্দ্র নিস্তারিণী॥

মাতৃকা।

রাগিনী খট্। তাল জলদতেতালা।
পঞ্চাশদর্ণ কপিনী, বিরাজে কার রমনী।
জটাজুট শোভে শিরে. অর্জচন্দ্র মৌলিনী॥
শুদ্ধ ক্ষটিক বরণা, মুক্তা রক্স বিভূষণা,
শুদ্ধ কৌম পরিধানা, চতুর্জ ধারিনী।
কমগুলু বর করে, পুস্তকাক্ষমালা ধরে,
চন্দ্র প্রতি কুপা ভরে, মাতৃকা ভার ভারিনী॥

(৩১)

(७२)

(99)

मक्ना छ।।

রাগিণী ভৈর্ণী। তাল ডিওট। रक उ त्र प्रयामना, भोतं वत्रगा, हात्रालकात कृषणा। ब्रक्त कोट्यसं वनना, त्यात्रसूथी एउनानना ॥ দ্বিভুক্ত ধারণা, শোভমানা, বরাভয়াঘিতা বামা, ञ्चनवीन (योवना। ठार्कको मदनाइदा, मक्नल छो পन्ना ९ भदा, हम् प्रथ ह्या हु या हाता, अ जव यञ्चा महि ना (48) क्व ज्ञा

क्फिट्रें बंदे ।

त्रांशियो दिगिति टेज्त्रयी। जाम थिमार्ज्जामा। এ বালা কার বালা, অপৰূপা হেরি। ज्रुप ण्यूप किनि, वर्ष श्राक्ती॥ . ভালে অন্ধচন্দাশ্বিতা, নয়নত্রয় শোভিতা, नाना ज्या जूषिडा, तिश्हामदनाशित । শোণিত বমনাশ্বিত, মুগুহার বিভূষিত, समार्गा स्टमा जिल, किरा माध्रि । ज्ल उमक (थिएक, भाग जक्रम भुष्ठक, कुপान धनु माग्रक, जक्रमाना धनी। भाक्य एक् म खरा श्वादि का ब्रि. इस्प्रेट अब दी भाक्यों, हम् अंडि क्षा क्रि. ज्य अंडक्री॥ (50)

षद्भभूग।

.द्राभिनी विद्युणि। जाम थिगारज्जामा। ष्मभक्षभ कात वामा, त्रुष्टायत भतिथाना। 'अर्कि ज (भाजा भिद्र, लाहिज वर्गा। (59)

भारताथत छारत नडा, जन धानान-नित्रछा, व्य नर्जन हर्षिडा, भःभात छः थ इत्रणा। कित स्भावत्याकन, कत कर्छ निवात्रण, जन्नभूर्ण निर्वेशन, हरस्य इत्र रवसना । जन्नभूर्णभूती।

ં (૭૭)

(29)

রাগিণী ঝিরুটা। ভাল জলদ্ভেডালা। ভপ্ত-কাঞ্চন বরণা, কার বালা বিরাজিতা। নবীন শশি শেষরে, রম্ম মুকুট অন্থিতা। চিত্র বস্ত্র পরিধানা, সকরাক্ষী ত্রিলোচনা,

चन्न क्रमान निश्ना, निष्ठ प्र (मथनाध्या। स्वर्ग क्रमाकात्र, शीरनाम्न भरताध्य,

भाषिक समरमाश्रम, मानम मूथ भाषिक। ॥ भाषोत्र ममरम्भ, श्रश्न-यक्ष्म जिल्लाहन,

नीनकर्भ हाखानन, किन्न क्रमासुद्रका। काट्य भाष्टि जिभुत्रात्रि, निरुख्य न्छाकार्री,

रहित जनभूटर्गश्रेती, जानिम जानम-त्रा ॥ यम भूटत ह्रायमा, श्रीक हटत जहश्रमा,

थकाणि करूना हटन्त, यद्य वनिष्ठा ।

ত্রিপুরা।

রাগিণী ললিত। তাল জলদ্ভেভালা।

একি ৰপ চমৎকার, হৈরি আমরি আমরি।
অঙ্গু আভা মনোলোভা, প্রভাতের তমো হরি।
চতুর্জ জিনরনী, অঙ্গুশ ধমুর্ধারিণী,
পাশ বাণে দক্ষ পানি, অভিশর শোভা করি।
নিবেদন তৰুপদে, সদা ধাকি চন্দ্র হৃদে,

त्रकां कतिरवं विश्राप्त, ज्या जिश्रा-स्मात्री। (40) পারিজাত সরস্তী।

व्राणिणी (माहिनी। जान मधामादनव देका। र्शनाक्षा काल वाला, निर्माण राख-बसना। श्रक्रहात (भाष्ड शत्न, (श्रंड मत्निकामना ॥ मिनिनम स्वत्रंग, मिद्रि हेन भाजमान, वाटम शुखक धात्रंग, कदत्र स्मभूत्र वीगा। भाजा करत्र मक्करत्र, शूत्रिक शौरूषाभारत्र, 🐃 অক্ষমালা ভতুপরে, চতুর্ভক ধারণা ৷ রুপা করি চন্দ্র প্রতি, সদা কৃদি কর স্থিতি, পারিজাত সরস্বতী, সম্পূর্ণ কর বাসনা॥

(७৯)

महानयम्।

वाशिशी तिक्ष टेख्वरी। खान जनम्र खणाना। क्षि कमटलाशित, विद्राटक (रूम वद्गी। পটামর পরিধানা, চতুর্জু জ বিধারিণী। मक्क करत्र পष्मवत्र, श्रषाण्यात्रिणावत्र, भिद्र (भाषा कित्री हित, युक्क यदना हाति।। जिल हिमान सित्रि, ठलू एक घे धित्र, অভিষ্তি করেছ, বারি, অপৰপ ৰূপিণী। गर्गणम्भी कति एशा, दिनाणि मरमात्र मात्रा, চত्या मिख श्रष्टाञ्चा, ह्रिक्टिया निखातिगी।

(8.)

महानम्यो।

द्राधिनी कनानि। जान कनम्द्रकाना। विद्रांटक एक नादी, वादिंटकाशदि सम्बद्धी, (मोन्सर्या त्रष्ट्राकती।

তরণ সিন্দ্রারণা, বলর হার ভ্ষণা,
কেও শোভন শিরোরহ, শোভে শিরোপরি।
কটি স্ত্র কটিধরে, চরণে ভূপুর পরে,
ধরে বলর করে, হার শিরোধরে ধরি।
যুগল কমল করে, যুগল কমল ধরে,
আদর্শ ধনাধারে, চতুর্জ্ জা স্থন্দরী।
পরিচর্যা পরায়ণী, চতুম্পাশ্বে স্থীত্রোণী,
জিনি শত সৌলামনী, হ্রিপ্রিয়া ঘেরি।
মহালক্ষী সৌরি দারা, স্থবিতর ধনধারা,
চন্দ্রাগারে ভব স্থিরা, রুপাপাঙ্গে হেরি॥

(<8)

महालक्षी।

রাগিনী সিশ্বু তৈরবী। তাল জলদ্তেতালা।
তরুণারুণকারা, শিরঃ স্থির স্থাকারা,
বেদ বাছ ধরাপরা, উদারাদারা।
কমল কৌস্তুভ করে, মঞ্জরী রত্ন অপরে,
রত্নহার কঠোপরে, রত্ন ভূপুরা॥
প্রকুলাজ্জ ত্রিনয়না, মহালক্ষী স্মেরাননা,
চন্দ্রালয়ে বিরাজমানা, ভব স্থাহিরা॥

धनका ।

রাগিণী ঝিয়ুটা খাষাজ। তাল ধিমাতেতালা।
কণ্পাধ্যতলে স্বৰ্গুহে, কে ও সিংহাসনোপরি।
তর্গ যৌবনান্তা, এ নারী কাহার নারী।
কুম্কুম সম বরণা, রক্ত বস্ত্র পরিধানা,
মণিহার বিভূষণা, ঈষত্ত কুচ হেরি।
মুণাল কোমল, কর, প্রান্থায়ে শোভাকর,

তাহে অঙ্গদ কেয়ুর, অতিশোভাকারি॥
নানিকা মুকুট শিরে; মণি কুগুল কর্ণোপরে,
চরণ শোভে মুপুরে, অপরূপ মাধুরি।
নীল নলিন নয়না, ধনদে পুরাও বাসনা,
চক্রের ভব যন্ত্রণা, হর শুভঙ্গরি॥

(83)

কাম[খ্যা

রংগিণী চেতা-গোরী। তাল জলদ্তেতালা।
কেও বামা স্মিত্যুখী, রত্নসিংহাসন হিন্তা।
কম্পরক্ষতলে রত্ন অলঙ্কার বিভূষিতা।
কিত নীল ঘন ঘনা, পট্টায়র পরিধানা,
দিভুক্স ধারণা ত্রিনয়না, বরাভয়ায়িতা।
কালী কলুষ নাশিনী, অখিলানন্দকারিণী,
বুজির্ভি স্কুপিণী, হরি বিধি শিব বন্দিতা।
লালত বেশ ধারিণী, কামাখ্যা কামদায়িনী,
চল্রে মোক্ষ প্রদায়িনী, হও গো ভব বনিতা।
মহাকালী।

রাগিণী সিন্ধুকাপি। তাল জলদ্ভেডালা।
ক্ষবর্ণা ক্ষায়র পরিধানা।
কটিতটে ব্যাঘ্রচর্মা, গলে শিরে মুগুমালা ধারণা ॥
স্বর্গ স্পর্শে এক জটা, নাগহারযুক্ত লোহিত লোচনা।
শব হৃদি বামপদ, সিংহপৃষ্ঠ স্থিত দক্ষিণ চরণা ॥
মহাঘোরা চতুষ্করা, সাট্টহাসা শব দ্বর লেলিহানা।
দক্ষে থড়গযুগ ইনদীবর, সব্যে ক্ষু কর্পর শোভমানা ॥
ভয়ানক রব কারিণী, ভীষণা অঙ্গনা কার অঞ্না।
মহাকালী কৃপা ক্রি, দীন চন্দ্রে করো না থড়োরণা ॥ (৪৫)

ভারিণী।

द्राशिनी शिक्तकां शि । जाम धिमा एउ जा । क्रकार्गा कात नाती, लट्यामत्री महाट्याता। त्रक मुश्री लालिक्सा, क्रजनात्र कर्गभूता। শবোর্ছে কপাল হেরি, বিরাজিতা ভতুপরি, পীনোমত কুচগিরি, পরিহিত রক্তামরা। विश्वन नाग (विछिडा, विश्वन नामिकाञ्चिडा, नामिकाथा था।नत्रका, भाकिक मीर्च हिक्ता। मीर्घाकी मीर्घ कचना, ठक्क क्र्यााधि नयना, রুধির পানে মগনা, পর্বতন্থা চতুক্ষরা। मक्क कदत्र পषाधुना, जमस्यावत षात्रिना, वादम ज्ञा भाजिका, कपूर्क क्लान ध्रा । नाश यएकाभवीजिनी, नर्स मिक्ति अमात्रिनी, শক্রগণ বিনাশিনী, ব্যাছ্রচর্মার্ড শিরা। माथक स्थामासिनी, जुवन जम जननी, निতाक्या मनाउनी, मर्काटनाक खत्रहता । ळा १ कर्जी जा १ कत्र, मक छ छ दि भक्त. চল্লের ছু:थ সম্বর, তারিণী ঈশানদারা ॥

(84)

কাড্যায়নী।

वाशिशी थाशाक (रहाश। जान धिगांदज्जा। (क्ष क्षत्रभवाना, विद्यास्थाना। (काछि हम् खाना, हात स्वन जिनस्ना ॥ मक अम जिः हाभिति, जभत महित्य धित, স্বিচিত্র পট্টাম্বরী, মঞ্জীর চরণা। पिक्षुटक (कश्त्र थाडा, लिएत वर्काटस बाडा,

जिल्ला (थेठेक (लाका, लाज लजाजि धात्रणा । लक्ष घणी लजाजना, लाल निल्नी धात्रणा, लाकलाल (जवाजाना, ख्रुत्रण ख्रुत्रणाना। कालाजनी धरे वात्र, हत्स करें खनिवात्र, क्रुणा कृति निवात्र, विश्व ख्रुना।

(89)

কালিকা।

রাগিণী সিক্ষু। তাল ধিনাতেভালা।
ইন্দ্রনীল সম বরণা, স্থরাস্থর কিমার্দ্রনী।
যুগভুজ মহাখোরা, বিরাজে কার কামিনী।
চক্রস্থাপেরি স্থিতা, ভৈরব প্রেত বেটিতা,
শব-সমূহ মিলিতা, শ্মাশানালয়বাসিনী।
বেটিত ভুজঙ্গাণা, সর্ব্বাভরণ ভূষণা,
শোভান্থিত তিনয়না, কপাল কর্জ্কা পাণি।
কালিকে কুপা বিস্তার, সঙ্কটে চক্রে উদ্ধার,
শস্তে কাল ভয় বার, সর্ব্বসিদ্ধি প্রদায়িনী।

(84)

खेळाहला।

त्राधिनी जीम-भनामि। जाम धिमाटज्जामा। जिल्लाक्षनहरूका, (कंछ मिश्हराहिनी।

वादमं घन्छ। (थे हर्म भाग, भव् मूबन हाभाइम क्यान, उत्तरधा भानभाज धाविगी।

स्थापूर्व कनम महदकापत्रि, मह भाषाकात्रि,

সর্প সজ্য অঙ্গোপরি, আর্ত কোটি যোগিনী। উগ্রচণ্ডা রক্তনেত্রা সহাকায়া, চন্দ্র নিঠাণে কর দরা, দয়াসয়ী তারিণী।

गहिषगर्फिनी।

রাগিণী সিন্ধু। তাল ধিশতেতালা।
সরকত সম বরণা, মণি মৌলী স্থাণোভনা, বিরাজমানা।
মহিষ শিরোবারিনী, দেবী মহিষমাদিনী,
অইত্বুজ বিধারিণী, স্ভালেক্ষণা॥
শহ্ম চক্র পাশ করা, তর্জ্জনী স্থধনুর্ধরা,
থেট শ্লে শোভে তারা, চক্র ধারণা।
চল্রের এই অভিলাষ, অস্তে যেন না পাই ত্রাস,
কটাক্ষে কলুষ নাশ, ভব অঞ্চনা॥
(৫০)

অপরাজিতা।

রাণিণী লুম। তাল জলদ্তেতালা।
কেও পর্বত্বাসিনী, চতুর্জুজ ধারিণী,
চল্রানা ত্রিনয়নী, স্থান্ধাঙ্গিনী
ত্রৈবেয় হারভূষিতা, বলয় কুগুলানিতা,
শভা চক্র বরধূতা, অভয় পাণি॥
ইন্রাদি দেব নমিতা, পাখে মৃত্যুঞ্জয়ান্তা,
চল্রে অপরাজিতা, রূপা কর গো জননী॥
-(৫১)

शक्। १

রাগিণী শিক্ষু তৈরবী। তাল ধিমাতেতালা। স্থাপা কার অঙ্গনা, স্থনয়না চন্দ্র সম বরণা, বীজামানা। স্থাসল স্বদনা, আর্দ্র গিস্কা বিলেপনা, স্থাপাবিত ভূপুর্ণা, শেত ছত্র শোভমানা। मिना मोलाञ्चलभना, मिना क्य विज्यना, मज्ज जटक करूना, मिनन जूनमाना। भक्त जिल्लाकभावनी, जनजर निनातिनी, एक्स जिल्लाकभावनी, जनजर निनातिनी, एक्स जिल्लाक कार्तिनी, इस भा धहे ध्यार्थना॥

(((2)

গঙ্গা |

क्रांशिवी आण्ना। जान जनम्द्जजाना।

मा जगठ जननी, भट्य তातिनी।

विश्वमती विश्वपूट्डा, विश्व পविद्यकातिनी।

जवमती जूमि धना।, श्मिनत शितिकना।,

मना मनामिव माना।, स्वि शृश्नि।

जूमि मा मः मात्रकर्दी, जानाक्या जगकादी,

जटक स्थ माक्रमादी, प्रव विन्निनी।

विमास पूत्रारा डेकि, प्रवानि एएवत गकि,

नीन हत्स निश्च मुक्ति, क्यामानिनी।

(0)

লক্ষী।

রাগিণী সিন্ধু হৈরবী। তাল ধিমাজেতালা।
কমলোপরি বিরাজিতা, কাহার বনিতা।
সর্বালক্ষার ভূষিতা, ত্রিলোক মাতা॥
দক্ষপার্শ্বে পাশ অক, পদ্মান্ধুশে বাম পক,
গৌরবরণা দিভুজান্বিতা।
স্বর্ণিতা বামকরে, অপর সহিত বরে,
চত্রে লক্ষ্মী হইও সদা ক্ষপান্বিতা॥

(@8)

आमाकाली।

রাগিণী লুম্ঝিরুটি। তাল ধিনাতেতালা। এ কার অঙ্গনা, অখুদ বরণা, চন্ত্র শেখর তিনরনা। স্কুত্রস্থারধানা, রক্তক্ষণাশনা,
ছিতুত্ব ধারণা, বরাভর শোভনা ॥
মধুপান রুত, কাল সূত্যে রুত,
ফুল্ল বক্তা ধৃত, অনঙ্গ অরি অঙ্গনা।
আদ্যাকালী রুপালেশে, বিনাশি চন্দ্র কলুযে,
মুক্ত কর মারপোশে, দিও না যাতনা ॥

(@@)

कारमध्रती।

রাগিণী শুম্। তাল পোস্তা।

প্র নারী কার নারী, চিনিতে নারি। স্থবর্ণ সমান বর্ণ, পদ্মনেত্র শোভাকারী॥ অঙ্গদ হার ভূষণা, অলঙ্কার অঙ্গোপরি। চন্দ্র প্রতি কুপা করি, তার ভবে কামেশ্বরী॥

(85)

ভারা।

রাগিণী ভয়বোঁ। তাল জলন্তেতালা।
শ্রামবর্ণা ত্রিনয়না, সহাস্ত বদনা।
বিভুলে অমুজবর, ধারণ শোভনা ॥
বিভমুক্তা বিভূষণা, বিবিধ ৰূপ ধারণা,
শক্তিগণাবরণা, রত্নপাত্রকা চরণা।
চন্দের এই প্রার্থনা, বিভর করুণাক্রণা,
নিথিল তুংখ হরণা, ভবে ভব ভবাঙ্গনা ॥

(69)

विवाधान।

রাগিণী স্থরট। তাল ভিয়ট।

সহত্র তরুণ অরুণ সমান বরণা, বিরাজিতা কার অঙ্গনা। রক্তোৎপলদলাকার, পদতল শোভাধার, মঞ্জীর রুত্তহার, বিরাজিত শীচরণা।

त्रप्राधिष्ठ भाषाकृति, ऐक कुनना कमनी, व्यक्तार्थात्र त्नामावनी, निम्न नाजि मधा कीवा। রক্তাম্বর পরিহিতা, কিঞ্চিণী মেখলাম্বিতা, **छेक भर्**याध्य श्रिका, क्रांचाम्य भाजगाना । রত্রে কণ্ঠ শোভাধার, গলে শোভে মুক্তাহার, कर्गमूटल পরিক্ষার, কর্ণপুর বিভূষণা। त्रञ्न यूक्टोशिका, पिया जानका कृषिका, मन्ज जिनका किंडा, ठक्षन भग्रताहन ॥ व्यक्ति ज बिद्याभद्य, जिन्मदन ब्लां कद्य, প্রবালাভ চতুষ্করে, শোভিতা কমলাননা। रेयुधि रेकु ममान, भाषाकूष भूष्भवान, क्दत क्ति शतिधान, निक्षि श्रमान निश्रा ॥ मर्यं कामना माशिनी, मर्याप्त यक्तिनी, ठन प्रःथ निवाद्रिगी, वीविषा भक्ताक्रगा ॥ (40) क्रुगीधान।

রাগিণী সুরট। তাল জলদ্তেতালা।
ভানু বিশ্ব গতা, এ নারী কে ভীষণা।
সহস্রাদিত্য সনিভা, সহস্র ভুজ ধারণা॥
সহস্র হস্ত চরণা, দশ শত বিলোচনা,
সহস্র সংখ্য বদনা, সহস্র নাগ ভূষণা।
বিকটাকার অঙ্গনা, কম্পিত ভীত ভূবনা,
চল্রে কে করে তারণা, ছর্গে ছুর্গে ভূমি বিনা॥
বাগীশ্বরীধ্যান।

রাগিণী ভৈরবী। ভাল একভালা।

খেতপুল্পাভরণা, অমুপ্রমা কার বালা।

অতান্ত শুভ বসনা, কপুর ধবলা।
বজ্ঞ মোলি বিভূষণা, চতুর্জ শোভমানা,
পুত্তকাভয় ধারণা, ধৃত মুক্তামালা।
চন্দ্রের এই মনোভীফ, করি দূর ত্রদৃষ্ট,
বাগীশ্বরী নাশ স্থা, এই ভব স্থালা।

(%)

काली।

রাগিণী বাগেশ্বরী। তাল জলদ্ভেতালা।
কালী তোমার মহিমা, কে বুঝিতে পারে।
ভূবন করিলে রক্ষা, দৈতাদল সংহারে।
ভূমি কালী আদ্যাশক্তি, ত্রিভুবন ধৃতি শক্তি,
বর্ণিবারে কারো শক্তি, বিনা মহেশ্বরে।
তোমার মহিমা যত, কে বুঝিতে পারে ভত,
শ্বং শন্তু অবগত, কিঞ্চিত প্রকারে।
এই করি নিবেদন, শমনে কর দমন,
চল্রে দিও শ্রীচরণ, রূপাময়ী ভব পারে।

(3)

রাগিণী শোহিনী। তাল বিমাতেতালা।

স্থপ মন নিরস্তর, কালী কালী ত্রিনয়নী।
করাল বদনী শিবে, চতুর্জুজ ধারিণী॥
ভয়করী ঘার বেশা, তাহে বিগলিতকেশা,
সদাশিবে মনাবেশা, জগত জন জননী।
দশ মহাবিদ্যা ফিনি, সর্বাক্ষপা একাফিনী,
অসুর নাশ কারিণী, শহর মনোমোহিনী॥
যাহার নাম শারণে, ভয় না থাকে শমনে,
চল্রের ভাবনা মনে, সদা চরণ ছুথানি॥

(७२)

था ग।

রাগিণী গিন্ধু-ভৈরবী। তাল জলদ্ভেতালা।
কালী বিনা গতি আর, নাহি মন ত্রিভুবনে।
ভজনা মজনা খ্রামা, শিব সেবা জীচরণে।
বিধান বিলয় পাত্রী, জগমায়ী জগজাত্রী,
ভাব শিবা দিবা রাত্রি, বিহিত ভক্তি সাধনে।
কর কালী পদ সার, চন্দ্র তাজ অহয়ার,
যাবে ভবসিন্ধু পার, ভব ভাবিনী ভজনে।
খ্যামাবিষয় সমাপ্তা।

शद्बना ।

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদ্তেতালা।
সিন্দুর বরণ ত্রিনয়ন, স্থুলোদর চতুষ্কর শোভাকর।
দন্ত পাশ যুগ্ম করে, মোদকাঙ্কুশ অপরে,
গজেন্দ্রবদন করে, বীজপুর ধর॥
বিগলিত মদারত, গগুস্থল স্থুশোভিত,
সর্প ভূষণে ভূষিত, পরিধান রক্তায়র।
স্বনীয় গুণে গণেশ, কাম কোধ রাগ ছেষ,
চন্দ্রের এ ভব ক্লেশ, হরপুত্র হর হর॥
(৬৪)

लियिविषय।

त्रांशिभी जग़जग़ली। जान अकलना। (मराप्त मराप्त्र, अम् निव भक्त । গঙ্গাধর জটাধর, শৃশধর শেখর 🛚 শিঙ্গা ডমুরধর, তিখুলকর বাঘায়র। हर्ण जानन जन्म लिशन, जिनसन स्वाशिवत ॥ ধুস্তুর পুষ্প ভূষিত, ষড় ইন্দ্রিয় বিজিত, इन्छ।क्रमाना मिनिङ, क्रियुङ करनवर। मश्चि পानानम, धृर्की जिवानम, व्यमध्राप बन्हा, अश्रष्ट्र मिश्रञ्ज ॥ রজত গিরি সম জ্যোতি, মনমোহন মুর্তি, षा एट जाय পশুপতি, मजी वादम भाजाकत। क्षात्रम वष्टन शक्षानन, नौलक्षे ऋष्णाजन, यमन मयन इषवाहन, याञ्चान वय वय् इत । यः विक्रशाक जकी, जामा ध्रमक मकी, ञुष् मर्यमा त्रकी, जुः हि केणान केश्वत । जारहा किलाम जूभ, जारूभ जाएक स्वभभ, ठल निর्थ क्षेत्र, नयुन मदनाङ्ग ॥

রাগিণী ঝিরুটী। তাল একতালা।
শিব শঙ্কর দিগয়র, গঙ্গাধর হো।
ত্রিপুরারি ত্রিশ্লধারী, বাঘায়র হো।
চর্ম আসন, ভত্ম লেপন, ফণি ভূষণ হো;
সদন দাহন, রুষবাহন, পঞ্চানন হো।

(3)

শোতে জটাজাল, নয়ন বিশাল, শশাস্ক ভাল হো;
রৌপাগিরি ছাতি, চন্দ্র সম জ্যোতি, শরীর বিশাল হো॥
যোগী মৃত্যুপ্তয়, ভব বিশ্বময়, তৃং হি আশুতোষ হো;
ঈশ বিরুপাক্ষ, ধারণ রুজাক্ষ, সর্বাদা অরোম হো॥
বিশ্ব বিধারণ, বিশ্ব বিনাশন, তৃং হি ত্রিনয়ন হো;
কণ্ঠ স্থনীলা, বম্ বম্ ভোলা, প্রসন্ন আনন হো॥
তৃং হি বিশ্বেশ, হর হর ক্লেশ, তৃং হি নির্বিশেষ হো;
মৃড় ভবানন্দ, ভব সদানন্দ, ঈশ অশেষ হো॥
ভীম যোগ ধান, তৃং হি মহাজ্ঞান, বাস শ্বাশান হো;
রক্ষ মে সম্পদ, বিনাশ বিপদ্, রাখ চন্দ্র মান হো॥
(২)

রাগিণী খাষাজ। তাল কওয়ালি।

শক্ষর শক্ষর, ত্রিশুলধর হো।

সূত সঙ্গ জটাগঙ্গ, যোগিবর হো।

মন্মথ দাহন, সদানন্দ মন,

শশাঙ্ক শোভন, রাজশেথর হো।

মৃত্যুজয়কারী শিঙ্গাকরধারি,

শাশানবিহারী পরশুধর হো।

নীলকণ্ঠ জ্যোভি, শোভবর্ণ ছাভি,

মৃড় পশুপতি স্বয়্নস্থ ঈশ্বর হো।

শোভে ত্রিনয়ন, ভব পঞ্চানন,
ভভূত লেপন, ভুবনেশ্বর হো।

চর্ম পরিধান, আশু ক্রপাবান,

দেব ভগবান, অবায় অমর হো।

রুদ্রাক্ষ মালিন, ময়পুর হারিণ,

ডমরু ধারিণ, বরাভীতিকর হো।

कम कम पादा, मर्वा छुःथ रुदा, कल्य मः रुदा, श्राष्ट्र मिभमत हो। रुख क्षां नाण, कत्र क्षियाम, क्ष (उदा पाण, रुख क्षियाम,

(0)

রাগিণী খাষাজ। ভাল কওয়ালির ঠেকা।

इत भक्त अमन माइन, (श्रञ्जवत्र विनयन कि विजयन शत्म इन्ध्रमाल, शिद्भ वाघ्राल, भिन्नाल जन्म जन्दलशन ॥ शिनाकी जिथ्लधारी, रंगभी जिश्वाति, यय (मा ছবি বলিহারি, র্যবাহন। क्रजाक जभगामा, वग्वग्वग् वग् (जाना, গরল कर्श नीला, ডমরু-করশোভন ॥ শিব তাশুতোষ, न দোষ न রোষ, সতত সম্ভোষ, প্রফুল বদন। (याशिशन षाद्यशना, (प्रवासन महा माना, व्यञ्ज विष्यं भवा, ভाরণ काরণ॥ मक युक्त नामक, क्रशंक विधायक, তারকব্রহ্ম নায়ক, পতিত পাবন। ত্বং হি কৈলাসভূপ, ত্বং হি অনুপৰ্বপ, जुः हि জ্যোতিঃ স্বৰূপ, মৃড় পঞ্চানন॥ ভূতেশ ভূতপতি, মোহন মুরতি, রজভগিরি ত্রাভি; জটা ধারণ। जाखब जानमः, जुः हि ममानमः, नाण नित्रानन्त, त्यद्रा जायम यन। ত্বং তারকেশ্বর, ঈশ্বর দিগম্বর, ख्व शक्षांध्य, हर्य, खामन ॥

জং হি দেব প্রধান, তুহি ভূবিধান, সদা সমিত পান, ঢল ঢল নয়ন। তুহি অবিনাশ, নির্বাস ক্তিবাস, চন্দ্র তবৈক আশ, যুগল চরণ॥

(8)

রাগিণী খাষাজ। ভাল চেভিলা।

ভজ শিব শক্ষর, আশুতোষ গঙ্গাধর।
রজতাগিরি সমান, শ্বেতকান্তি কলেবর॥
ভোলানাথ ভয়হারী, পীনাকী ত্রিশূলধারী,
নীলকণ্ঠ ত্রিপুরারি, ক্তিবাস যোগিবর।
ভূতেশ সর্পভূষণ, দেবদেব র্ষাসন,
চক্র ভাল ত্রিনয়ন, কৈলাসেশ দিগম্র॥
গলে রুদ্রাক্ষমালা, বম্ বম্ করে ভোলা,
বামে শোভে গিরিবালা, চক্র তুঃধ হর হর॥

(c)

वाणिणी वाश्रव। जान कख्यानिव (ठेका।

বম্বম্শিব শস্তু, ভোলানাথ।
যোগিবর গঙ্গাধর শক্ষর, পরাৎপর প্রস্তু বিশ্বনাথ।
পিত্রে বাঘছাল, শশী শোভে ভাল,
গলে হাড়মাল, সদা গৌরী সাথ।
ফণী অঙ্গ সদা রঙ্গ, ভ্রমণ প্রমথ সঙ্গ,
যোগ অভঙ্গ পিয়ে ভঙ্গ, শিঙ্গা ডয়রু হাথ।
ভঙ্গা তরু ভূষিত, নয়ন অর্জ মুদিত,
চল্ল অস্তুত্র প্রণীত, অবলম্ব তেরো পাথ।

রাগিণী থাষাজ। ভাল কওরালি। শিব শস্কু বম্বম্ভোলা। ডমুর পিনাকধারী, গলে রুওমালা। ভত্ম অঙ্গরাগ, বিভূষণ নাগ,
ভগত বিরাগ, নয়ন বিশালা।
দিগয়র যোগিবর, গঙ্গাধর শক্ষর,
ত্মর হর স্থানর, পিত্নে বাঘছালা।
সদা সমিত পান, র্যাসন ঈশান,
ত্বং হি রুপানিধান, শোভিত কঠনীলা।
ভূতেশ ভূতনাথ, ন ছোড়ঁ তেরো সাথ,
ত্বং হি এক চন্দ্র পাথ, জটা শশী ভালা।

(9)

রাগিণী বেহাগ। ভাল একতালা। ञाः नमामि विक्राक, मुफ़ हर्या वमनः। वार नमामि वाखरणाय, वाकमाला जूपार॥ ञ्चार नमामि ठन्छ जाल, भंकत जिल्ला हनर । प्राः नगाम जुन्याथ, नर्वद्रमा भाष्ट्रमा ञ्चार नमामि किराधाति, जन्म कान लिशनर। ত্বাং নমামি মৃত্যুঞ্য, মূঢ় জন তাপনং॥ द्भार नमामि (यागिरत, नीलक्षे (भाजनर। वार नमामि ভোলানাথ, मरखायी व्यक्ताजनर ॥ ত্বাং নমামি পশুপতি, ব্যাঘ্রচর্ম আসনং। ञ्चार नमामि जिभुताति, भुष्शवान नामनर ॥ ञार नगामि निश्यत, महाकाल किंार। ত্বাং নমামি সভীপতি, সভা সর্বার্গাপনং॥ जार नमामि दोभावर्ग, कार्टिन भक्षाननर । वार नमामि व्यविनाग, व्याष्ट्र वाजननर ॥ ত্বাং नगागि क्छिवाम, मर्द्यभ निब्रक्षनर। छा । नमामि लमानम, ठल छा छ। ।

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল একতালা।
নীলকণ্ঠ শিতিকণ্ঠ, মহাদেব জটাধরং।
ক্ষতিবাস শৈলবাস, ত্রিনয়ন বাফাষরং।
ক্ষতিবাস শৈলবাস, ত্রিনয়ন বাফাষরং।
ক্তনাথ বিশ্বনাথ, শেভবর্গ যোগিবরং॥
শূলপাণি শোভে ফাণ, ভন্ম অঙ্গ অক্ষকরং।
বোগধান লোক জ্ঞান, সর্বময় যোগেশ্বরং॥
মৃত্যুপ্তর কামজয়, পঞ্চবকু মহেশ্বরং।
ব্রবাসন সচেতন, হেমকেশ দিগম্বরং॥
সতীপতি পশুপতি, দেবদেব পরাৎপরং।
মহাকাল ক্ষত্রপাল, সর্বস্তর শুভকরং॥
ম্যানানেশ ব্যোমকেশ, ভগবান অনশ্বরং।
ত্রাধীন চন্দ্র দীন, স্থং হি প্রভু তমোহরং॥
ব্যাগিণী ফলার। তাল একতালা।

গঙ্গাধর জটাধারী, দিগম্বর ত্রিপুরারি,
ফণিভূষণ ভঙ্গা লেপন হো।
শেত অঙ্গ ভূত সঙ্গ, মৃত্যুঞ্জয় কপদিন,
সদানন্দ ভবানন্দ, যোগধান ত্রিনয়ন হো॥
উমাপতি শৈলপতি, নীলকণ্ঠ র্ষাসন,
ব্যোমকেশ শ্রীমহেশ, বিরূপক্ষে নিরঞ্জন হো।
চর্মা আসীন শিক্ষাধারিণ, মুর্ক্তিটী প্রশাস্ত মন,
ডম্বুরুর শিব শক্ষর, আশুতোষ সচেতন হো।
ভোলানাথ বিশ্বনাধ, বিশ্ববীজ সনাতন,
দেবপুলিত চন্দ্রাধিত, চন্দ্রশেখর নারায়ণ হো॥ (>•)

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল একতালা। পশুপতি খণ্ডপরশু, শস্তু ঈশান ঈশরং। शृलिन ভূতেশ जेশ, শিव मर्य मर्स्यतः॥ शिद्रीण कुखिवानम, व्यमधाधिन णक्रदः। युक्त श्रिमांकन, जीकर्छ हज्य भ्यंतर ॥ क्लिमिन क्लालज्द, मिजिक्छ शक्राधद्रः। वांभरत्व भश्राद्यत, विक्रांक उेश्रह्र ॥ ক্রশান্ত রেতস্ হীর, ত্রিলোচন স্মরহরং। मर्वछ धृर्डा । जर्म, जायक कपाककतः॥ नील लाहिज कामाति, त्यक्ष वाघाष्ट्रतः। উমাপতি ব্যোমকেশ, ভব ভীম ফণিধরং চ जिश्रवास्क डेरमम, स्रान् क्षा धार्भवतः। व्यक्तक त्रिश्र देगदनम, जीम श्विक कदनवत्रः। क्रजू धः मिन भाषामी, ज्वरम्य मर्वभाः। तक (म ञनाथ नाथ, हन्द मर পরিকরং॥

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদতেভালা।
গঙ্গাধরং মহেশ্বরং, নমামি শঙ্করং শিবং।
বাঘায়রং জটাধরং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
অক্ষকরং শ্বরহরং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
ক্রিবাসং কামনাশং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
বোমকেশং অবিনাশং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
বিমেদবং মহাদেবং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
বামদেবং মহাদেবং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
উমাপতিং পশুপতিং, নমামি শঙ্করং শিবং॥
শিতিকঠং নীলকঠং, নমামি শঙ্করং শিবং॥

(22)

তোলানাথং ভূতনাথং, নমামি শক্করং শিবং।
কপদিনং ত্রিশুলিনং, নমামি শক্করং শিবং।
তিপুরারিং ভন্মধারিং, নমামি শক্করং শিবং।
ফণিমালং চক্রভালং, নমামি শক্করং শিবং।
সর্বপ্রকাং কপ্পতরুং, নমামি শক্করং শিবং।
রৌপ্যভাতিং বর্ণজ্যোতিং, নমামি শক্করং শিবং।
পিণাকিনং কপালিনং, নমামি শক্তরং শিবং।
শভুধানং চক্রভানং, নমামি শক্তরং শিবং।
(১২)

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল চেতিলা।

মন্মথ মোহন, মন্মথ দাহন, ভক্ষমন সর্বাক্ষণ প্রীহর প্রীহর।
নীলবরণ শ্বেতবরণ, সর্বান্তরদৃষ্ট হর।
পীতবসন ত্রিভঙ্গী, বাঘায়র ভোলা ভঙ্গী,
গোপবালক সঙ্গী, ভূত সেবিত শঙ্কর।
শোভে ধটী চূড়া বেনী, জটাজুট মন্দাকিনী,
শিঙ্কারব বংশীধনি, নীলকণ্ঠ নটবর॥
বনমালা বিভূষণ, রুদ্রাক্ষ করে ধারণ,
চন্দন অঙ্কে শোভন, ভন্মভূষ কলেবর।
কৃষ্ণ শোভে ভূজগারি, ফনী সহ ত্রিপুরারি,
রয়্দো ছবি বলিহারি, অপরূপ শোভাকর।
কৃত সমুদ্র মথন, অর্দ্ধাঙ্গ রূপ ধারণ,
শোভে শিব নারায়ণ, চক্র দেয়ী মনোহর।

রাগিনী জয়জয়ন্তী। তাল চেতালা।
গণপতি র্ষপতি, ভজো ধর্মপতি জ্রিয়য়।
ব্রহ্মা ভগবতী রাধিকা, জ্রী জানকী বলরায়॥
কুবের তথা বরুণ, পবন আওর অরুণ,
নিশাকর ছতাশন, নিরাকার নিতাধাম।
মৎস্ত কুর্মা শ্কর, নৃসিংহ থকা কলেবর,
সহস্র লোচন ধর, কল্কী পরশুরাম॥
দিক্পাল অবতার, কার্যা কারণ প্রচার.
এক প্রভু নানাকার, করো পূর্ণ চন্দ্র কাম॥

(>)

बीतागिविषयक।

वाशि विगग्ना । जान दिले डामा।

কৌশল্যাগর্ড-সম্ভূত, দশর্থ রাজস্তুত, त्रावग ति धतुर्काती, भीमी छाপ छ स न मः। षाञ्चाञ्चलियञ्चत, मूर्खि षाञि मन्ति इत्र, स्रकामन करनवत, जी भी जाभ जरम नमः॥ षहु अ अ शिंगाली, विलिया भि महावली, এক বাণ বধেও বালী, জীগীতাপতয়ে নমঃ। शिकृ ज्ञ क्यशंन, मग्नामग्न स्विधान, ष्यवार्थ पृष् मकान, जीमी जाপ बर्म नमः॥ স্থীর অনুত কর্মা, যাগ যজ্ঞ রতো ধর্মা, यदनात्रम (मादन वर्षा, जीमोनाभनदा नमः। माभन मग महिम, खनजाजन जमौम, উপমা অতি গরিম, শ্রীসীতাপতয়ে নমঃ॥ नीलकमल (लाइन, श्रयूल कामा वपन, मक्ल छाजाजन, जैमी जाপज्य नमः। रहा नाथ! व्यनाथ नाथ! कव् रहार्ष्ट्र (ट्रात्रा माथ, **চ**न्म गलवामक्रुड, श्रीमोडाপ्डएस नमः ॥

वाशिशी जन्म मा थाशाज । তान ठूरती।

(3)

রাবেব রাম তুর্বাদলখামে, সুঠাম অভিরাম বীর হো। বিশালনয়ন প্রফুল্লবদ্ন, কৌশল্যা-নন্দন গন্তীর হো। রাজনকে মহারাজ আয়োধপতি, মোহন মুরতি ধীর হো। সীতাবল্লভ জগত তুর্লভ, সীতল য়ায়্সৌ নীর হো। ৰশীক্ত ইন্দ্রিয়, সর্বলোকপ্রিয়, অন্বিতীয় শরীর হো। ত্রিলোকরঞ্জন রাক্ষস ভঞ্জন, ধারণ ধনুক তীর হো। কুপানিধান পরমপ্রধান, তুম্বিসু চন্দ্র অধীর হো। (২) রাগিণী বাগঞী। তাল জনদ্তেতালা।

পুরুষপ্রধান রূপানিধান, রাঘব রাম হো।

অমোঘ সন্ধান, দূর্বাদলশ্বাম হো।

আজারুলম্বিত, বাহু স্থানিতিত,

স্থান্ব গুণান্বিত, শরীর স্থানিম হো।

ক্ষিত্রেরকুল উদ্ভব, মধুর গন্তীর রব,

সকল গুণ সন্তব, নিচ্ছোধ নিদ্ধাম হো।

মহারাজ স্থাবংশী, সতাসন্ধ গুণরাশি,

স্থাকুল মিউভাবী, ধানকী অভিরাম হো।

বীরজন অগ্রগণ, রাজগণ সদা মানা,

মহাবলী অসামান্য, সর্বস্তিণধাম হো।

প্রভু মোহন মূর্ভি, জিতেন্দ্রির মহামতি,

নিম্পাপ নির্মাল জ্যোতি, ভজো চন্দ্র রাম হো।

রাগিণী ইমন্কল্যাণ। তাল জলদ্তেত্লো।

শ্রীরাম লক্ষণ ভরত শক্রন্থ, দশরথনন্দন চার ভাই হো।
স্বাং প্রভু অবতংস, ভয়ো দিবাকর বংশ,
কুপা কিও মান বড়াই হো॥
অদুত রাজাকীর্ত্তি, অদুত শ্রীর স্কৃতি,
অদুত মনোর্তি, সতাসন্ধা ব্রভাই হো।
ফুই্ট রাক্ষ্য মর্দ্দন, স্থান্থুব জনার্দ্দন,
কুল আনন্দবর্দ্ধন, নাম মে পাপী তর্রাই হো॥
অবতার তুহি প্রধান, মহাবীর মতিমান,
রাথো চন্দ্র প্রভু মান, কুপাবান রন্থুরাই হো॥

वानिनी जमना थामाज। जान रेखी।

क्षाम खन्धाम, क्षाम (म क्षाम, बाग (म मव मिक्ति दहारे स्त्र। রাম অনাথ বন্ধু, রাম করুণাসিস্কু, दाम (म मव स्थ भारे (स । রাম ক্পাবান, রাম গুণনিধান, षा अत कोन् जूटका मिलि स्। ভকতবৎসল, অকপট নির্মাল, वा उत कारा जना (मिथ (स । मर्तना अयूल, नाहि द्राघव जूला, श्रज् यय (मा कै। हैं। (छि (य। শ্বামৰূপ অনুপ, মন্মথ স্বৰূপ, वाजगग व्यथान जानि (य ॥ এक हि ताम छ्वान, এक हि ताम धान, তুস্রা ছোড়ো রাম লাগি য়ে। धक রামকো জপো, এক রামকো তপো, এक রামকো করো সহাই য়ে॥ জগমে রামময়, জগমে রামজয়, এক রামকো আশা কিজি য়ে। बीताम পाপरात्री, ताम महिमा नाति, শীরাম পাতকী তরাই য়ে॥ देश्या वीद्या शासीयाः अहु उ वलवीयाः, প্রভুজিভেন্দ্রিয় স্মরাই য়ে ৷ ভাব ভেজ্কো হুনু, বংশ উদ্ভব ভানু, তেরো চরণ রেণু চাহি য়ে॥

রাগিণী থায়াজ। ভাল একতাল।। न्त्राम शृक्तन द्वाम ज्ञान, करता नत द्वाम माधन। রাম অনুপ রাম-স্বরূপ, রাম স্বাং সনাতন ॥ রাম নাম জপো, রাম নাম জপো, রাম কো সোঁপিয়ো মন। -ताम क्रभा मिक्रू, ताम मीन वक्रू, -दाम हि (का करता यजन ॥ द्धाम निजा जरका, द्वाम ध्वरम मरका, करता नमा ताम की र्डन। রাম মহাত্যতি, রাম মহা যতি, রাম মূর্তি শোভন॥ वाम क्रमा निधि, वाम मठा स्थी, রাম গুণ নিধি স্থজন। রাম মহাবীর, রাম মহাধীর, রাম গন্তীর বদন॥ नाम खन तामि, तावन विनामी, किएया मद्याची जूवन। बीताम धानकी, बीताम जानकी, ठन्द्र करता नित्रीकन्।॥

রাগিণী বেহাগ। তান একতালা। স্থাবংশ অবতংস, ক্ষজ্রিয় কুল উদ্ভব। শ্রীদশরথ তনয়, কৌশল্যা-গ্রাভ সমুদ্ভব। সর্বা দক্ষ গুণ রাশি, রণ-নিপুণ সম্ভোষী, মহারাজ আয়োধ বাসী, সকল হুগু সম্ভব। সদা প্রফুল্ল বৃদন, বিশাল শোভে নয়ন, (&)

মৃত্ব মধুর বচন, রাম তারণ ভবাণিব। ক্ষিত্র কুল বালক, ক্ষজিয় কুল পালক, চন্দ্র তেরো উপাদক, কর যোড় করে স্তব।

(9)

व्रागिनी कात्नः छ।। তान ठिका।

রাম সো বীর নহি, রাম সো ধীর নহি,
নহি রাম সো গন্তীর হো।
রাম সো রূপাল নহি, রাম সো ভূপাল নহি,
নহি রাম সো স্থবীর হো।
নহি রাম সো মিউভাবী, নহি রাম সো গুণ রাশি,
নহি রাম সো স্থীর হো।
রাম রাজ্য স্থবিস্তার, রাম ধন্য অবভার,
দেখ চক্র রাম শরীর হো।

(b)

(&)

রাগনী থিবুটা থাষাজ। তাল জান্ধা কওয়ালি।
রাস কো সন্তা সানো, রাম কো কর্তা জানো।
রাম কুপা নিধান, রাম অবতার প্রধান ।
সকল গুণ বিশিষ্ট, শ্রীরাম সর্বে গরিষ্ঠ,
রাম হি কোরাখো নিষ্ঠ, রাম জপু হি বিধান।
স্মরো সদা রাম নাম, পূরি হোবে মনক্ষাম,
পাওগে কৈবলা ধাম, রাম নাম জপে তাণ॥
রত্মাকর পাপ কিয়ো, তপে বাল্মীকি ভয়ো,
বেলা রাম নাম দিয়ো, পাপ খণ্ডে পায়ো জ্ঞান।
রাম সে গুণ বিশাল, রাম সো কৌন কুপাল,
রাম সো গুণ বিশাল, রাম সো কৌন কুপাল,
রাম বো কৌন ভূপাল, রাম সো কৌন মহান॥
রাঘ্য যাকো নেহারে, তাকো অন্তক নিবারে,
রাম চন্দ্র রখ ওয়ারে রাম হি কো করো ধ্যায়॥

রাগিণী ঝি ৢটী থাষাজ। তাল একতালা।
সীতাপতি রাঘবেন্দ্র, স্থান্দর মহামতি।
স্থঠান অভিরাম, মনোহর মুর্তি॥
তুই্ট রাক্ষণ বংশ, দেব রক্ষা কৃত ধংশ,
ক্ষিত্রের কুলাবতংশ, বীর অয়োধপতি।
স্থান্থ রাজ স্থান্ম, বংশ প্রাপ্ত ।
স্থান্থ রাজ স্থান্ম, বংশ প্রাপ্ত ॥
ধরণী সমান ধৈর্যা, তপন সমান বীর্যা,
অন্ত শ্রীরাম কার্যা, নির্মাল সং প্রকৃতি।
লক্ষীরূপা সাধী দারা, কোমল নির্দোষ ধারা,
আাসমুদ্র বস্থারা, একচ্ছত্র ভূপতি॥
সজ্জন মন রঞ্জন, তুর্জন অহং ভঞ্জন,
চন্দ্র শ্রীরাম বন্দন, কৃত অস্তুত আরতি॥
রাগিণী বাগেশ্বরী। তাল চুংরী।

রাম গুণ ধাম, তুর্বাদল শ্রাম,
অভিরাম রযুকুল তিলক হো।
কমল লোচন, বিষাদ মোচন,
প্রভু স্থাবংশ বালক হো।
তেজস্বী-সম তপন, ধরাসম ধারণ,
দয়াল অক্রোধন, প্রজাপালক হো।
সর্বা গুণার্জিত, দোষ বিবর্জিত,
পশু বশীক্ষত, মেলক হো।
সংসার সার, রাম অবভার,
জগ প্রচার, মূলক হো।

তোকারে বংশ कहा है, का জিয় কো বঢ়াই, নেহারে চক্র পূলক হো॥

(>>)

ताशिनी जञ्चना थात्राज । जान पूर्ती !

त्युकूल जिलक, अञाभुक्ष भालक. স্থাবংশ বালক, জীল রাম হো। द्याञ्चल ভिङ्मान, तक ष्मत्र मान, রক্ষ ধ্রংস বিধান, অভিরাম হো॥ थर्क मनन कल, मर्काट्यकं स्वकल, গর্ব্ব বিৰ্জ্জিত ভূপ, শ্রীস্থঠাম হো। বাঞ্জিত সাধুজন, লাঞ্জিত চুফীগণ, অঞিত সর্বাক্ষণ, মনস্কাম হো।। **ट्यिक जू ज**िथकाति, গরিষ্ঠ অস্ত্রধারি, विषिष्ठं युक्तकाति, ञ्यवित्राम हो। শ্রীয়ান, স্ফুর্ভি সিংহ সমান, कीर्ভि यथा गरान, জिত-काम हा॥ সদা স্থ্যফুলিত, কদাচ ন তাপিত, मर्वामा व्याद्याधिक, छान्धाम हो। कुर्षिन कत नाम, स्रुप्तिन महा जाम, দীন চক্র প্রয়াস, নিত্যধাম হো॥

(>21

রাগিনী সিন্দোড়া। তাল ঝাণতাল।
ভক্ত মনোরপ্তন, দারিদ্রা ভপ্তন,
তুই জনু গঞ্জন, রাম দয়াল হো।
সীতা মনোরমণ, রাবণ স্থদন,
কৌশল্যা-নন্দন, নয়ন বিশাল হো।

চারো ভাই নাহি ভেদ, যো কিয়োচ্ছেদ, সপ্ত শাল হো।
শূর বীর অতিধীর, গম্ভীর প্রভু
শীতল জয়সো নীর রূপাল হো॥
স্থাবংশ অবতংস, নাহি অংশ পূর্ণ প্রণতপাল হো।
রাক্ষসবংশ ধংসকারি রাম স্কঠাম
উজ্জ্ব শাম প্রসন্ন ভাল হো॥
(১৩)

बक्तिविष्युत (अव।

बाशिशी कारनछ। ज्ञान रहेका। यटनत विधा (कन, आयांत्र शिल ना। ভাবিয়ে কিছু স্থির হলো না, শাস্ত্রের বিরুদ্ধ কিবা ভাবিব॥ छिপाधि कष्भना भूना जादि जाति कति जना, चामु एक गरन (मिथित। অচিন্তা অব্যক্ত ৰূপায়, কিৰূপে জানিব ভায়, কি সাহসে তাঁর চিন্তা করিব॥ भारत करह वाकााजीज, भारत करह गर्नाजीज, কি উপায়ে তাঁবে জানিব। नग्रदनत व्यदगाहत, विद्वाहे व्यक्टलवत्र, কিৰপে ভাঁৱে ভাজব॥ ইন্দ্রির অগেচর, স্তুতি করি যথা পর, नाना (इन (प्रिथेव। डिপाधि कण्यना भूना, তाँ त नाम जण्यना धना, কেমনে তাহা পারিব॥ ব্রহ্ম স্বতে বিরাজমান, চন্দ্র বেদান্ত বিধান, शृथक् नाहि मानिव॥ (>)

রাগিণী আড়ানা। তাল জলদ্তেতালা।
বিষয়ে বিলুপ্ত হয়ে, কত দিন রবে মন।
সঞ্য় অনেক দেখি, তথাপি আশা ধন॥
বাসনা মহাতুর্জ্জয়, কথঞিৎ নিবারণ।
কামনা যথা গহিত, অর্জনে হয়ে যতন॥
তত দিন ধনে স্থা, যত দিন এ জীবন।
দেহাত্তে কিবা হইবে, তার স্মাহি নির্বাণ॥
ধন লোভ মহা লোভ, শান্তি নহে কদাচন

लाएड পाপ পাপে নাশ, ইছা অকাটা বচন॥
আজন্ম ধনোপার্চ্চিনে, কেন কর বিচরণ।
মোহ বশে ধন নাশে, কর মনদ আচরণ॥
সঙ্গে ধন লয়ে তব, নাহি হইবে গমন।
ভাগুার পূর্ণিত রবে, যবে গ্রাসিবে শমন॥
সম্পদ মহা বিপদ, কুরীতির নিদর্শন।
দস্তভাবে কত রবে, সম্ভব নহে এমন॥
আমি তথায় লুকা সদী, মহা আশা এ কেমন।
অনেক বিধ বিভব, নানাবিধ আয়োজন॥
কোথা রবে ভাই বন্ধু, কোথা রবে প্রিয়জন।
ধন লয়ে কেন আর, কর হে কাল ক্ষেপণ॥
কুটিরে বসিয়ে চক্র, অকায় কর জাপন॥

(\(\)

न्यानाविष्यस्य त्निष्

রাগিনী জয়জয়নী। তাল একতালা
শশধর সরিভা, শ্রামবর্ণ প্রভা,
শশাস্ক শেখর, প্রমোদিনী।
তড়িত মিলিত, অঞ্জন দলিত,
চিক্কণ ললিত, বরাদনী॥
আসবে আবেশ, অবাস অবেশ,
সমরে প্রবেশ উলঙ্গিনী।
দলুজ অহিত, অস্তুরে আহিত,
ভুবন মোহিত, নিনাদিনী॥
কোধিতা গজ্জিতা, ধীরতা বিজ্ঞাতা,
নাশিতা জ্জিতা, বিলাসিনী।

माध्य त्रक्षिण, मसूज गिक्षण,
भाष्य जिक्षण, जेवामिनी॥
चाम मोमामिनी, गरजन गामिनी,
मर्म्भ कामिनी, नातास्गी।
जव श्रमविनी, मन्त्रच भावनी,
कलूष वातिगी, निरातिगी।

(3)

রাগিণী আড়ানা বাহার। তাল জলদ্তেতালা।

কিন্ধরে কুরু করুণা, হে মাতঃ শন্ধর জায়া।
কাল অতি ভয়য়র, শুভয়র করি দয়া।
কাল ভয়েশিলা ভীত, প্রজা-বিহীনে তাপিত,
সময় হয় অভীত, বশীভূত মোহ মায়া।
ভব জলমি অপার, বিনা পুণো নহে পার,
পুণোর নাহি সঞ্চার, পাপ পুর্ণ মম কায়া॥
নাত্তি ভজন পুজন, নাত্তি তপ আরাধন,
বিষম বিষয় ধন, তাহে বাসনা অক্ষয়া।
মহা বলবতী আশা, মিলিত লোভ পিপাসা,
সঞ্চয়ে পুর্ণ লালসা, বাসনা স্থখ বিষয়া॥
মন চিত্র স্থপবিত্র, মায়াবশে অপবিত্র,
জননীর কি বিচিত্র, দিতে চন্দ্রে পদ-ছায়া॥

(>)

• শ্রামা আমার কেন গো, বিবসনে শবাসনে।
দলিত অঞ্জন বর্ণে; রসনা ধরি দশনে॥
কেরে দামিনী দমন কপ শ্রামা, অন্ধিতীয় প্রয়াস গরিমা,
অসীম উপমা, নাহি যার সীমা, নরকর/বসনে।
এত কোধ কেন, ছতাশন যেন, দিতি-তন্য নিধনে ॥

রাগিণী ঝিঝুটী। ভাল একভাল।।

উक्ष कर्ण दिने, भरत भश्चभिक, ना रहत नहरन।
क्रित कर्मित किर्मित, श्रीताकी वर्षण मिन,
मास्रण क्रित नमस्त्र भभी, हर्ष्य दिश्च हर्षण ॥

वाणिणी देन्द्रवी। जान क्रम्हरण्याना।

রাগিণা ভৈরবী। তাল জলদ্ভেতালা। আমারে বিষয় বন্ধনে, কত দিন রাখিবে কালী। দারা স্থত পরিবার, মায়ার প্রভলি॥

-

শিববিষয়ের শেষ।

त्रांशिशी सूम थात्राक । जान ठू दि।

काश भिव विश्वनाथ, विष्यश्वत। विश्ववीक विश्वभट्ड, मट्टश्वत्र॥ महाकाल किंद्राधित, (भाषा क्रा উমাপতি नौलक्छ, वाघायत ॥ खवानम खगवान, पिश्रम् । ना मूर्जि योश छङ्ग, जककता। (मवरमव षाखरजाय, भक्राधत। মৃত্যুঞ্জয় পিণাকধ্ক্, সর্বপর॥ कण्णाङक महारयांशी, ञानश्रत। मर्कानन जव मेग, मर्किश्रत ॥ ভত্ম অঙ্গ ফণি মাল, জীশঙ্কর। (बाभि किन वामरम्ब, क्रिन इत्।। इन्द्र क्षेत्र महाञ्जानी, र्याशिवत्र। इय धक इयामन, जीम इत ॥ वम् र्म इत इत, आने शत। च्छा द्रिण निर्वात्रण, एउ उक्तत्र ॥

রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল একতালা।
জয় জয় ভোলানাথ, জটিল র্যাসন হো।
জয় জয় ভবনাথ, অথিল বিশেষণ হো॥
সদাশিব মহেশ্বর, সর্বি দেবতা ঈশ্বর, পঞ্চানন হো।
নমামি প্রম্থ নাথ, নমামি পার্বিতী নাথ, সনাতন হো।
ভাহো ভব গঙ্গাধর, অহো ভীম জুটাধর, পা্মাসন হো।
নমস্তে ত্রিশ্লধারী, নমস্তে কাম সংহারি, স্বশোভন হো॥
দিগস্ব বিশ্বপতে, বাঘাস্বর পশুপতে, ত্রিনয়ন হো।
হাড়মাল চক্রভাল, চক্র দয়াল রুপাল, সম্মোহন হো॥ (২)

রাগিণী সূরট। ভাল একতালা।

किंगः धूर्छि हिः विजूः, प्रविष्तरः म्रह्मेतः।

ताश्रामः तुर्गावन्तः कृषः, ताधानाधः त्रादम्भतः॥

ताघवः श्रामणः तामः, भी जानाधः महावीतः।

काणिकी जिन्नः तामः, भक्ष्याः नीलाम्रतः॥

गात्रभः विष्त्रभः थवाः, शिक्तिमाजा लाग्रामतः।

ज्ञानः ज्ञामः स्र्याः, जात्रः स्रतः मिवाकतः॥

काणिकाः ज्ञानीः भिजः, जामाः जातिनीः मःमातः।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानिनीः मःमातः।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः जञ्जानाः ज्ञानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः जञ्जानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः ज्ञानाः ।

ज्ञानाः ज्ञानाः जञ्ञानाः ।

ज्ञानाः जञानाः ।

ज्ञानाः जञ्जानाः ।

ज्ञानाः जञ्जानाः ।

ज्ञानाः जञ्जानाः ।

ज्ञानाः जञ्जानाः ।

ज्ञानाः जञ्ञानाः ।

जञ्जानाः जञ्जानाः ।

जञ्ञानाः ।

जञ्जानाः ।

जञ्ञानाः ।

जञ्जानाः ।

जञ्जानाः ।

जञ्जानाः ।

जञ्जानाः ।

जञ्जानां ।

जञ्जानां ।

जञ्जानां ।

जञ्जानां ।

जञ्जानां ।

जञ्जानां ।

द्रांशिनी जराजराखी। जान अक्जाना।

কৃষ্ণ বিষ্ণু জিষ্ণু সখা, অতুল বনওয়ারি।
কিশোর কিন্ধোরীনাথ, অমোল বংশীধারি॥
কেশব মাধব যাদক, সত্তম বনবিহারি।
ভেড দর্শন সদা হর্ঘণ, উত্তম বলহারি॥
চন্দ্রবংশ ক্ষাবতংস, দানব ধংসকারি।
ভানুন্তশায়ী স্ক্র-বিজয়ী, গ্লোপাল কংসারি॥

यानानान मन कानन, शावर्जन धाती। बक्तामाहन था ७व माहन, ठन्म क्रिम मश्हाती॥ (8)

-

क्ष विषय।

রাগিণী খাষাজ। ভাল একভাল।।

त्रांधात्रमध त्राधाटमाइन, नुन्द-नन्दन कुणानिधान। वश्मीवदन, कश्ममर्फन, পायश प्रणन जल विधान॥ श्रीवृन्दावनविद्यात्री, काणिनाश पर्णद्यात्री,

দানবকুল সংহারী, তুম্ অবতার প্রধান॥ (১)

কাগিণী খাষাজ। তাল একতালা।
পাারিবল্লভ জগত তুর্লভ, মন্মথমোহন খাম।
বংশীধারী, মনোহারী, ৰূপ অনুপম স্কৃঠাম।
শ্রীরাধিকা মনোরম, মূর্ত্তি অতি অনুপম,
শ্রামল পুরুষোত্তম, বৃহ্বিম ছবি অভিরাম।
(২)

_

রাগিণী পরজ বাহার। তাল কওয়ালি ঠেকা।
আমার অবশিষ্ট, জীবনের সব স্থুখ ঘুচিল।
ঈশ্বর সাক্ষী তুমি, সে কে যে হরিল॥
ভক্তিগানামৃত সম্পূর্ণ।

मःगी अविलाम इश्ट छक्छ। क्रम् विषया।

वाशिशील्य। ভाल ছवकी।

কর রূপাবলোকন, এই করি নিবেদন।

হানাহি কর কেশব, বলে অভাজন।

আমি অতি মূদমতি, ভক্তি নাহি তব প্রতি,

অন্তিমে দিও শ্রীপতি, তব শ্রীচরণ।

কি ভজন কি সাধন, না করি ধানে পূজন,

দেখে চন্দ্রে দীন হীন, না কর হেলন।

(3)

মন কেন ধন লেভে, ভুলে শ্রীবৎসলাঞ্চনে।
না করে ভজন ধ্যান, ব্যস্ত র্থা উপার্জনে।
বত দেখ নহে সার, হরি নাম এই সার,
ঐ নাম নিরস্তর, জপিবে রাখিবে মনে।
বিষয় আর্ত ধন, দেহ ত্যাগী হৈলে প্রাণ,
সব হয় অকারণ, রহিবে অন্য কারণে॥
জায়া পুত্র মায়া ঘাবে, প্রাণান্তে কে সঙ্গে যাবে,
দেখ ভেবে উপায় ভবে, আছে কি গোবিন্দ বিনে।
অতএব সাবধান, তাজ ধন পরিজন,
সতত চল্লের মন, লিগু ধাক নারায়ণে॥

(१)

রাগিণী ঝিঝোটি। তাল ধিনাতেতালা।
সতত্ত্তাব মন হরি চরণ।
থে পদ সংযোগে যোগী দেব পঞানন॥
(২২)

गाँत शम- खर-वाति, ख्रंभूनी नाम धर्ति, ख्रंभूनी नाम धर्ति, ख्रंभाख शिव्यकाती, मक्क्र मिट्रा ख्रंभन । या शम मः श्राट्थ बिल, खाश्मनाट्र धना विल, शिट्र धर्ति महावली, किंद्रि सङ्ग ॥ शिह्र पर शम हिल्ल, कालीय हहेल धना, शंत्राख्र खिलाना, शम धात्र कार्त्र । जीशम श्राम किंद्र, ख्राम कार्र । जीशम श्राम किंद्र, ख्राम कार्र । श्राम विल्ला कार्त्र, ख्राम कार्र कार्र ॥ धान कार्त्र (यह शम, हेल्लामि शहल शम, दिन शम, हेल्लामि शहल शम, एत शम हल्लाम, हहेट्य कथन॥

(0)

রাগিণী শোহিনী। তাল ধিনাতেতালা।
কেন ভুল মনে কর, সেই শ্রীমধুস্থদনে।
তরিবে এ ভবদিলু, যাহার নাম স্মরণে॥
দেহে রহে রিপুগণ, সৎ সঙ্গে না লওয়ায় মন,
কুপথে কর গমন, কহিতেছে সর্বক্ষণে।
শুন বলি মন ভোরে, কৃষ্ণনাম দিনাস্তরে,
যদি কেহ জপ করে, ভয় না থাকে শমনে॥
হেন নাম না করিয়ে, কুসঙ্গেতে মন দিয়ে,
থাক মন কি লাগিয়ে, চন্দ্রের কথা নাহি শুনে॥

(8)

রাগিনী মুলতানী। তাল জলদ্ভেডাল।।

অন্ত নাহি পেলেম হরি, একান্ত ভাবিয়ে মনে।

সাকার কি নিরাকার, অন্তি নান্তি কেবা জানে॥

অসংখাক মুনিগণ, দৃষ্ট করে নারায়ণ,

কিন্তু ভিন্ন ভ্রান, বাক্ত হ্যেছে পুরাণে।

কেহ বা বলে সাকার, কেহ বলে নিরাকার,

কি আকার কি প্রকার, কি তত্ত্ব কেই না জানে।
মহামুনি দৈপায়ন, করে সমস্ত পুরাণ,
তথাচ সন্ধান হীন, দেখিয়া রুক্ষ নয়নে।
মহাশ্বি সকলের, ক্রন্স না হইল স্থির,
খ্যান করে বারম্বার, যুগান্তর একাসনে।
মহাজ্ঞানি জন সব, না পাইল অন্ত তক,
চক্র কি করিবে স্তব, তব তত্ত্ব নাহি ক্রেনে।

(¢)

त्राभिगी वाद्बामा। जान ठुक्ति।

হরি নাম স্থার কর, মন আমার।
অনিতা জানিবে মন, অসার সংসার॥
নাহি ভুল কদাচন, ছরি বলিবে রে মন,
কুসঙ্গ তাজ এখন, হরিপদ ধ্যান কর।
শুনিয়ে নামের শুণ, কেন না কর ভজন,
বিশারণ অনুক্রণ, বলিতেছি বার্যার॥
একবার দিনান্তরে, মনে কর বংশীধ্রে,
যাবে ভব্সিকু পারে, চন্দ্রের বচন ধর॥

(8)

शिशिश भरक। जाम विगायज्ञामा।
स्ति विना क्रिस् नाट्स आश्रमातः।
भव अकात्रण जान, क्र्यमात्र এই मातः॥
त्रण क्रित जेशार्क्कान, भव स्व अकात्रण,
भव्म ज गावि धन, क्रिस क्रित ना विहात।
क्रिती शृद्ध्युट्ड यङ स्त्रस्, नाहि त्रव भिर्मातः॥
विद्वा यादि जाक्क त्रस्, श्रद्ध त्रव ध भरमातः॥
विद्वा आत वाक्षव, जाक्किट्ड स्ट्रेटव भव,
भक्षी क्रिवल गावि , हन्स क्रिट्ड क्रितां।॥

(9)

রাগিণী পরজ। ভাল ধিমাতেভালা।

রুষ্ণ রুষ্ণ, বল আমার মন।
দীনবন্ধু ভবদিন্ধু, নিস্তার কারণ।
শুন বলি মন তোরে, শত শত পাপ করে,
রুষ্ণনাম গুণে তরে, যে তাঁরে করে মারণ।
শুন রে স্বযুক্তি সার, হরিনাম সদা কর,
স্থম ঘম কিন্ধর, হইবে দমন।
এখন যদি না বল, সেই দিনে হরিবল,
চক্রের চর্ম কাল, হইবে যখন।

(b)

वां शिशी लगा जाल इन्की।

मीत जांत्र मशामश, आमि लहेलाम आधाश।
कांज्य किंद्राय क्रिंगा कत क्रिंगांमश॥
जजन विहीन जन, यावा वर्ण नाताश्रण,
जनाशाय जेकांत्रण, इश शाशामश।
जामात नाहि मश्रल, क्रिंग नाम এहे वल,
निवाति कार्णिति वल, यिन क्रिंशा हश॥
ना जानि रह माधन, जजन विहीन जन,
हर्मित अखिम मिन, हहें अम्स ॥

(5)

त्रांशिशी लग। তाल ছवको।

এ দীনে করিবে তারণ, ওহে লক্ষী নারায়ণ।
তব নাম গুণে তরে, মহা পাপিগণ।
শাস্ত্রে শুনি অনিবার, দয়াময় নাম ধর,
দীনে সদা দরা কর, যে লয় স্মরণ।
বে করে হৃদয়ঙ্গম, দিনান্তরে করে নাম,
অন্তে পায় মোক ধাম, নামেরি কারণ

এই निद्यमन टेल द्या, अठड अहार देवद्या, हटन ना विच्यूड टेह्द्या, मिड जीहब्रगा

(>0)

दाशिशी लगा जीन हरकी।

তরাবেন কেশব রায়, এই অধীন জনায়।
পদছায়া দিয়ে সদা, হইবেন সহায়॥
আমি তো ভাবি ভোমারে, মন থাকে অন্যান্তরে,
ছির না রহে অন্তরে, বিষয় আশায়।
শাস্তের এই লিখন, নাম তব নারায়ণ,
সকাতরে বলি শুন, আপন কুপায়॥
ভব সিন্ধু তরিবার, কৃষ্ণ নাম কর্ণ ধার,
চল্রে করিবারে পার, তুমি হে উপায়॥

(>>)

ताणिणी लुग। जान इवकी।

হরি হে চিন্তি কেমনে, আমি একান্ত মনে।
বিষয় বিষের জ্বালায়, অন্থির মনে।
মনে জানি স্থানিশ্চয়, মিথ্যা বিষয় আশয়,
হয়ে তারি মায়াশ্রয়, ব্যস্ত অর্জ্জনে।
নিরন্তর এই মন, কিসে হবে উপার্জ্জন,
নাহি তব প্রতি ধানে, মন্ততা ধনে।
তুমি হও বিশ্বাধার, উদ্ধারণ মূলাধার,
হৈয়ো চক্র ক্রপাধার, অন্তিম দিনে।

(><)

রাগিনী থাষাজ। তাল ধিমাতেতালা।

রুষ্ণ নাম লইতে, মন ভুলনা। ভরিবে যে নাম গুণে, এ ভব যন্ত্রণা॥ ষড়রিপু অন্তরে, আছে দেহের অন্তরে, ভুলাবে মন ভোমারে, কথা শুন না। धकरात्र पिनास्टर्स, कृष्ण रत उद्योधदङ्ग,
याद्य ज्य निक्न भाद्य, ना भाद्य याजना ॥
ज्यादमा ना जिल्ला मन, जिल्ला किंद्रिस थानि,
यात्मा दान नातास्रण, हर्ष्यत्र तमना ॥
(১৩)

রাগিণী বাউলিয়। তাল একতালা।

মিছে পূজা করিস্রে কেন, তুই না চিনে নারায়ণ।

কৈবা তিনি তাহা না বুঝে, আত্মক্রেশ পরিশ্রম কররে মিছে,
কেবা তুমি কার ধানি, কর হৃত জ্ঞান যেন।

মন কর রে শোধন, তবে আত্ম কর ধানি,

जगजन, उदब हिंशा डाज महा जज, চল এই কहে खन॥

(>8)

मच्चूर्ग ।